दुआ	तब्लीग़
तसव्वुर एहसास	
एहतिसाब	प्लान

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

आओ क़ुरआन और नमाज़ समझें आसान तरीक़े से

फ़ेहरिस्त-ए-मज़ामीन

सबक़	क़ुरआन और हदीस	क़वायद	पेज नम्बर
	अहम हिदायात		2
	एकेडमी का तआरुफ़		3
	पेश लफ़्ज़		6
1	तआरुफ़	هُوَ، هُمْ، ...	8
2	सूरतुल फ़ातिहा आयात 1-3	هُوَ مُسْلِم، هُمْ مُسْلِمُوْن، ...	12
3	सूरतुल फ़ातिहा आयात 4-5	رَبُّهٗ.. رَبُّهُمْ	17
4	सूरतुल फ़ातिहा आयात 6-7	دِينُهٗ...، كِتَابُهٗ... هِيَ، رَبُّهَا...	21
5	नुज़ूले क़ुरआन का मक़्सद (साद-29)	لِ، مِنْ، عَنْ، مَعَ	26
6	क़ुरआन आसान और बेहतरीन काम उसका सीखना	بِ، فِي، عَلٰى، إِلٰى	31
7	क़ुरआन सीखने की दुआ और सीखने का तरीक़ा	هٰذَا، هٰؤلاء، ذٰلِكَ، أُولٰئِكَ चार बातें हुरुफ़ की	36
8	सूरतुल अस्र	فَعَلَ، فَعَلُوا، فَعَلْتَ، فَعَلْتُمْ، فَعَلْتُ، فَعَلْنَا	41
9	सूरतुन नस्र	يَفْعَلُ، يَفْعَلُونَ، تَفْعَلُ، تَفْعَلُونَ، أَفْعَلُ، نَفْعَلُ	47
10	सूरतुल इख़्लास	اِفْعَلْ، إِفْعَلُوا، لَا تَفْعَلْ، لَا تَفْعَلُوا	53
11	सूरतुल फ़लक़	فَاعِل، مَفْعُوْل، فِعْل	58
12	सूरतुन नास	29فَتَحَ, 346جَعَلَ	64
13	सूरतुल काफ़िरुन	92نَصَرَ، 248خَلَقَ، 122رَزَقَ، 163ذَكَرَ	69
14	अज़ान और वुज़ू के बाद की दुआ	143عَبَدَ، 78دَخَلَ، 461كَفَرَ	76
15	सना, रुकू ,सजदा	58ضَرَبَ، 266ظَلَمَ، 53صَبَرَ، 95غَفَرَ	85
16	तशह-हुद	100سَمِعَ، 518عَلِمَ، 318عَمِلَ، 148رَحِمَ	93
17	दुरुद	124وَعَدَ، 107وَجَدَ، 54وَلَدَ	100
18	दुरुद के बाद की दुआ	1719قَالَ، 55قَامَ	108
19	दुआयें	1361كَانَ، 51تَابَ	113

हर सबक़ के अन्दर वर्कबुक का हिस्सा शामिल है जिस को पूरा करना ज़रुरी है।

मिलने का पता : Plot NO. 13-6-434/B/41,2nd Floor, Omnagar, Langarhouse, HYD-500 008

Office No: 040- 2351 1371 - Email: uqaheadoffice@gmail.com

कोर्स सीखने की शर्त: आप को अरबी कुरआन पढ़ना आना चाहिये ।

इस कोर्स को अच्छी तरह सीखने के लिये मुन्दरजा ज़ैल बातें याद रखिये ।

- यह पूरी तरह तआमुली (Interactive) कोर्स है इसलिये ग़ौर से सुनिये और मुसलसल अमली शिरकत करते रहिये ।
- प्रेक्टिस करते हुये अगर ग़ल्ती हो तो कोई बात नही ।
- जो ज़्यादा प्रेक्टिस करेगा वह उतना ही ज़्यादा सीखेगा, यह सुनहरा क़ायदा याद रखिये ।

I listen, I forget. I see, I remember. I practice, I learn. I teach, I master

मुन्दरजा ज़ैल सात होमवर्क्स को हरगिज़ न भुलिये ।

दो तिलावत के

1. कम अज़-कम 5 मिनट मुसहफ़ (कुरआन) देख कर तिलावत करना ।
2. कम अज़-कम 5 मिनट बेग़ैर देखे अपने हाफ़िज़ा से (जो भी याद हो) तिलावत करना ।

दो पढ़ाई (Study) के

3. कम अज़ कम 5 मिनट पिछले और अगले सबक़ का इस किताब से मुतालआ, मआनी को और ग्रामर के सेग़ों को लिखते हुये,लिखना इन्तिहाई ज़रुरी है क्योंकि अल्लाह तआला ने पहली वही में फ़रमाया: "जिसने क़लम के ज़रिये सिखाया"
4. कम अज़ कम 5 बार) हो सके तो 5 नमाज़ों से पहले या बाद में या जैसा भी मौक़ा मिले) सिर्फ़ 30 सेकण्ड यानी सिर्फ़ आधे मिनट के लिये अल्फ़ाज़ व मआनी के वरक़ से (जो इस कोर्स के साथ दिया गया है) मुतालआ करना ।

दो सुनने और सुनाने के

5. टेप रिकॉर्ड या CD से इन आयात व अज़कार के लफ़्ज़ी तर्जुमा के सुनना ।
6. दिन में कम अज़ कम एक मिनट अपने इस क्लास के दोस्तों से सबक़ के तअल्लुक़ से बात करना ।

और एक इस्तेमाल करने का

7. जो सूरतें आप को याद हो उन को नमाज़ो में पढ़ते रहना ।

दो मज़ीद होमवर्कस भी याद रखिये (1) खुद के लिये दुआ(رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا) (2) अपने और साथियों के लिये दुआ कि अल्लाह हमें कुरआन के हुकूक़ अदा करने की तौफ़ीक़ दे और हमारे साथियों को भी ।

अन्डरस्टैन्ड अल-कुरआन एकेडमी का तआ़रुफ़

www.understandquran.com

एकेडमी के मक़ासिद: कुरआन से दूरी को दूर किया जाये और ऐसी नस्ल की तैयारी में मदद की जाये जो कुरआन को पढ़ें, समझें अमल करे और दूसरों तक इसके पैग़ाम को पहुँचायें, स्कूलों,मदरसो,मकातिब और आम लोगों तक ज़रुरी चीज़ें (किताबें,CD, पोस्टर वग़ैरा) पहुँचायी जायें जो इस तालीम में काम आ सके।

इसका मक़्सद कुरआनी उलूम के माहिरीन को तैयार करना नही है, यह काम माशा अल्लाह दीगर मदारिस और इदारे कर रहे हैं इसका मक़्सद यह है कि आम मुसलमान कुरआन के बुनियादी पैग़ाम को समझ सके,इन्शा अल्लाह बुनियादी अहादीस की तालीम भी दी जायेगी, इस तरीक-ए-तालीम में नये तरीक़ों को इस्तेमाल करने की पूरी कोशिश की गयी है।

मिशन: कुरआनी अरबी को आसान तरीन अन्दाज़ में सिखाया जाये, बच्चे,नौजवान और बड़े लोगों के लिये तीन मुख़्तलिफ़ अन्दाज़े तालीम तैयार किये जायें, कुरआन को सब से दिलचस्प ,मुअस्सिर और रोज़ाना की ज़िन्दगी में सब से ज़्यादा काम आने वाली और दुनिया व आख़िरत की कामयाबी का रास्ता दिखाने वाली किताब के तौर पर पेश किया जाये।

यह काम क्यों? 99 फ़ीसद ग़ैर अरब मुसलमान कुरआन का एक फ़ीसद भी नही समझते, बल्कि एक लाइन भी बराबर नही समझते, आज की नस्ल के लिये कुरआन से तआरुफ़ इन्तिहाई ज़रुरी है क्योंकि एक तरफ़ तो बेहयाई का तूफ़ान है जिस में किसी की बात का असर इतना नही हो सकता जितना अल्लाह के कलाम का होगा,और दूसरी तरफ़ तक़रीबन हर तरफ़ से दीन-ए-इस्लाम, मुहम्मद ﷺ की ज़ात-ए-अक़्दस और कुरआन-ए-करीम पर हमलों का सिलसिला जारी है, उनकी पूरी कोशिश है कि मुसलमानो का ईमान कुरआन से ख़त्म हो जाये या कमज़ोर हो जाये, हमारे लिये ज़रुरी है कि हम नई नस्ल को समझायें और उनको बुनियादी एतराज़ात का मुक़ाबिला करने के क़ाबिल भी बनायें, इन्शा अल्लाह जब वह कुरआन समझेगें तो अपनी दुनिया व आख़िरत में कामयाब होंगे और दूसरों को भी उसकी दावत पेश कर सकेगें।

प्लान: दुनिया के **100** करोड़ ग़ैर अरब मुसलमानों तक पहुँचना और फिर उनके ज़रिये सारी इन्सानियत तक कुरआन का पैग़ाम पहुँचाने में मदद करना, फ़िल वक़्त यह प्लान है कि दुनिया के मुसलमानों की **10** अहम ज़बानों में इसका तर्जुमा हो जाये, स्कूल्स, मदारिस, तंज़ीमों और इदारों के ज़रिये इस काम को अंजाम देना।

इस तरीक़-ए-तालीम के ख़ास पहलू: (1) किसी भी मज़मून की तालीम के दो अहम पहलू होते हैं: शौक़ दिलाना और उसको मअस्सिर तरीक़े से सिखाना, शौक़ दिलाने के लिये आयात,अहादीस,वाक़िआत,मिसालें और उसके बाद मौजूदा नये तरीक़ों का (मसलन NLP) इस्तेमाल करना, (2) कुरआन के पैग़ाम और अरबी ज़बान के क़वायद को सिखाने के लिये मौजूदा तहक़ीक़ात को इस्तेमाल करते हुये मुवस्सिर तरीक़े तरतीब देना, (3) उन सारे

वसाईल का इस्तेमाल करना जो इस काम में फ़ायदेमन्द हों, मसलन ऑडियो, विडियो, कार्ड्स, पोस्टर्स, मुसाबक़ाती खेल वग़ैरा, (4) टीचर ट्रेनिंग प्रोग्राम करना।

कुरआन फ़हमी के लिये दो क़दम:

कोर्स-1: जिस में अज़कारे नमाज़ के ज़रिये **125** ऐसे अल्फ़ाज़ सिखाये जाते हैं जो कुरआन में **40,000** बार आते हैं।

कोर्स-2: जिस में मज़ीद आयात व अज़कार के ज़रिये **140** ऐसे अल्फ़ाज़ सिखाये जाते हैं जो कुरआन में **15,000** बार आते हैं।

इसके बाद कुरआन का समझना इन्तिहाई आसान,इसलिये कि इसके बाद हर सतर के औसतन **9** में से नये अल्फ़ाज़ **2** या **3** रह जाते हैं।

काम का इफ़्तिताह:

1998 में (**12** साल पहले) इन्टरनेट पर वेबसाइट: **www.understandquran.com**

2000: कुरआन मजीद के **80** फ़ीसद अल्फ़ाज़ (किताबचा), **2000:** कुरआन मजीद के बाज़ अहम अफ़्आल(किताबचा)

2004: कुरआन को सीखिये-आसान तरीक़े से **(60** असबाक़ पर मुश्तमिल किताब का इजरा**)** और **2005** में कोर्स का सिलसिला शुरु।

कोर्सेस की मुख़्तसर रुदाद:

हिन्दुस्तान में यह कोर्स तक़रीबन हर बड़े शहर मे पेश किया जा चुका है,मसलन तमिल नाडू में चेन्नई, वैलूर केरला में अर्नाकुलम, कर्नाटक में बैंगलोर, हासकोट, टोमकोर, बेलारी, बिदर, आंध्रप्रदेश में हैदराबाद, खमम, निज़ामाबाद, आदिलाबाद, महाराष्ट्रा में पूने, नानडेड, मुंबई, औरगांबाद, अकोला, नागपूर, चन्द्रपूर, झारखण्ड में रांची, वेस्ट बंगाल में कोलकाता, उत्तर प्रदेश में आज़मगढ़, फैज़ाबाद, बरैली, राजस्थान में जैपूर ओर देहली में मुख़्तलिफ़ मुक़ामात पर।

आलमी सतह पर सारे शहरों की माँ(उम्मुलकुरा) यानी मक्का-अल-मुकर्रमा में दोबार,सऊदी अरब के हर बड़े शहर में (मदीना,जिद्दा, रियाज़, दम्माम, ख़ोबर, खुफ़जी, अबहा) में बार बार, दीगर ख़लीजी ममालिक में(बहरैन, दुबई,क़तर,मस्क़त,और कुवैत) इंग्लैंड में(लन्दन,रीडिंग, मानचेस्टर, बरमंघम,ईडन बरा) साउथ अफ़रीक़ा में (शैख़ अहमद दीदात के शहर डरबन में और सदर मुक़ाम परेटोरिया में), नाइजेरीया में,और श्रीलंका में पेश किया गया है।

इस काम को खुद से सीख कर मुख़्तलिफ़ मुल्कों में अभी भी लोग पढ़ा रहे हैं,जैसे कनाडा,और अमेरिका के मुख़्तलिफ़ शहरों में टीचर्स के ज़रिये, स्वीडन, एवरी कोस्ट, मालीज़ीया, इण्डोनेशिया, जर्मनी, फ़्रान्स वग़ैरा में।

हिन्दुस्तानी ज़बानों में तराजिम: उर्दू ,हिन्दी, मल्यालम,तमिल और तेलगु।

आलमी ज़बानों में तराजिम: अंग्रेज़ी,बंगाली, तुर्की, फ़्रांसीसी, स्पैनिश,इंडोनेशियाई, चीनी, बोसनी वग़ैरा में।

टी.वी. पर: आलमी उर्दू पीस टी.वी. पर कोर्स **1** और **2** (हफ़्ता में **6** प्रोग्राम्स) और हैदराबाद के चैनल **4** टी वी और रुबी टी.वी पर रमज़ान में, अमेरिका में **GuideUs TV** दीगर चैनल्स पर पेश करने के लिये मज़ीद कोशिशें जारी हैं।

इन्टरनेट पर: **2004** और **2005** में कोर्स शुरु किया गया जिस के ज़रिये से **50** ममालिक के **4000** अफ़राद इस से मुस्तफ़ीद हुये। आज कुरआन समझने के लिये आलमी सतह पर सब से पहली वेबसाइट यही है, अगर आप गूगल पर **quranic Arabic** या **learn quran** या **understand quran** तलाश करें तो तक़रीबन पहला मुक़ाम **www.understandquran.com** को मिलता है जिस में यह कोर्सेज़ पेश किये गये हैं।

गुज़ारिश: अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ آيَة (पहुँचा दो मेरी तरफ़ से अगरचेह एक ही आयत हो) तो आईये हम सब मिल कर इस काम को आगे बढ़ायें।

अल्लाह से दुआ है कि वह हमारे इन छोटे मोटे कामों को जो इस की अज़ीमुश्शान किताब की ख़िद्मत में किये गये हैं कुबूल करे और हमें रियाकारी और दूसरे गुनाहों से बचाये,और ग़ल्तियों से महफ़ूज़ रखे, हम से जो भी ग़लती हो ,उसकी तस्हीह में हमारी मदद कीजिये।

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ، ، وَتُبْ عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ،

وَاغْفِرْلَنَا، إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ

وَجَزَاكُمُ اللهُ خَيْرًا

पेश लफ़्ज़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ. أَمَّا بَعْدُ!

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया: "तुम में बेहतर वह शख़्स है जो कुरआन सीखे और सिखाये"

एक तरफ़ कुरआन सीखने और सिखाने की यह फ़ज़ीलत और दूसरी तरफ़ हम ग़ैर अरबों का यह बुरा हाल है कि शायद **70-80** फ़ीसद लोग ऐसे हैं जिन्हें पूरी नमाज़ ही समझ मे नही आती और न ही वह कुरआनी आयात या आम सूरतें जो वह नमाज़ो में पढ़ते हैं। इन्शा अल्लाह यह कोर्स जो नमाज़ को आसान तरीक़े से समझाने और साथ ही साथ कुरआनी अरबी सिखाने के लिये बनाया गया है, उन्हे यह सब कुछ सिखा देगा।

अलहमदुलिल्लाह इस कोर्स को तरतीब दिये हुये सिर्फ़ **4** साल हुये हैं मगर इस क़लील मुद्दत में यह कोर्स दुनिया के मुख़्तलिफ़ मुल्कों में मसलन हिन्द व पाक बंगलादेश, इण्डोनेशिया, सिंगापुर, आस्ट्रेलिया, अमेरिका, इंगलैण्ड,साउथ अफ़रीक़ा,नाइजेरिया,श्रीलंका,ख़लीजी ममालिक वग़ैरा में पढ़ाया जा रहा है, और अलहमदुलिल्लाह हज़ारों लोग इस से मुस्तफ़ीद हो रहे हैं। अहम आलमी ज़बानों में मसलन अंग्रेज़ी, फ़्रांसीसी, स्पैनीश,तुर्की,बंगाली,बोसनी, मले, इण्डोनेशियाई, चीनी, पुर्तग़ाली, हिन्दी, मलयालम, तमिल, वग़ैरा में इसका तर्जुमा हो चुका है।

इस कोर्स की निहायत ही अहम और अनोखी ख़ुसूसियत यह है कि इसका एक बड़ा हिस्सा इन कुरआनी आयात और अज़कार और दुआओं पर मुश्तमिल है जिन की तिलावत हर मुसलमान अक्सर करता रहता है। एक मुसलमान तक़रीबन एक घण्टा(जुम्ला पाँच नमाज़ों में) अपने ख़ालिक़ व मालिक,अल्लाह से अरबी में गुफ़्तगू करने में सर्फ़ करता है, इसलिये हमारी यह कोशिश रही है कि एक मुसलमान अरबी तालीम की इब्तिदा भी इसी हिस्से से करे, इस तरीक़े को अपनाने के कई फ़वाइद हैं,मसलन-

1. एक नई ज़बान को सीखने और समझने के लिए मश्क़ **(Practice)** बहुत बड़ा रोल है, रोज़ाना नमाज़ो और दुआओं के दौरान हम तक़रीबन **150** ता **200** अरबी अलफ़ाज़ या तक़रीबन **50** जुमले दोहराते हैं, जुमलों को समझने के लिये हमें अरबी ज़बान के ढाँचें और तरीक़े को समझने मे मदद मिलेगी।
2. पहली क्लास से ही इस कोर्स का फ़ायदा महसूस होगा, चुँकि नमाज़ समझ में आने लगेगी।
3. नमाज़ो के दौरान अपने जज़्बा,रुजहान और तवज्जुह में फ़र्क़ का फ़ौरी एहसास होगा,वग़ैरा
4. इन फ़वाइद का एहसास किसी और कोर्स की तालीम से नही हो सकता।

इस कोर्स की दूसरी ख़ुसूसियत इसका अरबी ग्रामर सिखाने का अन्दाज़ है, चुँकि इस कोर्स का मक़्सद तालिब-ए-इल्मों को कुरआन-ए-करीम के मौजूदा तराजिम के ज़रीये कुरआन को समझने में मदद देना है। इस वजह से इस कोर्स में "सर्फ़" की तालीम के लिये एक निहायत ही आम फ़हम और अम्ली तर्बियती टैक्निक **(TPI: Total Physical Interaction)** का इंतिख़ाब किया गया है,वाज़ेह रहे कि बिल्कुल इब्तिदाई कोर्स है,यह पढ़ने के बाद आप ज़रुर अरबी की दीगर किताबें पढ़िये।

इस कोर्स के इख़्तिताम पर इन्शा अल्लाह आप कुरआन मजीद के तक़रीबन **125** अहम अल्फ़ाज़ सीखेंगे जो कुरआन में **40,000** से ज़्यादा बार आये हैं,(जुमला तक़रीबन **78,000** में से,यानी एक तरह से **50%** अहम अल्फ़ाज़ के मआनी व मतलब से वाक़िफ़ हो जायेंगे) |

इन्शा अल्लाह आप इस कोर्स को आसान, दिलचस्प,और सीखने के लिये बहुत मुअस्सिर उस्लूब वाला पायेंगे| अल्लाह से दुआ है कि वह हमारी इन हक़ीर कोशिशों को कुबूल करे,आपसे गुज़ारिश है कि जहाँ जहाँ हो सके,स्कूल,मदरसा,मस्जिद, मुहल्ले,और ख़ानदानों में इसका तआरुफ़ करायँ,ताकि इस उम्मत में नमाज़ को समझ कर पढ़ने का सिलसिला चले और साथ ही साथ कुरआन को समझने का भी |

कुरआनी आयत के तर्जुमे के लिये अक्सर जगहों पर हाफ़िज़ नज़र अहमद साहिब के तर्जुमे से इस्तिफ़ादा किया गया है | यह तर्जुमा बरेलवी, देवबन्दी, अहले हदीस और अहले सुन्नत वल्जमाअ़त के उलमाये किराम का नज़रे सानी शुदा और मुत्तफ़क़ अलैह है| अल्लाह से दुआ है कि हमें ग़ल्तियों से महफ़ूज़ रखे और अगर हो गयी हों तो माफ़ फ़रमाये,अगर आप इस में कोई ग़लती देखें तो बराहे करम मुत्तला फ़रमायें ताकि अगले एडीशन में इसकी तस्हीह हो सके |

अब्दुलअज़ीज़ अब्दुर्रहीम abdulazeez@understandquran.com 10 जूलाई 2012

सबक़-1: तआरुफ़

सबक़-1 के ख़त्म तक आप 6 अल्फ़ाज़ सीखलेंगे जो क़ुरआन में 1295 बार आये हैं।

दुआ	तब्लीग़
तसव्वुर एहसास	
एहतिसाब	प्लान

कोर्स के मक़ासिद:

- नमाज़ को मुअस्सिर तरह से पढ़ने की आदत हो,नमाज़ में खूब दिल लगे, ख़ुशूअ और ख़ुज़ूअ हासिल हो और नमाज़ के असरात हमारी ज़िन्दगी में आयें।
- क़ुरआन को समझना आसान हो जाये।
- क़ुरआन समझ कर बार-बार तिलावत करने का शौक़ पैदा हो।
- क़ुरआन से तआमुल **(Interaction)** यानी तदब्बुर और तज़क्कुर समझ में आये, क़ुरआन को ज़िन्दगी में लाने का तरीक़ा समझ में आये।
- टीम वर्क या इज्तिमाइयत की स्प्रिट पैदा हो।

अरबी ज़बान सीखने और क़ुरआन फ़हमी के इस कोर्स में बुनियादी फ़र्क़:

- फ़र्क़ नम्बर-**1:** नमाज़ से इब्तिदा, इसलिये कि हम रोज़ाना तक़रीबन एक घण्टा नमाज़ और दुआओं के अरबी माहौल में रहते हैं।
- फ़र्क़ नम्बर-**2:** सुनने और पढ़ने पर ज़्यादा तवज्जुह, इसलिये कि हम रोज़ाना क़ुरआन सुनते और पढ़ते हैं।
- फ़र्क़ नम्बर-**3:** अल्फ़ाज़ मआनी पर ज़्यादा तवज्जुह इसलिये कि यही फ़ितरी तरीक़ा है, छोटे बच्चे अपनी ज़ुबान इसी तरह सीखते हैं।

ग्रामर: इस सबक़ में हम छह अलफ़ाज़ सीखेंगे: هُوَ، هُمْ، أَنْتَ، أَنْتُمْ، أَنَا، نَحْنُ यह छह अलफ़ाज़ क़ुरआन करीम में **1295** बार आये हैं। इनकी **TPI** के तरीक़े से अच्छी तरह प्रेक्टिस कर लीजिये, **(TPI: Total Physical Interaction)** यानी कामिल जिस्मानी तआमुल,मतलब यह है कि आप अपने पूरे वुजूद का इस्तेमाल करें, आँखों से देखें, कानों से सुनें,मुँह से बोलें,हाथ से इशारा करें, और साथ ही साथ दिमाग़ से समझें,और दिल से यानी शौक़ से पढ़ें, यह सारी चीज़ें करेंगें तो आप इन्शा अल्लाह बहुत जल्द सीखेंगें,हाथ से इशारे करने का तरीक़ा नीचे बताया जा रहा है।

1. जब आप هُوَ (वह), कहें तो सीधे हाथ की तशह-हुद की उँगली से दायें जानिब इशारा करें, गोया वह शख़्स आप की दायें जानिब बैठा हुआ है, फिर जब आप هُمْ (वह सब) कहें तो सीधे हाथ की चारों उँगलियों से दायें जानिब इशारा करें।
2. जब आप أَنْتَ (आप) कहें तो सीधे हाथ की तशह-हुद की उँगली से सामने कीं जानिब बैठे हुये शख़्स की तरफ़ इशारा करें, फिर जब आप أَنْتُمْ (आप सब) कहें तो सीधे हाथ की चारों उँगलियों से सामने की जानिब इशारा करें, अगर क्लास चल रही हो तो उस्ताद तालिब-ए-इल्म की तरफ़ और तालिब-ए-इल्म उस्ताद की तरफ़ इशारा करे।
3. जब आप أَنَا (मैं) कहें तो सीधे हाथ की तशह-हुद की उँगली से ख़ुद कीं जानिब इशारा करें, और نَحْنُ (हम) कहें तो चारों उँगलियों से ख़ुद कीं जानिब इशारा करें।

Person	*No.*अदद	Detached / Personal Pronouns ज़मीरें	
3rd	***sr.*** *वाहिद*	هُوَ 481	वह
	pl. *जमा*	هُمْ 444	वह सब
2nd	***sr.*** *वाहिद*	أَنْتَ 81	तुम
	pl. *जमा*	أَنْتُمْ 135	तुम सब
1st	***sr.*** *वाहिद*	أَنَا 68	मैं
	dl., *मसना* ***pl.*** *जमा*	نَحْنُ 86	हम

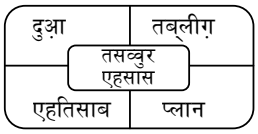

सबक़ -1: तआरुफ़

सवाल -1: इस कोर्स के क्या मक़ासिद हैं?

जवाब:

सवाल-2: नमाज़ से इस कोर्स को शुरु करने में क्या फ़ायदे हैं?

जवाब:

सवाल-3: अरबी क़वायद से ज़्यादा अल्फ़ाज़ व मआनी पर ज़ोर क्यों है ?

जवाब:

सवाल-4: इस कोर्स में क़ुरआन सुनने और पढ़ने पर ज़्यादा ज़ोर है या लिखने और अरबी ज़बान बोलने पर ?

जवाब:

अरबी क़वायद के सवालात बराए सबक़-1: (तआरुफ़)

सवाल-1: ख़ाली ख़ानों में तीन बार... هُوَ، هُمْ، أَنْتَ، أَنْتُمْ लीखिये.

Person	Number	तर्जुमा			
3rd ग़ायब	sr. वाहिद	वह			
	pl. जमा	वह सब			
2nd हाज़िर	sr. वाहिद	आप			
	pl. जमा	आप सब			
1st मुतकल्लिम	sr. वाहिद	मैं			
	pl. जमा dl. मस्ना	हम सब			

सवाल-2: अरबी अल्फ़ाज़ के टुकड़े हलकी लाईन मार कर बताईये,फ़िर उनका तर्जुमा कीजिये(فَ:पस, وَ:और)	
فَهُوَ = فَ+ هُوَ	पस वह
فَأَنْتَ	
وَهُمْ	
فَأَنَا	
وَنَحْنُ	

सवाल-3:उर्दू से अरबी में तर्जुमा कीजिये.	
पस वह सब	
और आप सब	
पस हम	
और वह	
पस आप	

सबक़-2 : सूरह-अल फ़ातिहा (आयात1-3)

सबक़ 2 के ख़त्म तक आप 14 अल्फाज़ सीखलेंगें जो क़ुरआन में 4442 बार आये हैं

दुआ	तब्लीग़
तसव्वुर एहसास	
एहतिसाब	प्लान

नीचे पहली लाईन में अरबी इबारत, दूसरी में लफ़्ज़ी तर्जुमा,तीसरी में अल्फ़ाज़ की तशरीह और आख़िर में रवाँ तर्जुमा और उसके नीचे कुछ असबाक़ दिये गये हैं। असबाक़ को पढ़ लेने के बाद लफ़्ज़ी तर्जुमा के साथ प्रेक्टिस कीजिये, यानी पहली बार अरबी इबारत पढ़ें और इसके बाद एक-एक अरबी लफ़्ज़ और साथ-साथ उसका तर्जुमा पढ़िये और आख़िर में सिर्फ़ रवाँ तर्जुमा पढ़िये, सूरतुल फ़ातिहा शुरु करने से पहले और क़ुरआन शुरु करने से पहले हम को أَعُوْذُبِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ पढ़ना चाहिये. इसलिये पहले हम उसका तर्जुमा सीखेंगें।

الرَّجِيْمِ ۞	مِنَ الشَّيْطٰنِ (88)	بِاللهِ (2699)		أَعُوْذُ
जो मरदूद है	शैतान से	अल्लाह की		मैं पनाह में आता हूँ
क्या शैतान अल्लाह की रहमत के क़रीब है? वह तो मरदूद है, इसलिये रजीम का मतलब है : मरदूद, धुत्कारा हुआ।	مِنْ: से क़ुरआन में مِنْ तकरीबन **3000** बार आया है।	اللهِ	بِ	अल्लाह की पनाह में यानी अल्लाह की हिफ़ाज़त में
		अल्लाह	की	
मैं पनाह में आता हूँ अल्लाह की शैताने मरदूद से				

- सब से पहले अपने आप को ग़ैर महफ़ूज़ महसूस कीजिये कि आप शैतान के हमलों में घिरे हुये हैं और उसका एक ही इलाज है। أَعُوْذُ بِاللهِ
- हर काम से पहले हिफ़ाज़त का ख़्याल रखने की ताली। (Safety first! Buckle up!)
- जब भी अल्लाह का ज़िक्र हो तो अल्लाह के क़ुरब को महसूस कीजिये,और उसकी रहमत पर यक़ीन के साथ साथ अपने गुनाहों की वजह से अल्लाह की पकड़ का डर भी हो।
- हम में से हर एक के साथ शैतान लगा हुआ है। उस बदतरीन दुश्मन को महसूस करें, इसके अलावा दो फ़रिश्तों की मौजुदगी को भी।
- रजीम का क्यों? ताकि हम उसकी ज़िल्लत को हमेशा ज़हन में रखें कि वह चाहता है कि हम भी उसी की तरह हो जायें।

***** ***** ***** *****सूरह-अल फ़ातिहा (आयात1-3) ***** ***** ***** *****

الرَّحِيْمِ ١ (116)	الرَّحْمٰنِ (57)	اللهِ	بِسْمِ (39)	
रहम करने वाला है	जो बहुत मेहरबान	अल्लाह के	नाम से	
इस तरह के अरबी अल्फ़ाज़ में तसल्सुल का इशारा होता है, जैसे جَمِيْل: यानी खूबसूरत(उसको खूबसूरत नही कह सकते जो कल बदसूरत था) كَرِيْم: यानी अच्छे अख़लाक़ वाला, رَحِيْم: मुसलसल रहम करने वाला	इस तरह के अरबी अल्फ़ाज़ में जोश का इज़हार होता है। जैसे, عَطْشَان: बेहद प्यासा جَوْعَان: बेहद भुका رَحْمٰن: पुरजोश रहम करने वाला	अल्लाह: अल्लाह का ज़ाती नाम है, बाक़ी नाम अल्लाह की सिफ़ात वाले हैं जैसे: اَلرَّحِيْم، اَلْكَرِيْم، اَلْغَفُوْر	اِسْم नाम	بِ से
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है				

- अल्लाह की मेहरबानियों को तसव्वुर में लाइये, फिर अल्लाह की रहमत को महसूस कीजिये।
- बिसमिल्लाह पढ़ते वक़्त अपने अन्दर एतमाद और यक़ीन रखिये कि रहमान और रहीम आप के साथ है।

73			43
الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢﴾	رَبِّ	لِلّٰهِ	اَلْحَمْدُ
तमाम जहानों का	रब है	अल्लाह के लिये	तमाम तारीफ़ें
عَالَم: जहान, عَالَم जमा عَالَمُوْن، عَالَمِين عَالِم : जानने वाला	परवरिश करने वाला	لِ : लिये	حَمْد:के दो मआनी : तारीफ़, शुक्र
तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिये हैं, जो तमाम जहानों का रब है			

- दिल से उसकी तारीफ़ कीजिये। अल्लाह के एहसानात को याद करते हुये उसका शुक्र कीजिये।
- एहतेसाब- मैं कितनी दफ़ा दुनिया की रंगीनी से,लोगों और शख्सियतों से मुतअस्सिर होता हूँ,और اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ कहना भूल जाता हूँ? कितनी दफ़ा याद कर के अल्लाह का शुक्र अदा करता हूँ।
- वह रब है। यानी हर हर ज़रुरत को पूरी करते हुये हमारी परवरिश करने वाला,तसव्वुर में लाइये कि किस तरह वह हर पल करोड़ों मख़्लूक़ात में से हर एक की परवरिश का सामान मुहैय्या करता रहता है।

الرَّحِيْمِ ﴿٣﴾	الرَّحْمٰنِ
रहम करने वाला है	बहुत मेहरबान
बहुत मेहरबान,रहम करने वाला है	

- इन अल्फ़ाज़ की तशरीह ऊपर बिस्मिल्लाह में गुज़र चुकी है।
- उसकी रहमत को महसूस कीजिये, अपने ऊपर मुसलसल ईनमात की सूरत में और वह भी हमारी मुसलसल नाफरमानियों के बावजूद।
- दूसरों पर रहम कीजिये। उनके हमदर्द बनिये, ताकि अल्लाह आप पर रहम करे,फरमाया रसुलुल्लाह ﷺ ने कि: जो रहम नही करता उस पर रहम नही किया जाता।
- अल्लाह पुरजोश रहमत वाला है और मुसलसल रहम करने वाला है और दोनो एक साथ है यानी रहमत की मुसलसल मूसलाधार बारिश करने वाला।

ग्रामर: हर ज़बान में जमा बनाने के कुछ क़वायद होते हैं जैस इंगलिश में एक क़ायदा है कि किसी लफ़्ज़ पर **"S"** लगाने से वह वाहिद से जमा हो जाता है जैसे **Muslim** की जमा **Muslims** इस तरह अरबी में जमा बनाने का एक क़ायदा यह है कि अल्फ़ाज़ के आगे "ون" या "ين" लगा देते हैं,अरबी के तक़रीबन **60%** अल्फ़ाज़ की जमा इसी तरह बनाई जाती हैं, याद रखिये ग्रामर के हर सबक़ की **TPI** के तरीक़े से प्रेक्टिस कीजिये ताकि जल्द से जल्द और आसानी से आप इन अल्फ़ाज़ को सीखलें ।

वाहिद		जमा
مُسْلِمٌ	→	مُسْلِمُوْن، مُسْلِمِيْن
مُؤْمِن	→	مُؤْمِنُوْن، مُؤْمِنِين
صَالِح	→	صَالِحُوْن ، صَالِحِيْن

वाहिद		ज्मा
كَافِر	→	كَافِرُوْن ، كَافِرِيْن
مُشْرِك	→	مُشْرِكُوْن، مُشْرِكِيْن
32 مُنَافِق	→	مُنَافِقُوْن، مُنَافِقِيْن

तो अब इन अल्फ़ाज़ को هُوَ، هُمْ के साथ मिलाकर प्रैक्टिस कीजिये जैसा कि नीचे दिया गया है । **TPI** के तरीके को इस्तेमाल करते हुये ।

Person	***No.***	(ज़मीर मिसालों के साथ) ***Personal Pronouns (Masculine)***	
3rd गायब	***sr. वाहिद***	هُوَ مُسْلِم	वह एक मुसलमान है.
	pl. जमा	هُمْ مُسْلِمُوْن	वह सब मुसलमान हैं.
2nd हाज़िर	*sr. **वाहिद***	أَنْتَ مُسْلِم	तुम एक मुसलमान हो.
	*pl. **जमा***	أَنْتُمْ مُسْلِمُوْن	तुम सब मुसलमान हो.
1st मुतकल्लिम	***sr. वाहिद***	أَنَا مُسْلِم	मैं एक मुसलमान हूँ
	dl., मसना ***pl. जमा***	نَحْنُ مُسْلِمُوْن	हम सब मुसलमान हैं.

अब आप बग़ैर तर्जुमा किये प्रेक्टिस करते रहिये । हाथ का इशारा ख़ुद बता देगा कि आप की मुराद क्या है ? इशारों को इस्तेमाल करने के कई फ़ायदों में से यह पहला अहम फ़ायदा है । इस तरह से न सिर्फ़ सीखना आसान होगा बल्कि दिलचस्प भी, सात मिनट की प्रेक्टिस में आप जो यह छह अलफ़ाज़ जो क़ुरआन करीम में **1295** बार आयें हैं, अच्छी तरह सीख लेंगें इन्शा अल्लाह! हो सकता है कि आप को पहली बार इशारे करने में झिझक हो मगर क़ुरआन के अल्फ़ाज़,अफ़्आल के मुख़्तलिफ़ सेग़े और उनके मुख़्तलिफ़ अबवाब सीखने में यह तरीक़ा बहुत कारआमद साबित होगा, इन्शाअल्लाह, यह कहा जा सकता है कि इन इशारों की मदद से सिखाये जाने वाले, सिर्फ़ इस कोर्स के अल्फ़ाज़ क़ुरआन का तक़रीबन **25%** बनते हैं ।

सबक़ -2: सूरह-अल-फ़ातिहा 1-3: ख़ाली ख़ानों में अरबी अल्फ़ाज़ का तर्जुमा लीखिये ?

أَعُوذُ	بِاللّٰهِ	مِنَ الشَّيْطٰنِ	الرَّجِيْمِ ۞

بِسْمِ	اللّٰهِ	الرَّحْمٰنِ	الرَّحِيْمِ ١

اَلْحَمْدُ	لِلّٰهِ	رَبِّ	الْعٰلَمِيْنَ ٢	الرَّحْمٰنِ	الرَّحِيْمِ ٣

सवाल-1: हम को أَعُوذُ بِاللّٰهِ किन ऐहसासात के साथ पढ़ना चाहिये?

जवाब:

सवाल-2: चन्द मिसालों की मदद से अल्लाह की तारीफ़ बयान कीजिये?

जवाब:

सवाल-3: रहमान और रहीम के मआनी में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब:

सवाल-4: अल्लाह तआला तमाम जहानों का रब है,तीन जहानों की मिसाल दीजिये ?

जवाब:

अरबी क़वायद के सवालात बराए सबक़-2: (सूरह-अल-फ़ातिहा आयात1-3)

सवाल-**1:** जिस तरह लफ़्ज़ مُسْلِم को इस्तेमाल करके जुमले बनाये गये हैं,इसी तरह ख़ाली ख़ानों में مُؤْمِنْ، और عَابِد, صَالِح का इस्तेमाल करते हुए जुमले बनाईये

Person	Number	مُسْلِم	مُؤْمِنْ	صَالِحْ	عَابِد
3rd गायब	sr. वाहिद	هُوَ مُسْلِم			
	pl. जमा	هُمْ مُسْلِمُوْن			
2nd हाज़िर	sr. वाहिद	أَنْتَ مُسْلِم			
	pl. जमा	أَنْتُمْ مُسْلِمُوْن			
1st मुतकल्लिम	sr. वाहिद	أَنَا مُسْلِم			
	pl. जमा dl. मस्ना	نَحْنُ مُسْلِمُوْن			

सवाल-**2:** अरबी अल्फ़ाज़ के टुकड़े हलकी लाईन मार कर बताईये फ़िर उनका तर्जुमा कीजिये(فَ :पस, وَ :और)	
مِنَ اللهِ= مِنَ +اللهِ	अल्लाह से
هُوَرَبٌّ	
فَهُوَ مُؤْمِنٌ	
فَاللهُ	
فَلِلّٰهِ	

सवाल-**3:**उर्दू से अरबी में तर्जुमा कीजिये	
पस वह सब मुस्लिम हैं	
और हम ईमान लाने वाले हैं	
और मैं पनाह में आता हूँ	
आप सब नेक लोग हैं	
वह शिर्क करने वाला आदमी है	

सबक़-3:
सूरह-अल फ़ातिहा (आयात 4-5)

सबक़ 3 के ख़त्म तक आप 18 अल्फाज़ सीखलेंगें जो क़ुरआन में 5926 बार आये हैं

दुआ	तब्लीग़
तसव्वुर एहसास	
एहतिसाब	प्लान

أَعُوْذُبِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ﴾

الدِّيْنِ ﴿٤﴾ 92	يَوْمِ 393	مٰلِكِ
बदला	दीन	मालिक है
दीन के दो मतलब हैं: 1. बदला 2. ज़िन्दगी का निज़ाम (दीने इस्लाम)	يَوْمُ الْجُمُعَةِ، يَوْمُ الْقِيٰمَةِ أَيَّام जमा يَوْم	مٰلِكِ: मालिक مَلَكُ الْمَوْت जैसे فرشتا : مَلَك
बदले के दिन का मालिक है,		

- उस दिन किसी के पास कोई कुव्वत नही होगी, सिर्फ़ वही मालिक और वही हाकिम,लेकिन सब से बेहतरीन आदिल व हाकिम ।
- कोई उस वक़्त सिफ़ारिश नही कर सकेगा ,सिवाय उसके जिसको अल्लाह ने इजाज़त दी हो ।
- उस दिन की हौलनाकी को तसव्वुर में लाइये,उस दिन की अफ़रातफ़री को समझने की कोशिश कीजिये । जिस दिन आदमी अपने भाई और अपनी माँ और अपने बाप और अपनी बीवी और अपने बेटे से दूर भागेगा,उस दिन हर एक को सिर्फ़ अपनी फ़िक्र होगी ।
- इस आयत पर उम्मीद भी हो और डर भी, अल्लाह ने बग़ैर पूछे हमें मुसलमान बनाया,सिर्फ़ अपनी रहमत से, तो अब हम उससे माफ़ी का और जन्नत का सवाल करते हैं उम्मीद कि वह ज़रुर क़ुबूल करेगा । साथ ही गुनाहों के अंजाम से डर भी हो कि उस दिन कहीं सज़ा न मिले और फ़िर से नेक बनने का इरादा हो ।

نَسْتَعِيْنُ ﴿٥﴾	وَاِيَّاكَ 24			نَعْبُدُ	اِيَّاكَ 24
हम मदद चाहते है	और सिर्फ़ तुझ ही से			हम इबादत करते हैं	सिर्फ़ तेरी ही
उर्दू के अल्फ़ाज़: استعانت، اعانت، عون، تعاون، معاون...	كَ	اِيَّا	وَ	इबादत : عِبَادَة इबादत करने वाला: عَابِد जिस की इबादत की जाये: مَعْبُوْد	
	तेरी	सिर्फ़, ही	और		
हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं और सिर्फ़ तुझ ही से मदद चाहते हैं,					

- मक़्सदे ज़िन्दगी तेरी इबादत है,यह मुसलमान की ज़िन्दगी का **mission statement** है । अल्लाह ने फ़रमाया- और मैंने जिन्नों और इंसानों को इसलिये पैदा किया है कि मेरी इबादत करें (سورة الذاريات)
- इबादत क्या है? नमाज़,रोज़ा, ज़कात, हज, दावत,जिहाद,इल्म हासिल करना,कमाना,दूसरों की ख़िदमत करना वग़ैरा । मगर सब से पहले नमाज़ है, इसलिये कि जिसने नमाज़ छोड़ी उसने दीन को ढा दिया ।
- हम इतने कमज़ोर हैं कि अल्लाह की मदद के बग़ैर ख़ुद अपनी प्यास भी नही बुझा सकते तो इबादत कैसे कर सकते हैं, इसलिये तेरी इबादत के लिये भी तेरी मदद चाहिये,ख़ास कर ऐसी

इबादत जो तुझे पसन्द हो, दिल की गहराइयों से अल्लाह की मदद के लिये दुआ कीजिये कि अल्लाह तआला हम को बेहतरीन इबादत करने की तौफ़ीक़ दे(आमीन)|

ग्रामर: हमने इस से पहले के सबक़ में "वह,वह सब,आप,आप सब,हम और हम सब" के लिये अरबी अल्फ़ाज़ सीखे थे, अब हम " उसका, उनका, आपका,आप सब का, मेरा और हमारा" के लिये अरबी अल्फ़ाज़ सीखेंगे, ये ज़माइर (--نَا، --ي، --كُمْ، --كَ، --هُمْ ، -- ، --هُ) हैं, चुँकि यह हमेशा किसी लफ़्ज़ के साथ जुड़ कर आते हैं इसलिये इन का गिनना मुश्किल है, यह कुरआन मजीद की हर लाइन में पाये जाते हैं, यानी तक़रीबन **10** हज़ार बार | इनको **TPI** के तरीक़े से पूरे शौक़ के साथ सीखिये |

Person	No.	Attached/Possessive Pronouns		... + رَبّ[975]	
3rd	*sr.*	ـهِ ـهُ	उसका	رَبُّهُ (رَبِّهِ)	उसका रब
	pl.	ـهِم ـهُمْ	उनका	رَبُّهُمْ (رَبِّهِمْ)	उनका रब
2nd	*sr.*	ـكَ	तुम्हारा	رَبُّك	तुम्हारा रब
	pl.	ـكُمْ	तुम सबका	رَبُّكُمْ	तुम सब का रब
1st	*sr.*	ـِي	मेरा	رَبِّي	मेरा रब
	dl., pl.	ـنَا	हमारा	رَبُّنَا	हमारा रब

सबक़ -3: सूरह-अल-फ़ातिहा 4-5 ख़ाली ख़ानों में अरबी अल्फ़ाज़ का तर्जुमा लिखिये-

مٰلِكِ	يَوْمِ	الدِّيْنِ ﴿٤﴾

اِيَّاكَ	نَعْبُدُ	وَاِيَّاكَ	نَسْتَعِيْنُ ﴿٥﴾

सवाल-**1:** हम يَوْمِ الدِّيْنِ की तैयारी किस तरह करें ?

जवाब:

सवाल-**2:** दीन का मतलब क्या है ?

जवाब:

सवाल-**3:** हमारी ज़िन्दगी का क्या मतलब है ?

जवाब:

सवाल-**4:** हम किन बातों की अल्लाह से मदद माँगते हैं ?

जवाब:

अरबी क़वायद के सवालात बराए सबक़-3: (सूरह-अल-फ़ातिहा आयात 4-5)

सवाल-1:जिस तरह लफ़्ज़ رب को ज़मायर से मिलाकर जुमले बनाये गये हैं इसी तरह ख़ाली ख़ानों में‘دين،كتاب और آيات इस्तेमाल करते हुये जुमले बनाईये ।

Person	Number	رَبّ	كتاب	دين	آيات
3rd ग़ायब	sr. वाहिद	ـهٗ ، رَبُّهٗ			
	pl. जमा	ـهُمْ ، رَبُّهُمْ			
2nd हाज़िर	sr. वाहिद	ـكَ، رَبُّكَ			
	pl. जमा	ـكُمْ، رَبُّكُمْ			
1st मुतकल्लिम	sr. वाहिद	ـِي، رَبِّي			
	pl. जमा dl. मस्ना	ـنَا، رَبُّنَا			

सवाल-2: अरबी अल्फ़ाज़ के टुकड़े हलकी लाइन मार कर बताईये,फिर उनका तर्जुमा कीजिये।	
اِسْمُهٗ	
اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ	
يَوْمُهُمْ	
فَرَبُّكَ	
مِنْ رَّبِّهِمْ	

सवाल-3: उर्दू से अरबी में तर्जुमा कीजिये ।	
और उनका दीन	
और वह हमारा रब है	
तू मेरा रब है	
आपका रब रहम करने वाला है	
हम मदद माँगते हैं	

सबक़-4:
सूरह-अल-फ़ातिहा (आयात (6-7)

सबक़ 4 के ख़त्म तक आप 24 अल्फाज़ पढ़ना सीखलेंगे जो कुरआन में 9009 बार आये हैं

दुआ	तब्लीग़
तसव्वुर एहसास	
एहतिसाब	प्लान

﴿أَعُوْذُبِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ﴾ ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ﴾

الْمُسْتَقِيْمَ ٦ (37)	الصِّرَاطَ (45)	اِهْدِنَا
सीधे	रास्ते की	हमें हिदायत दे
सीधा ख़ते मुस्तक़ीम: सीधी लाइन	اَلْ: वह ख़ास, the الصِّرَاط: वह ख़ास रास्ता	نَا: हमें اِهْدِ: हिदायत दे
हमें सीधे रास्ते की हिदायत दे,		

- क्या मुसलमान होना हिदायत पर होना है ? सिर्फ़ यही मतलब होता तो यह दुआ ग़ैर मुस्लिम के लिये होती। दर अस्ल मुसलमान होना हिदायत का पहला क़दम है।
- हिदायत का मआनी "रास्ता दिखा" भी किया गया है और "रास्ता चला" भी, इन दोनो में बहुत बड़ा फ़र्क़ है। हम को क़दम-क़दम पर अल्लाह की हिदायत चाहिये।
- हिदायत कहाँ से मिलती है? कुरआन और सुन्नत से, कुरआन هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ और هُدًى لِّلنَّاس है अगर कुरआन ही समझने की कोशिश न हो या अहादीस पढ़ने की फ़िक्र न हो तो क्या यह दुआ काफ़ी है? एहतिसाब कीजिये और प्लान बनाइये।
- याद रखिये हर नमाज़ याद दिहानी है कि कुरआन समझना जरुरी बल्कि इमरजैंसी है।
- इसका यह भी मआनी है कि इस नमाज़ के बाद,आज,इस हफ़्ते, जो भी मै करुँ, ऐ अल्लाह इस में हिदायत दे।

عَلَيْهِمْ	أَنْعَمْتَ	الَّذِيْنَ (1080)	صِرَاطَ (45)
उन पर	तूने इनाम किया	उन लोगों का	रास्ता
عَلَى: उन هِمْ: पर	इनाम:नेमत	الَّذِيْنَ: कुरआन में 1080 बार	صِرَاط: रास्ता पिछली आयत ही में यह लफ़्ज़ आया है
उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने इनाम किया			

- अल्लाह ने किन पर इनाम किया ? अंम्बिया,सिद्दीक़ीन,शोहदा,और सालेहीन पर,क्योंकि उन्होंने वह रास्ता इख़्तियार किया,जिस का अल्लाह तआला ने हुक्म दिया।
- उनका रास्ता क्या था: (1) अमल का रास्ता,दिल के आमाल का। जैसे ईमान, इख़्लास, मुहब्बत, तवक्कुल, और दूसरे आमाल का जैसे नमाज़,रोज़ा,ज़कात वग़ैरा (2) दावत व इस्लाह का रास्ता,(3) तज़किया व तरबियत का रास्ता। (4) तन्फ़ीद यानी एलाये कलिमतुल्लाह,शहादत अलन्नास, जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह,अम्रबिल्मारुफ़ व नह्य अनिल्मुन्कर का रास्ता।
- दुआ के बाद एहतेसाब कि हम किस रास्ते पर चल रहे हैं? और प्लान कीजिये,सही रास्ते पर चलने का।

الضَّآلِّيْنَ ﴿٧﴾	وَلاَ (1732)	عَلَيْهِمْ	الْمَغْضُوبِ	غَيْرِ (147)
जो गुमराह हुये	और न	उन पर	ग़ज़ब किया गया	न
ضَالّ: गुमराह होने वाला ضَالّ की जमा ضَالِّيْن इसी माद्दे का उर्दू लफ़्ज़: ضلالت	لاَ / وَ न / और	هِمْ / عَلَى पर / उन	इस लफ़्ज़ की तरक़ीब"मज़लूम" जैसी है। مَظْلُوْم: जिस पर ज़ुल्म किया गया مَغْضُوْب: जिस पर ग़ज़ब किया गया	नही, इसके इलावा غَيْرِ कुरआन में 147 बार
न उनका जिन पर ग़ज़ब किया गया, और न उनका जो गुमराह हुये.				

- मग़ज़ूब कौन हैं? जिन को मालूम है मगर करते नही। हमारा क्या हाल है? अगर हम जानते हों तो अमल करें और अगर नहीं जानते तो इल्म हासिल करें।
- तसव्वुर में लायें कि जिन से अल्लाह नाराज़ हो, उनका इस दुनिया और आख़िरत में कैसा अंजाम होगा ?
- हम जिन्हें हीरो या लीडर समझते हैं और उनकी इत्तिबा करते हैं, क्या वह अल्लाह के इनाम याफ़्ता ग्रूप में से हैं? या दूसरे ग्रूप में से ?
- ज़ाल्लीन: के माअना होते हैं जो जानते ही नही,(हमारा क्या हाल है?) ऐसा न हो कि कुरआन घर में हो, मगर हम भटकते रहें! क्या हम कुरआन से सिर्फ़ इसलिये दूर है कि हम को अरबी ज़बान नही आती ? आज ही अज़्म कीजिये कि हम कुरआनी अरबी सीखना यानी इन अस्बाक़ को सीखना कभी न छोड़ेंगे, अल्लाह हमारे लिये इसका सीखना आसान करे।

दुआ के साथ एहतेसाब ,प्लान और तबलीग़ भी हो।

<u>एक अहम मश्वरा:</u> सुरह फ़ातिहा पढ़ते हुये इस हदीस को याद रखिये! हदीस की किताब सहीह मुस्लिम में अबु होरैरा (रज़ि) से रिवायत है कि रसूललुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: अल्लाह तआला फ़रमाता है- मैने नमाज़ अपने और अपने बन्दे के दरमियान तक़सीम कर ली है, आधी मेरी है और आधी मेरे बन्दे की, और मेरे बन्दे को मैं वह देता हूँ जो वह मुझ से मांगे,जब बन्दा कहता है कि الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ तो अल्लाह तआला फ़रमाता है " حَمِدَنِىْ عَبْدِىْ " यानी मेरे बन्दे नें मेरी तारीफ़ की, जब कहता है الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ तो अल्लाह तआला फ़रमाता है أَثْنٰى عَلَيَّ عَبْدِىْ यानी मेरे बन्दे ने मेरी सना की,जब कहता है مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ तो अल्लाह तआला फ़रमाता है مَجَّدَنِىْ عَبْدِىْ यानी मेरे बन्दे ने मरी बुज़ूर्गी बयान की,और जब कहता है إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ तो अल्लाह तआला फ़रमाता है यह मेरे और मेरे बन्दे के दरमियान है और वह जो कुछ मुझ से माँगें मैं उसे दूँगा,और जब कहता है اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿٦﴾ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ﴿٧﴾ तो अल्लाह तआला कहता है: यह मेरे बन्दे के लिये है,वह जो कुछ माँगेगा सब कुछ उसे मिलेगा।

ग्रामर: हमने गुज़िश्ता सबक़ में " उसका,उनका,आपका,आप सब का,मेरा और हमारा" के अरबी अल्फ़ाज़ सीखे,इस सबक़ में हम उसका इआदा कुछ और अल्फ़ाज़ को लेकर करेंगें, मुअन्नस का सेग़ा और मुज़क्कर से मुअन्नस अल्फ़ाज़ बनाने का तरीक़ा भी सीखेंगे, इन सब को **TPI** के तरीक़े से सीखिये ।

Person	No.	Attached/ Possessive Pronouns	... + دِين तरीक़-ए-ज़िन्दगी		किताब ... + كِتَاب	
3rd	sr.	ـهُ ـهِ उसका	دِينُهُ	उसका मज़हब, तरीक़-ए- ज़िन्दगी	كِتَابُهُ	उसकी किताब
	pl.	ـهُمْ ـهِم उनका	دِينُهُمْ	उनका मज़हब, तरीक़-ए- ज़िन्दगी	كِتَابُهُمْ	उनकी किताब
2nd	sr.	ـكَ तुम्हारा	دِينُكَ	आपका मज़हब, तरीक़-ए- ज़िन्दगी	كِتَابُكَ	आपकी किताब
	pl.	ـكُمْ तुम सबका	دِينُكُمْ	आप सब का मज़हब, तरीक़-ए- ज़िन्दगी	كِتَابُكُمْ	आप सब की किताब
1st	sr.	ـِي मेरा	دِينِىْ	मेरा मज़हब, तरीक़-ए-ज़िन्दगी	كِتَابِىْ	मेरी किताब
	dl., pl.	ـنَا हमारा	دِينُنَا	हमारा मज़हब, तरीक़-ए- ज़िन्दगी	كِتَابُنَا	हमारी किताब

जब आप هِيَ (वह औरत) या هَا (उस औरत का) कहें तो बायें हाथ की तशह-हुद की ऊँगली से बायें जानिब इशारा करें, गोया "वह औरत" आप की बायें जानिब है ।

هِيَ	वह औरत	هَا	उस औरत का	دِينُهَا	उस औरत का मज़हब/ तरीक़-ए- ज़िन्दगी	كِتَابُهَا	उस औरत की किताब

मुज़क्कर से मुअन्नस और उसकी जमा: अरबी में मुज़क्कर से मुअन्नस बनाने के लिये आम तौर पर मुज़क्कर लफ़्ज़ के आगे गोल ता "ة"का इज़ाफ़ा कर देते हैं, जैसे مُسْلِم से مُسْلِمَة, كَافِر से كَافِرَة, صَالِح से صَالِحَة वग़ैरा, और किसी मुअन्नस की जमा बनाना हो तो लफ़्ज़ के आख़िर का गोल ता "ة" गिराकर "ا ت" का इज़ाफ़ा कर देते हैं, ज़ैल में मिसालें देखिये ।

वाहिद मुज़क्कर		वाहिद मुअन्नस	जमा मुअन्नस
مُسْلِمْ	→	مُسْلِمَة	مُسْلِمَات
مُؤْمِن	→	مُؤْمِنَة	مُؤْمِنَات
صَالِح	→	صَالِحَة	صَالِحَات

वाहिद मुज़क्कर		वाहिद मुअन्नस	जमा मुअन्नस
كَافِر	→	كَافِرَة	كَافِرَات
مُشْرِك	→	مُشْرِكَة	مُشْرِكَات
مُنَافِق	→	مُنَافِقَة	مُنَافِقَات

सबक़ -4: सूरह-अल-फ़ातिहा 6-7

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ٦

صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلاَ الضَّآلِّيْنَ ٧

सवाल-**1:** हिदायत देना किस के हाथ में है?

जवाब:

सवाल-**2:** अल्लाह ने किन पर इनाम किया?

जवाब:

सवाल-**3**: مَغْضُوْب और ضَالِّيْن में क्या फ़र्क़ है? अल्लाह का ग़ुस्सा किन पर होता है?

जवाब:

सवाल-**4:** اِهْدِنَا में نَا का मतलब क्या है?

जवाब:

अरबी क़वायद के सवालात बराये सबक़-4: (सूरह-अल-फ़ातिहा आयात 6-7)

सवाल-1: इन अल्फ़ाज़ को मुअन्नस के सेग़े से जोड़िये,इन अल्फ़ाज़ की मुअन्नस लिखिये,फ़िर उनकी जमा बनाईये:

अल्फाज़	+ها
رَبٌّ	رَبُّهَا
دِيْنٌ	
كِتَابٌ	
اٰيَات	
اِسْمٌ	
صِرَاطٌ	

मुज़क्कर	मुअन्नस	जमा
مُسْلِمٌ		
كَافِرٌ		
مُشْرِكٌ		
عَابِدٌ		
صَالِحٌ		
مُنَافِقٌ		

सवाल-2: अरबी अल्फ़ाज़ के टुकड़े हलकी लाईन मार कर बताईये,फ़िर उनका तर्जुमा कीजिये ।	
ضَالِّ	
وَالَّذِيْنَ	
فَعَلَيْهِمْ	
رَبُّكُمْ وَ دِيْنُكُمْ	
وَدِيْنُنَا	

सवाल-3: उर्दू से अरबी में तर्जुमा कीजिये ।	
हमारा दीन और हमारी किताब	
आपका रब और उसकी किताब	
कुरआन हमारी किताब है	
उनकी किताब और उनका दीन	
मेरा रब और मेरी किताब	

सबक़-5:
नूज़ुल-ए-कुरआन का मक़्सद

सबक़ 5 के ख़त्म तक आप 32 अल्फ़ाज़ पढ़ना सीखलेंगे जो कुरआन में 16187 बार आये हैं

दुआ	तब्लीग़
तसव्वुर एहसास	
एहतिसाब	प्लान

﴿أَعُوْذُبِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ﴾ ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ﴾

مُبٰرَكٌ	اِلَيْكَ	اَنْزَلْنٰهُ	كِتٰبٌ (261)
बरकत वाली है	आपकी तरफ़	हमने उतारा है उसको	(यह) किताब
उर्दू के अल्फ़ाज़: عید مُبارک، شادی مبارک، کامیابی مبارک	كَ / إِلَى	هُ / أَنْزَلْنَا	كُتُب की जमा كِتَاب
	आपके / तरफ़	उसको / उतारा हम ने	कुरआन में 261 बार
हम नें आप की तरफ़ एक मुबारक किताब नाज़िल की			

➢ अल्लाह तआला ने पहले ही कह दिया कि यह किताब बरकत वाली है, मगर किस लिये उतारा यह बात आगे आ रही है, यानी अगर इस किताब की बरकत को पुरी तरह हासिल करना है तो वह काम करना है जिसके लिये उसको उतारा गया है।

اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٩﴾ (43)	وَلِيَتَذَكَّرَ	اٰيٰتِهٖ (382)	لِّيَدَّبَّرُوْٓا
अक़्ल वाले	और ताकि नसीहत पकड़ें	उसकी आयात पर	ताकि वह ग़ौर करें
أَلْبَاب / أُوْلُوْا ، أُوْلِيْ	يَتَذَكَّرَ / لِ / وَ	آيَات / هٖ	يَدَّبَّرُوْا / لِ
अक़्ल / वाले	नसीहत पकड़ें / ताकि / और	आयात / उसकी	वह ग़ौर करें / ताकि
لُبّ जमा أَلْبَاب : अक़्ल		آيَة : आयत , निशानी آيَات की जमा آيَة	
ताकि वह उसकी आयात पर ग़ौर करें और ताकि अक़्ल वाले नसीहत पकड़ें			

इसके नाज़िल करने के दो मक़ासिद हैं: **(1)** तदब्बुर करना **(2)** तज़क्कुर करना।

- तदब्बुर यानी ग़ौर करना,अख़बार पढ़ने के लिये कोइ तदब्बुर की ज़रुरत नही,एक ही बार आप पढ़कर मज़मून को समझ सकते हैं, मगर क्या आप साइंस या हिसाब या कामर्स की किताब उसी तरह पढ़ सकते हैं जिस तरह अख़बार पढ़ते हैं? नही! आप को रुक-रुक कर सोचना होगा ग़ौर करना होगा, यह तदब्बुर की एक मिसाल है।
- कोइ भी ग़ौर और तदब्बुर उसी वक्त कर सकेगा जब वह उसको समझे। इसी लिये कुरआन में तदब्बुर करने के लिये उसको समझना ज़रुरी है।
- तज़क्कुर : नसीहत हासिल करना... यानी अपनी ज़िन्दगी में उसकी बातों पर अमल करना, हम नसीहत भी उसी वक़्त हासिल कर सकते हैं जब हम उसको समझें!
- जब हम यह दोनो चीज़े करेंगें तो इन्शा अल्लाह इस किताब के ज़रिये से हम दुनिया और आख़िरत की सारी बरकतें हासिल कर सकते हैं।

तदब्बुर की बात करने से पहले कुरआन से हमारे तअल्लुक को समझ लीजिये।

1. Direct रास्ता	**2.** Personal शख्सी	**3.** Planned तैशूदाह	**4.** Relevant मुतअ़ल्लिक़
हम कुरआन पढ़ते हैं या सुनते हैं तो हम कहते हैं कि यह अल्लाह की किताब है या अल्लाह का कलाम है। इसका मतलब यह कि अल्लाह तआला हमसे रास्त मुख़ातब होता है,जब यह तय हो गया कि अल्लाह तआला हमसे रास्त मुख़ातिब है,तो वह फ़िर देख भी रहा होता है,कि उसका बन्दा उसके कलाम को सुन कर क्या करता है।	जो आयत भी हम पढ़ें या सुनें, इस एहसास के साथ कि यह मेरे लिये है, इस तरह नहीं कि फ़लाँ आयत काफ़िरों के लिये,फ़लाँ मुश्रिकों के लिये,फ़लाँ मुनाफ़िकों के लिये, और फ़लाँ मदीने के मुसलमानों के लिये, नही,बल्कि हम को हमेशा यह देखना चाहिये कि इस में हमारे लिये क्या पैग़ाम और रहनुमाई है।	दाने दाने पर लिखा है खाने वाले का नाम! हम जानते है कि दुनिया की हर चीज़ तक़दीर के तहत है तो हम कहेंगे: आयत-आयत पर लिखा है सुनने वाले का नाम, पढ़ने वाले का नाम।	कुरआन तज़्कीर है, याद दिहानी है, जब भी कुरआन पढ़ा जाता है या सुना जाता है तो हमारे लिये कोइ पैग़ाम देता है क्योंकि अल्लाह की तज़्कीर ग़ैर मुतअ़ल्लिक़ कैसे हो सकती है? हमें सोचना चाहिये कि ऐ अल्लाह आपने हमें यह आयात आज क्यों सुनाई ?

जब तअल्लुक मालूम हो गया.... तो तदब्बुर व तज़क्कुर के लिये चन्द अहम बातों को याद रखिये।

1.तसव्वुर	**2.**फ़हम	**3.**तसव्वुर	**4.** एहसास
पूरी आयत समझ न आये तब भी पूरी तवज्जुह से सुनिये और जो भी लफ़्ज़ समझ में आये उसको पकड़ने की कोशिश कीजिये।	न समझ में आये तो अल्लाह से माफ़ी माँगिये और उसी वक़्त अह्द कीजिये कि आज से कुरआन को समझने की मुसलसल कोशिश करुँगा।	जब कभी अल्लाह की निशानियों का ज़िक्र हो,तारीख़ का ज़िक्र हो तो उनका खूब तसव्वुर कीजिये।	नेअमतों और एहसानात का ज़िक्र हो तो पुरी तरह एहसास से पढ़िये,जन्नत का ज़िक्र हो तो शौक और उम्मीद हो,जहन्नम का ज़िक्र हो तो ख़ौफ और डर हो।

तदब्बुर और तज़क्कुर का एक तरीक़ा:

1.दुआ़	2.एहतिसाब	3.प्लान	4.तबलीग़
इसलिये कि हर आयत हमसे कुछ मुतालिबा करती है, उसको पुरा करने के लिये दुआ़ से शुरु कीजिये	दुआ़ की रोशनी में गुज़रे दिन या हफ़्ता का एहतिसाब कीजिये	अगले दिन या हफ़्ता का प्लान बनाइये।	अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:(بَلِّغُوْا عَنِّي وَلَوْ آيَة) तबलीग़ करो यानी पहुँचा दो ख़्वाह वह एक आयत ही क्यों न हो!

उपर की **12** चीज़ो में तसव्वुर,एहसास और दुआ़ सबसे अहम चीज़े हैं, इस फ़ार्ले को हम अब आगे के असबाक़ में बताते जायेंगें कि किस तरह इस फ़ार्मूले को इस्तेमाल किया जा सकता है।

ग्रामर: हम जो अल्फ़ाज़ लिखते-पढ़ते और कहते-सुनते हैं, उसके तीन अक़साम हैं: (1) इस्म (2) फ़ेल (فعل)(3) हर्फ़ ।

इस्म: किसी चीज़,या जगह,या आदमी का नाम या सिफ़त हो, मस्लन رَجُلٌ (मर्द) زَيْدٌ (ख़ास नाम) مُسْلِمٌ (मुसलमान) वग़ैरा ।

फ़ेल: जिस से किसी काम का करना या होना ज़ाहिर हो, فَتَحَ (उसने खोला) ذَهَبَ (वह गया) يَشْرَبُ (वह पीता है या पीयेगा) वग़ैरा ।

हर्फ़: जो इस्म या फेल को मिलाये,मसलन لَ، مِنْ، عَنْ، مَعَ वग़ैरा ।

इस सबक़ में हम चार हुरुफ सीखेंगे ।

साथ ... + مَعَ 163		बारे में ... + عَنْ 404		से ... + مِنْ 3026		लिये, ... + لَ 1367	
उसके साथ	مَعَهٗ	उसके बारे में, उससे	عَنْهُ	उससे	مِنْهُ	उसके लिये,उसका	لَهٗ
उनके साथ	مَعَهُمْ	उनके बारे में, उनसे	عَنْهُمْ	उनसे	مِنْهُمْ	उनके लिये,उनका	لَهُمْ
आपके साथ	مَعَكَ	आपके बारे में, आपसे	عَنْكَ	आपसे	مِنْكَ	आपके लिये,आपका	لَكَ
आप सबके साथ	مَعَكُمْ	आप सब के बारे में, आप सब से	عَنْكُمْ	आप सब से	مِنْكُمْ	आप सब के लिये, आपका	لَكُمْ
मेरे साथ	مَعِىْ	मेरे बारे में, मुझ से	عَنِّىْ	मुझ से	مِنِّىْ	मेरे लिये,मेरा	لِىْ
हमारे साथ	مَعَنَا	हमारे बारे में, हमसे	عَنَّا	हमसे	مِنَّا	हमारे लिये,हमारा	لَنَا
उस औरत के साथ	مَعَهَا	उस औरत से	عَنْهَا	उस औरत से	مِنْهَا	उस औरत के लिये	لَهَا

कुरआन में यह अल्फ़ाज़ **4960** बार आये है

नीचे दिये गए चार हुरुफ़ के मआनी याद रखने के लिये इनकी मिसालों को अच्छी तरह याद रखिये ।

لَ: لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِىَ دِيْنِ

مِن: أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰن

عَن: رَضِىَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّعِيْم

مَعَ: اِنَّ اللهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ

यह याद रहे कि जब यह हर्फ़ जर फ़ेल, इस्म,फाइल,या इस्म मफ्ऊल के साथ आये तो उसके मआनी बदल सकते हैं। इनमें शुरु के तीन हर्फ़ें जर हैं और आख़िरी ज़र्फ़ें मकान

सबक़-5: नुज़ूल-ए-क़ुरआन का मक़्सद (साद-29)

ख़ाली ख़ानों में अरबी अल्फ़ाज़ का तर्जुमा लीखिये-

दुआ	तब्लीग़
तसव्वुर एहसास	
एहतिसाब	प्लान

كِتٰبٌ	اَنْزَلْنٰهُ	اِلَيْكَ	مُبٰرَكٌ

لِّيَدَّبَّرُوْٓا	اٰيٰتِهٖ	وَلِيَتَذَكَّرَ	اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٩﴾

सवाल-**1:** तदब्बुर का मतलब क्या है? एक मिसाल दीजिये ?

जवाब:

सवाल-**2:** तज़क्कुर का क्या मतलब है ?

जवाब:

सवाल-**3:** क़ुरआन से हमारे तअल्लुक़ के चार पहलू कौन से हैं?

जवाब:

सवाल-**4:** तदब्बुर और तज़क्कुर के चार शरायत को बयान कीजिये?

जवाब:

अरबी क़वायद के सवालात बराये सबक़-5 नुज़ूल-ए-कुरआन का मक़्सद (ص-٢٩)

सवाल-**1:**जिस तरह हर्फ़े जर "ل" का ज़मायर से मिलाकर जुमले बनाए गये हैं इसी तरह ख़ाली ख़ानों में,مِنْ،عَنْ और مَعَ का इस्तेमाल करते हुये जुमले बनाईये।

Person	Number	ل	مَنْ	عَنْ	مَعَ
3rd ग़ायब	sr. वाहिद	لَهٗ			
	pl. जमा	لَهُمْ			
2nd हाज़िर	sr. वाहिद	لَكَ			
	pl. जमा	لَكُمْ			
1st मुतकल्लिम	sr. वाहिद	لِىْ			
	pl. जमा dl. मस्ना	لَنَا			
ग़ायब	sr. वाहिद मुअन्नस	لَهَا			

सवाल-**2:**अरबी अल्फ़ाज़ के टुकड़े हलकी लाईन मार कर बताईये,फिर उनका तर्जुमा कीजिये।	
اَللّٰهُ مَعَنَا	
فَلَهُمْ	
وَلَنَا	
فَمِنْكُمْ	
فَلَهَا	

सवाल-**3:**उर्दू से अरबी में तर्जुमा कीजिये।	
अल्लाह आपसे राज़ी हो	
आपका नाम	
और तुम में से	
और उनके लिए	
कुरआन मेरे साथ है	

सबक़ -6:
कुरआन आसान और बेहतरीन काम उसका सीखना

सबक़ 6 के ख़त्म तक आप 43 अल्फाज़ पढ़ना सीखलेंगे जो कुरआन में 22809 बार आयें हैं

أَعُوْذُبِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ﴾

لِلذِّكْرِ		الْقُرْاٰنَ (70)	يَسَّرْنَا	وَلَقَدْ (409)		
ज़िक्र के लिये		कुरआन	हमने आसान किया	और अलबत्ता तहक़ीक़		
الذِّكْر	لِ	قُرْاٰن : बहुत पढ़ा जाने वाला	يُسْر : आसानी عُسْر : मुश्किल	قَدْ	لَ	وَ
ज़िकर	लिये			तहक़ीक़	अलबत्ता	और
				لَ: अलबत्ता,यक़ीनन, ताकीद के लिये,**Indeed** قَدْ :तहक़ीक़,हो चुका,**Already,** قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوة :नमाज़ खड़ी हो चुकी. لَ: अलबत्ता **Indeed** (وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ) لِ: ताकि **So that** (لِّيَدَّبَّرُوْٓا.. لِيَتَذَكَّرَ...)		
तहक़ीक़ हमने नसीहत के लिये कुरआन को आसान कर दिया						

- ज़िक्र के दो माअना हैं: **(1)** याद करना**(2)** समझना और नसीहत हासिल करना,फ़त्वा देने और अहकाम निकालने के लिये मज़ीद कई उलूम सीखने की ज़रुरत पड़ेगी, मगर नसीहत हासिल करने के लिये बहुत आसान है।
- अ़मल से शुक्र अदा कीजिये कि अल्लाह ने इसको आसान किया,इस नियत और प्लान के साथ कि हम जल्द से जल्द पूरा कुरआन सीखेंगे।
- कोई यह कहे कि कुरआन मुश्किल है तो कहिये कि यह अल्लाह के ऐलान के ख़िलाफ़ बात है,आइन्दा से हरगिज़ ज़बान से यह बात न निकले कि कुरआन मुश्किल है।
- कुरआन आसान है,लेकिन खुद बखुद नही आयेगा,इसके लिये कोशिश करनी होगी,एक हदीस कुदसी में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है "जो चल कर मेरी तरफ़ आता है मैं उसकी तरफ़ दौड़ कर आता हूँ" इसके बाद भी क्या हम अल्लाह की तरफ नही चलेंगे ?
- कुरआन खुद के लिये आसान है और दूसरों को नसीहत करने के लिये भी आसान है, इसको अच्छी तरह सीखिये, ताकि उसके अन्दाज़े बयान,उसकी दलीलें सब अच्छी तरह याद हो जायें।

وَعَلَّمَهٗ (بخاری)			تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ	مَّنْ (823)	خَيْرُكُمْ (178)	
और सिखाये			सीखे	जो	तुम में से बेहतरीन वह है	
ہٗ	عَلَّمَ	وَ	تَعَلَّمَ : सीखा عَلَّمَ: सिखाया	مَنْ: जो خَيْرُكُمْ مَّنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهٗ مَنْ: कौन (مَنْ رَّبُّكَ क़ब्र का पहला सवाल)	كُمْ	خَيْرُ
ऊसको	सिखाये	और			तुम में	अच्छा,बेहतरीन
तुम में से बेहतरीन वह है जो कुरआन सीखे और सिखाये						

- इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है। इस हदीस से जो बात सब से पहले अयाँ होती है वह यह है कि कुरआन का सीखना और सिखाना सब से बेहतरीन काम है।
- इस हदीस में पहले तालिब-ए-इल्म का ज़िकर है फिर उस्ताद का,यह तालिब-ए-इल्म का इक्राम है, इसका यह मतलब भी है कि बेहतरीन शख्स वह है जो यह दोनों काम करे यानी सीखे भी और सिखाये भी। एक और मतलब यह भी हो सकता है कि अल्लाह की किताब का इल्म ख़त्म नही हो सकता। इसलिये मरते दम तक हर एक को उसे सीखते रहना चाहिये।
- अल्लाह देख रहा है,इसलिये इस हदीस पर अमल करने की उसी वक्त नियत कीजिये कि इस सिलसिले को छोड़ेगें नही,पूरा कुरआन सीखेगें और फिर दूसरों को सिखायेंगें,सिर्फ नाज़िर-ए-कुरआन ही नही बल्कि फ़हम-ए-कुरआन तदब्बुर-ए-कुरआन भी सीखेंगे, यह काम इज्तिमाई सतह पर करेंगे ताकि कुरआन के पैग़ाम को खूब फैलाया जा सके...।

بِالنِّيَّاتِ (بخاری)	إِنَّمَا الْأَعْمَالُ (41 146)
नियतों पर हैं	आमाल तो बस
بِ + النِّيَّات نِيَّة की जमा نِيَّات	إِنَّمَا: बस,सिर्फ (याद रखिये إِنَّ :बेशक) عَمَل की जमा أَعْمَال
आमाल का दारोमदार(और उनकी कुबूलियत का इंहिसार) नियतों पर है	

- क़यामत के दिन पहला फ़ैसला तीन लोगों का, उसमेंसे एक कुरआन का क़ारी और टीचर भी, जो दिखावे के लिये कुरआन पढ़ता था और पढ़ाता था, उसको नियत की ख़राबी की वजह से जहन्नम में डाल दिया जायेगा, क्यों कि ऐसे अमल को अल्लाह कुबूल नही करता जो इसके साथ साथ किसी और को भी दिखाने के लिये किया गया हो।
- इन्शा अल्लाह हम सिर्फ और सिर्फ अल्लाह को खुश करने के लिये कुरआन सीखेगें ताकि इसको सीख और समझ कर इस पर अमल करें।
- इसको इसलिये सीखें कि अल्लाह की ख़ातिर दूसरों को सिखाना है क्योंकि **99%** लोग कुरआन से दूर है, इसलिये सीखें कि कुरआन व सुन्नत की बूनियाद पर उम्मत को जोड़ सकें।

अहम नोट- नीचे तीन अल्फाज़ कुरआन में **2071** बार आये हैं उनको याद रखने के लिये इन्हीं अल्फ़ाज़ की मशहूर मिसालें भी दी गयी हैं।

إِنَّمَا : बस,सिर्फ,महज़	إِنَّ: बेशक	إِنْ : अगर
إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ	إِنَّ اللهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ	إِنْ شَاءَ اللهُ

ग्रामर: इस सबक़ में भी हम कुछ और हूरुफे जर के मआनी सीखेंगे,

हर्फ़: वह लफ़्ज़ या कलिमा है जो इस्म या फ़ेल को मिलाये: मसलन بِ،فِي، عَلٰى और اِلٰى वग़ैरा ।

साथ ... + بِ 510	में ... + فِي 1658	पर ... + عَلٰى 1423	तरफ़ ... + اِلٰى 736
with, in	In	On	to, toward
بِهٖ उसके साथ	فِيهِ उसमें	عَلَيْهِ उस पर	إِلَيْهِ उसकी तरफ़
بِهِمْ उनके साथ	فِيهِمْ उनमें	عَلَيْهِمْ उन सब पर	إِلَيْهِمْ उनकी तरफ़
بِكَ आपके साथ	فِيكَ आपमें	عَلَيْكَ आप पर	إِلَيْكَ आपकी तरफ़
بِكُمْ आप सब के साथ	فِيكُمْ आप सब में	عَلَيْكُمْ आप सब पर	إِلَيْكُمْ आप सबकी तरफ़
بِيَ मेरे साथ	فِيَّ मेरे में	عَلَيَّ मुझ पर	إِلَيَّ मेरी तरफ़
بِنَا हमारे साथ	فِيْنَا हम में	عَلَيْنَا हम पर	إِلَيْنَا हमारी तरफ़
بِهَا उस औरत के साथ	فِيهَا उस औरत में	عَلَيْهَا उस औरत पर	إِلَيْهَا उस औरत की तरफ़

नीचे दिये गये चार हुरुफ़ जर के मआनी याद रखने के लिये उनकी मिसालों को भी याद रखिये

بِ: بِسْمِ الله

فِيْ: فِيْ سَبِيلِ الله

عَلٰى: السَّلامُ عَلَيْكُمْ

إِلٰى: إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُون

यह याद रहे कि जब यह हर्फ़ जर फ़ेल, इस्म,फाइल,या इस्म मफ़ऊल के साथ आये तो उसके मानी बदल सकते हैं ।

सबक़-6: क़ुरआन आसान और उसका सीखना बेहतरीन काम

दुआ	तब्लीग़
तसव्वुर एहसास	
एहतिसाब	प्लान

ख़ाली ख़ानों में अरबी अल्फ़ाज़ का तर्जुमा लीखिये-

وَلَقَدْ	يَسَّرْنَا	الْقُرْاٰنَ	لِلذِّكْرِ

خَيْرُكُمْ	مَّنْ	تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ	وَعَلَّمَهٗ (بخاری)

إِنَّمَا الْأَعْمَالُ	بِالنِّيَّاتِ	(بخاری)

सवाल-**1:** क़ुरआन सीखने के वक़्त हमारी नीयत क्या हो?

जवाब:

सवाल-**2:** क्या क़ुरआन मुश्किल है? दलील दीजिये?

जवाब:

सवाल-**3:** हम क़ुरआन सीखने के लिए क्या कर सकते हैं?

जवाब:

सवाल-**4:** اِنَّ ،اِنْ और اِنَّمَا का फ़र्क़ बताइये?

जवाब:

अरबी क़वायद के सवालात बराए सबक़-6: क़ुरआन आसान और बेहतरीन काम उसका सीखना

सवाल-**1:** जिस तरह हर्फ़े जर"ب" का ज़मायर से मिलाकर जुमले बनाये गये हैं इसी तरह ख़ाली ख़ानों में,فِي और عَلٰى،إِلَي का इस्तेमाल करते हुए जुमले बनाईये ।

Person	Number	بِ	فِيْ	عَلٰى	اِلٰى
3rd गायब	sr. वाहिद	بِهٖ			
	pl. जमा	بِهِمْ			
2nd हाज़िर	sr. वाहिद	بِكَ			
	pl. जमा	بِكُمْ			
1st मुतकल्लिम	sr. वाहिद	بِيْ			
	pl. जमा dl. मस्ना	بِنَا			
गायब	sr. वाहिद मुअन्नस	بِهَا			

सवाल-**2:**अरबी अल्फ़ाज़ के टुकड़े हलकी लाईन मार कर बताईए,फ़िर उनका तर्जुमा कीजिये ।	
وَفِيْكُمْ	
فَعَلَيَّ	
وَاِلَيْكَ	
فِيْ كِتَابِكُمْ	
اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ	

सवाल-**3:**उर्दू से अरबी में तर्जुमा कीजिये ।	
उस पर और आप पर	
क़ुरआन की तरफ़	
सलाम हो आप सब पर	
क़ुरआन में	
आप पर और उस पर	

सबक़-7:
सीखने की दुआ और सीखने का तरीक़ा

सबक़ 7 के ख़त्म तक आप **50** अल्फाज़ पढ़ना सीखलेंगे जो क़ुरआन में **24,104** बार आये हैं

1. बार बार दुआ कीजिये

عِلْمًا	زِدْنِىْ		رَبِّ
इल्म में	ज़्यादा कर मुझे		ऐ मेरे रब
سوره طه – ١١٤	نِىْ	زِدْ	رَبّ: हर चीज़ का ख़्याल रखते हुये परवरिश करने वाला
	मुझे, मुझको	ज़्यादा कर	
ऐ मेरे रब मुझे ज़्यादा कर इल्म में(मेरे इल्म में इज़ाफ़ा फ़रमा)			

- इस दुआ का ज़िक्र सूरह ताहा में है । यह दुआ अल्ला तआला ने नबीﷺ को सिखाई बिल्खुसूस क़ुरआन को याद करने और सीखने के लिये, लिहाज़ा हम को चाहिये कि हम यह दुआ कसरत से पढ़ें,दिल से पढ़े । इस नियत से पढ़े कि अल्लाह हम को भी क़ुरआन की समझ अ़ता करे और उस पर अमल करना नसीब करे ।
- दुआ के साथ हमें चाहिये कि हम क़ुरआन को समझने की कोशिश में वक़्त लगायें,वरना सिर्फ दुआ करना और कोशिश की बिल्कुल परवाह न करना दुआ के साथ मज़ाक है, उस तालिब-ए-इल्म को याद कीजिये जो अल्लाह की बारगाह में रोता है अपने इम्तिहान की कामयाबी के लिये मगर न तो स्कूल जाता है और नही कोई किताब पढ़ता है,क्या वह अपनी दुआ में सन्जीदा है ?
- इल्म का हुसूल किस लिये? इल्म का हुसूल इसलिये कि इस पर अमल हो(इन्फ़िरादी भी और इज्तिमाई भी) और उसको फैलाया जाये ।
- एक शख्स जो कई दिन का भूका हो, कैसे माँगेगा ? या जिस शख्स का अगले दिन एक बड़ा आप्रेशन होने वाला हो, वह अल्लाह तआ़ला से कैसे माँगेगा? तड़प से, शिद्दत से,दिल से और बार-बार.. इसी अन्दाज़ में अल्लाह तआ़ला से माँगिये कि ऐ अल्लाह जिहालत की बीमारी से निजात दे(कि क़ुरआन ही समझ में नही आता) और इल्म अता फरमा(सब से अहम इल्म तो क़ुरआन का इल्म है) ।

2. क़लम (और सारे वसाइल) का इस्तेमाल कीजिये.

بِالْقَلَمِ		عَلَّمَ	الَّذِىْ 304
क़लम से (अलअलक़.4)		सिखाया	जिसने
الْقَلَم	بِ	عَلِمَ: जाना عَلَّمَ: सिखाया	اَلَّذِىْ:वह जो,जिस **304** बार اَلَّذِيْنَ जमा اَلَّذِي
क़लम	से		
जिसने क़लम से सिखाया			

- लिहाज़ा फौरन क़लम उठा लीजिये! इस से पहले भी आपने लाखों/ करोड़ों अल्फ़ाज़ लिखे होंगे, अब आप क़ुरआन और अरबी सीखने के लिये क़लम का इस्तेमाल करें, और इसे एक

आदत बना लें, अगर आप लिखने को मामूल बनायेंगे तो आप को तवज्जुह देनी पड़ेगी सुनने पर,समझने पर ।

- आज से अह्द कीजिये कि कुरआन सीखने के लिये रोज़ाना पाँच से दस मिनट के मआनी और ग्रामर के सेग़े लिखेंगे,सुस्ती और लापरवाही से नहीं बल्कि पूरे शौक़ और इख्लास के साथ ।
- कहाँ लिखेंगें? नोट बुक पर, तो उसे ले आइये, जो कुछ आप सीख रहे हैं इसका रिकार्ड रखें,अपनी ज़ाती लाइब्रेरी बनाना शुरु करें अपने लिखे हुये अल्फ़ाज़ की ।
- उस उम्मत मे सब से कम इल्म है तो वह कुरआन का, जिस की पहली वह्य पढ़ने के हुक्म से शुरु होती है! اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِىْ خَلَقَ (ऐ मुहम्मद ﷺ) अपने परवरदिगार का नाम लेकर पढ़ो जिसने पैदा किया ।

3. मुसाबिकत का जज़्बा रखिये!!!

عَمَلًا ؕ	43 اَحْسَنُ	46 اَيُّكُمْ	
अमल में	बेहतर होगा	कौन तुम में से	
عَمَل + اَعْمَال	حَسَن : अच्छा أحْسَن: ज़्यादा अच्छा	كُمْ	اَىُّ
		तुम में से	कौन
कौन तुम में से अमल में बेहतर होगा			

- नमाज़ पढ़ते हुये... कौन अच्छा? घरों में...कौन अच्छा ? आफ़िस में...कौन अच्छा? इन्फिरादी कामों (नमाज़,रोज़ा, ज़िक्र,) में कौन अच्छा? और इज्तिमाई कामों (उम्मत की इस्लाह,दावत,अम्र बिलमारुफ व नह्य अनिलमुन्कर,) में कौन अच्छा ?
- और यहाँ इस क्लास में कुरआन को सीखने में कौन अच्छा है? अल्लाह तआला देख रहा है! उसको बताने के लिये सब से अच्छा सीखने की कोशिश कीजिये।
- शैतान अंगारों पर लौट रहा होगा,क्यों? इसलिये कि आपने कुरआन सीखना शुरु कर दिया है, और वह अपनी पूरी कोशिश करेगा कि आप को रोके,याद रखिये शैतान बहुत तजर्बाकार है लेकिन आप को अल्लाह की मदद् हासिल है, फरिश्ते भी तैय्यार हैं, उनके कलम भी तैयार हैं, आप के आमाल को लिखने के लिये, क्या आप भी तैय्यार हैं ?

ग्रामर: गुज़िश्ता अस्बाक़ में जो हम नें 7 हुरुफ जर पढ़े थे इसके ज़िम्न में चन्द याद रखने वाली बातें ।

1. हर्फ़ जर का तर्जुमा जो फेल के साथ आये,अस्ल ज़बान और तर्जुमा की ज़बान पर मुन्हसिर होता है, इसलिये हर ज़बान का अपना क़ायदा होता है, मसलन

I believed in Allah: मैं अल्लाह पर ईमान लाया : آمَنْتُ بِاللهِ

यह तीनों जुम्ले तीन ज़बानों में एक ही बात को बयान कर रहे हैं मगर हर ज़बान में एक मुख़्तलिफ़ हुरुफे जर इस्तेमाल हुआ है।

2. कभी हर्फे जर की ज़रुरत अरबी में पड़ती है मगर दूसरी ज़बान में नही! जैसे اِغْفِرْلِىْ मुझे माफ़ करदे(इस में"لِ"का तर्जुमा नही है) يَدْخُلُوْنَ فِىْ دِيْنِ اللهِ का अंग्रेज़ी में तर्जुमा करते वक्त "में" का लफ़्ज़ नही होगा यानी **(entering the religion of Allah)**

وَارْحَمْنِىْ: और मुझ पर रहम फरमा(इसमें लफ़्ज़ "पर" को बढ़ाना पड़ेगा)

قِنِىْ عَذَابَكَ: तेरे अ़ज़ाब से बचा(लफ़्ज़"से" को बढ़ाना पड़ेगा)

3. हर्फ़े जर के बदलने से मआनी बदल जाते हैं-जैसे लकड़ी से मारा या लकड़ी को मारा **(get, get in, get out, get on, get off)**
4. हर्फ़े जर जब इस्म के साथ आये तो इस्म पर दो ज़ेर लगते हैं जैसे : فِىْ كِتَابٍ، إِلٰى بَيْتٍ
और अगर इस्म के साथ ال (वह ख़ास) हो तो एक ज़ेर लगता है, فِي الْكِتَابِ، إِلَى الْبَيْتِ، بِاللهِ ، لِلّٰهِ، مِنَ الشَّيْطٰنِ
कौनसा हर्फ़ जर कहाँ आना है,किस का तर्जुमा क्या है? यह सब तर्जुमों में मौजूद है, कुरआन से ज़्यादा से ज़्यादा मानूस होने की फ़िक्र कीजिये, इन्शाअल्लाह कोई मसला नही होगा ।

अस्माऐ इशारा **:(Demonstrative Pronouns)** हर ज़बान में किसी चीज़ की तरफ़ इशारा करने के लिये कुछ अल्फ़ाज़ होते हैं जैसे ऊर्दू में "यह" "यह सब" "वह सब"

यह चार अल्फ़ाज़ कुरआन पाक में **902** बार आये हैं, इन चार अल्फ़ाज़ को समझते हुये **TPI** के ज़रिये इस तरह प्रेक्टिस कीजिये:هٰذَا، هٰؤُلَآءِ कहते वक्त एक उँगली और चारो उँगलियों से नीचे किताबों की तरफ़ इशारा कीजिये,ذٰلِكَ، أُوْلٰٓئِكَ कहते वक्त एक उँगली और चारों से, मगर न दायें जानिब की तरफ जो कि هُوَ، هُمْ का है और न सामने की तरफ़ जो कि أَنْتَ، أَنْتُمْ, का है बल्कि दोनों के बीच में इशारा कीजिये **5** मिनट की यह प्रैक्ट्रिस आपको **902** बार आने वाले अल्फ़ाज़ को अच्छी तरह याद करवा देगी, इन्शा अल्लाह ।	यह	هٰذَا 225
	यह सब	هٰؤُلَآءِ 46
	वह	ذٰلِكَ 427
	वह सब	أُولٰٓئِكَ 204

दुआ	तब्लीग़
तसव्वुर एहसास	
एहतिसाब	प्लान

सबक-7: कुर्आन सीखने की दुआ और सीखने का तरीक़ा

1.बार-बार दुआ कीजिये-

رَبِّ زِدْنِىْ عِلْمًا ﴿١١٤﴾ (طه : ١١٤)

2. क़लम (और सारे वसाइल का) इस्तेमाल कीजिये-

الَّذِىْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ (العلق: ٤)

3. मुसाबिक़त का जज़्बा रखिये-

اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ (الملك: ٢)

सवाल-**1:** अल्लाह तआला ने इल्म की ज़ियादती वाली दुआ किसको सिखायी?

जवाब:

सवाल-**2:** इल्म में ज़ियादती की दुआ पढ़कर मुझे क्या क्या कोशिश करनी चाहिये?

जवाब:

सवाल-**3:** हर्फ़े जर के बदलने से माअना बदल जाते हैं,एक मिसाल दीजिये?

जवाब:

सवाल-**4:** क्या हर्फ़े जर का जवाब बदलता रहता है?

जवाब:

अरबी क़वायद के सवालात बराए सबक़-7: क़ुरआन सीखने की दुआ और सीखने का तरीक़ा

सवाल-**1:**

नीचे दिए गये अस्माये इशारा का उर्दू मे तर्जुमा कीजिये	
هٰؤُلآءِ	
ذٰلِكَ	
هٰذَا	
أُولٰـئِكَ	

अस्माये इशारा को मुनासिब अस्मा से जोड़िये,जैसा कि मिसाल दी गई,इसी तरह दोनो ख़ाने पुर कीजिये :		
هٰذَا	هٰذَا كِتَابٌ	
هٰؤُلآءِ	هٰؤُلآءِ مُسْلِمُوْنَ	
ذٰلِكَ		
أُولٰـئِكَ		

सवाल-**2:** अरबी अल्फ़ाज़ के टुकड़े हलकी लाईन मार कर बताईये,फ़िर उनका तर्जुमा कीजिये ।	
اِغْفِرْ لِىْ	
وَارْحَمْنِيْ	
اَلرَّحْمٰنُ عَلَّمَ الْقُرْآنَ	
وَمِنْكَ	
وَعَلَيْكُمْ	

सवाल-**3:**उर्दू से अरबी में तर्जुमा कीजिये ।	
सीखा और सिखाया	
क़लम से सीखा	
ज़्यादा कर मुझ को ईल्म में	
पस तुम सब	
और उनमें से	

सबक़ 8 के ख़त्म तक आप 54 अल्फाज़ पढ़ना सीखलेंगे जो क़ुरआन में 25,082 बार आये हैं

दुआ	तब्लीग़
तसव्वुर एहसास	
एहतिसाब	प्लान

सबक़ -8: सूरतुल असर

तआरुफ़: इस छोटी सूरत में इंसान को ख़सारे से बचने का यानी इस की नजात का फार्मूला दिया गया है ।

﴿أَعُوْذُبِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ﴾ ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ﴾

وَالْعَصْرِ ۙ﴿١﴾
ज़माने की क़सम
وَ के दो मआनी हैं: (1) और (2) क़सम है : عصر ज़माना (उर्दू की मिसाल:عصر حاضر)

- क़ुरआन की कई सूरतें क़सम से शुरु होती हैं जैसे،وَالسَّمَاء، وَاللَّيْل وَالنَّجْم، وَالضُّحَى، وَالْفَجْر वग़ैरा ।
- ज़माने की क़सम,इसलिये कि ज़माना गवाह है उस बात पर जो आगे आ रही है ।

لَفِيْ خُسْرٍ ۙ﴿٢﴾ (51)	الْاِنْسَانَ (65)	اِنَّ
ख़सारे में (है)	इंसान	बेशक
خُسْر / فِي / لَ		
ख़सारा, घाटा / में / अलबत्ता indeed	اِنْسَان की जमा نَاس	اِنَّ क़ुरआन में 1297 बार!!! आसान मिसाल:اِنَّ اللهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है ।
बेशक इंसान ख़सारे में है,		

- यहाँ तीन बार ताकीद की गयी है : (1) وَ : क़सम है (2) اِنَّ (3) لَ
- आगे चौथी ताकीद भी है اِلَّا की सूरत में, अगर 100 तालिब-ए- इल्म में से 95 फ़ेल हो जायें तो हम यह नही कहेंगे कि सारे कामयाब हो गये सवाये 95 के! अल्लाह तआला ने जब यह कहा कि इंसान ख़सारे में है तो फिर इस आयत को सुनते हुये हमें पूरी तरह कोशिश करनी चाहिये कि वह काम करें जो हमें बचाये।

الصّٰلِحٰتِ	وَعَمِلُوْا	اٰمَنُوْا	الَّذِيْنَ	اِلَّا (666)
नेक	और उन्होंने अमल किये	ईमान लाये	(उन के) जो	सिवाये
कौन सा अमल अल्लाह कुबूल करता है नेक या बुरा? इसी लिये सालिहात का मतलब:नेक	عَمِلُوْا:अमल किये	اٰمَنُوْا:ईमान लाये उर्दु:ایمان، مؤمن	صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ रास्ता उन लोगों का जिन पर तुने इनाम किया	لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ नही कोई माबूद सिवाये अल्लाह के
सिवाये उन लोगों के जो ईमान लाये और उन्होंने नेक अमल किये				

- ऐ अल्लाह हमें पुख्ता और सही अक़ीदा अ़ता फरमा! हमारा ईमान तो है मगर कैसा है? दिन में कामों के दर्मियान अल्लाह कितना याद रहता है ।

- आख़िरत पर, ग़ैब पर(ख़ास कर साथ रहने वाले दो फरिश्तों और शैतान जिन्न पर) ईमान कैसा है? तक़्दीर पर और किताब पर ईमान कैसा है? किताब पर सिर्फ़ ईमान की बात है या उससे तअल्लुक़ भी ?
- क़ुरआन में ईमानियात की तफ़्सील है, और वह ईमान को मज़बूत भी करती है,हदीस भी मदद करती है ।
- सिर्फ़ ईमान काफ़ी नही , उसके साथ अमल भी चाहिये,अमल में नमाज़, रोज़ा, ज़कात, अख़्लाक़,दावत,अम्रबिल्मारुफ व नह्य अनिलमुन्कर का क्या हाल है ?

بِالصَّبْرِ ﴿٣﴾	وَتَوَاصَوْا	بِالْحَقِّ ۙ 247	وَتَوَاصَوْا	
सब्र की	और एक दूसरे को वसीयत की	हक़ की	और एक दूसरे को वसीयत की	
صَبْر:साबित क़दमी, मुस्तक़िल मिज़ाजी,	تَدَارَسُوْا:एक दूसरे को पढ़ाया تَوَاصَوْا: एक दूसरे को वसीयत की	حَقّ:सच	تَوَاصَوْا एक दूसरे को वसीयत की	وَ और
और एक दूसरे को हक़ की वसीयत की और सब्र की वसीयत (तलक़ीन) की ।				

- सिर्फ ईमान लाना और अमले सालेह करना काफ़ी नहीं है बल्कि उसके साथ-साथ तवासी बिल्हक़ और तवासी बिस्सब्र भी ज़रुरी है, यह तसव्वुर ग़लत है कि अल्लाह का वली वह है जो किसी के लेने में है न देने में. लेने देने में न हो तो तवासी का काम कैसे होगा? क़ुरआन में सारी तफ़सील कि अंम्बिया ने किस तरह तवासी बिल्हक़ और तवासी बिस्सब्र किया, गोया ट्रेनिंग है इस काम की ।
- हक़ कहाँ मिलेगा? क़ुरआन व सुन्नत में, क़ुरआन ही समझ में न आये तो कैसे ज़हन में बैठेगा? और दूसरों को क्या बतायेंगे? हक़ मालूम हो जाये तो इंसान उस पर अमल करे और हक़ का साथ दे और हक़ का काम करने वालों का भी ।
- हम जब बेटे को कहते हैं "तालीम हासिल करो" तो हमारे पास पूरा प्लान होता है कि स्कूल जाओ, उसके बाद कालेज वग़ैरा,क्या हमारे पास तवासी बिल्हक़ का ऐसा तफ़सीली प्लान है ?
- यहाँ जमा का सेग़ा आया है कि " वह लोग जो यह काम करें" यह हमें इज्तिमाइयत का तसव्वुर देता है,इस्लाम में टीमवर्क चाहिये, अकेले से तवासी का काम मुअस्सिर नही होगा ।
- इन्फ़िरादी मक़सद क्या हो? इस्लाह और दावत हो, इज्तिमाई मक़्सद क्या हो? दावते इलल्लाह,शहादत अलन्नास,ऐलाये कलिमतुल्लाह ।
- एक अहम सूरत तवासी बिल्हक़ की : अपने साथी को चुन लीजिये और मुसलसल इस क्लास के लिये (एक दूसरे को) याद दिलाइये, हिम्मत् बढ़ाइये,सब्र की फ़ज़ीलत बताइये ।
- सब्र की तीन किस्में : नेकी पर सब्र करना, गुनाहों से बचने पर सब्र करना, मुश्किलात का सामना करने पर सब्र करना ।

ग्रामर: गुज़िश्ता अस्बाक़ में हमने हर्फ़े जर के मुतअल्लिक पढ़ा,इस सबक़ से हम फेल के मुतअल्लिक पढ़ेंगे,

फेल: वह कलिमा है जिससे किसी काम का करना या होना ज़ाहिर हो. मस्लन : فَتَحَ (उसने खोला) ذَهَبَ (वह गया) يَشْرَبُ (वह पीता है या पियेगा) वगैरा।

अरबी ज़बान में तकरीबन तमाम कलिमात (इस्म हों या फेल) तीन हूरुफ से बनते है जैसे: ف ع ل ، ن ص ر ، ض ر ب ،वगैरा

अरबी ज़बान में बुनियादी तौर पर दो ज़माने होते हैं,माज़ी और मुज़ारा, इस सबक़ में हम फेल माज़ी (जो काम हो चुका) के दिये गये छ: सेगो की TPI के ज़रिये प्रैक्टिस करेंगे,यह तरीका ज़ैल में दिया जा रहा है ।

- जब आप فَعَلَ (उसने किया) कहें तो सीधे हाथ की तशहहुद की उँगली से दायें जानिब इशारा करें गोया"वह शख्स" आप की दायें जानिब बैठा हुआ है, फिर जब् आप فَعَلُوْا (उन्हों ने किया) कहें तो सीधे हाथ की चारों उँगलियों से दायें जानिब इशारा करें ।
- जब आप فَعَلْتَ (आपने किया) कहें तो सीधे हाथ की तशह-हुद की उँगली से सामने की जानिब बैठे हूये शख्स की तरफ इशारा करें,फिर जब आप فَعَلْتُمْ (आप सब ने किया)कहें तो सीधे हाथ की चारों उँगलियों से सामने इशारा करें,अगर क्लास चल रही हो तो उस्ताद तालिब-ए-इल्म की तरफ़ और तालिब-ए-इल्म उस्ताद की तरफ़ इशारा करें ।
- जब आप فَعَلْتُ (मैंने किया) कहें तो सीधे हाथ की तशह-हुद की उँगली से खुद की जानिब इशारा करें,फिर जब فَعَلْنَا (हमने किया)कहें तो सीधे हाथ की चारों उँगलियों से खुद की जानिब इशारा करें ।

Person	No.	फेल माज़ी / **Past Tense**	
3rd	sr.	فَعَلَ	उसने किया
	pl.	فَعَلُوْا	उन सब ने किया
2nd	sr.	فَعَلْتَ	आपने किया
	pl.	فَعَلْتُمْ	आप सब ने किया
1st	sr.	فَعَلْتُ	मैंने किया
	dl., pl.	فَعَلْنَا	हमने किया

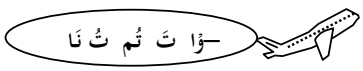

फ़ेल माज़ी के सेग़ों के **Fonts** को **italics** बना दिया गया है, काम हो गया इस लिए इसके अल्फाज़ झुका दिये गये हैं ।
फेल माज़ी (ग़ायब,हाज़िर,मुतकल्लिम के लिए वाहिद, मुसन्ना,जमा) के सेग़े अपनी मुख़्तलिफ़ हालतों में अपनें आख़िरी हुरूफ़ को बदलते रहते हैं,इन हुरूफ़ की तब्दीली से यह पता चलता है कि यह फेल वाहिद है या जमा,हाज़िर है या मुतकल्लिम वग़ैरा ।
इसी बात को आसानी से ज़हन नशीन कराने के लिए तस्वीरों से समझाने की कोशिश की गई है,अगर आप किसी रोड पर खड़े हों तो आपको जाने वाली कार, ट्रक या जीप का सिर्फ़ पिछला हिस्सा नज़र आता है,पिछले हिस्से को देख कर आप कह सकते हैं कि यह कौन सी चीज़ थी जो चली गयी,अगर आप रनवे पर खड़े हुए हों तो उड़ते हुए(जो चला गया या माज़ी हो गया हवाई जहाज़ का सिर्फ पिछला हिस्सा नज़र आएगा, जिसकी दुम पर यह तब्दीलियाँ (ـَ، وا، تَ، تُمْ، تُ، نَا) बताई गई हैं ।

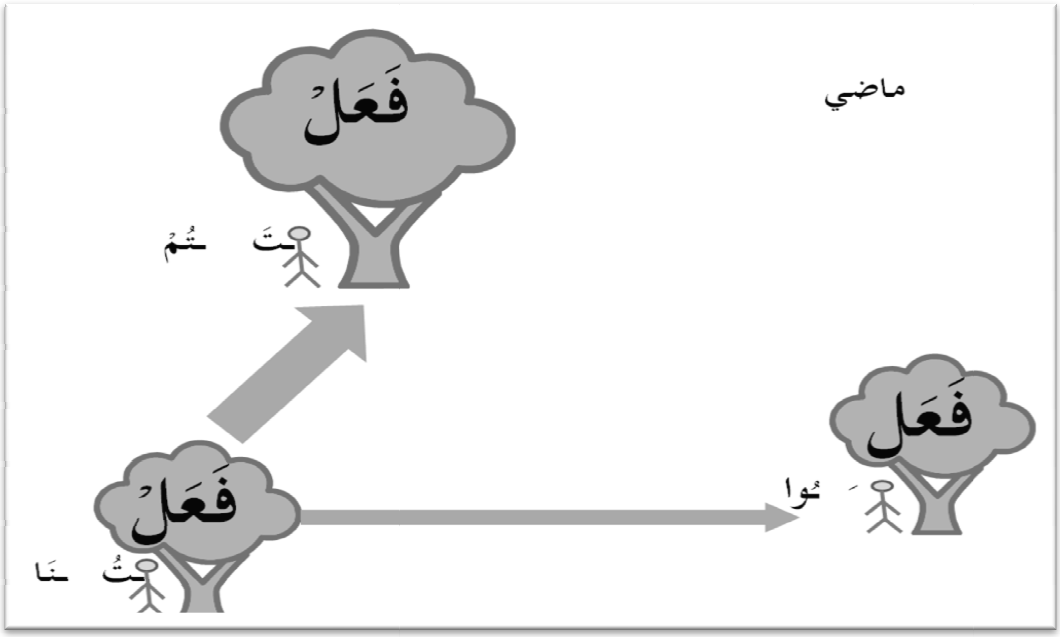

एक और मिसाल से भी आप इसको याद रख सकते हैं.फर्ज़ कीजिये किसी ने फल वाले दरख़्त लगाने का काम किया,अब वह दरख़्त (जो उसका फेल है) खूब उँचा हो चुका है करने वाला दरख़्त के साये में नीचे खड़ा है, तो पहले बड़ी चीज़ नज़र आयेगी (فَعَلَ) और बाद में वह जिसने किया उसका ज़िक्र,कई लोग करें तो पहले उनका काम (فَعَلَ) और बाद में उनकी निशानी "وا" यानी فَعَلُوا,इसी तरह अगर आपने यह काम किया तो فَعَلْتَ पहले फेल और उसके बाद اَنْتَ का "تَ" यानी فَعَلْتَ, आप सब करें तो पहले فعل और उसके बाद أَنْتُمْ का ،"تُمْ" यानी فَعَلْتُمْ, इसी तरह अगर मैनें किया तो पहले फेल और बाद में تُ यानी فَعَلْتُ, और आख़िरी में "हमने किया" فَعَلَ और نَحْنُ का نون यानी فَعَلْنَا|

अगर बात की नफ़ी करनी हो (मसलन मैंने नही किया, हम ने नही किया,... مَا : नही) तो हम कहेंगे : مَا فَعَلَ، مَا فَعَلُوْا مَا فَعَلْتَ، مَا فَعَلْتُمْ، مَا فَعَلْتُ، مَا فَعَلْنَا

दुआ	तब्लीग़
तसव्वुर एहसास	
एहतिसाब	प्लान

सबक़-8: सूरह-अल-अस्र

وَالْعَصْرِ ۙ ١	اِنَّ	الْاِنْسَانَ	لَفِیْ خُسْرٍ ۙ ٢

اِلَّا	الَّذِیْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ

وَتَوَاصَوْا	بِالْحَقِّ ۙ ٥	وَتَوَاصَوْا	بِالصَّبْرِ ۧ ٣

सवाल-**1:** ज़माने की क़सम क्या बताती है ?

जवाब:

सवाल-**2:** निजात की शरायत क्या हैं ?

जवाब:

सवाल-**3:** हक़ कहाँ पर मिलेगा ?

जवाब:

सवाल-**4:** सब्र की कितनी क़िस्में हैं ?

जवाब:

अरबी क़वायद के सवालात बराए सबक़-8: सूरह-अल-अस्र

सवाल-**1:**फ़ेले माज़ी के ख़ाने में فَعَلَ के छ: सेग़े तीन बार लिखिये, फ़िर उसका तर्जुमा कीजिये ।

Person	Number	फ़ेले माज़ी	फ़ेले माज़ी	फ़ेले माज़ी	तर्जुमा
3rd गायब	sr. वाहिद				
	pl. जमा				
2nd हाज़िर	sr. वाहिद				
	pl. जमा				
1st मुतकल्लिम	sr. वाहिद				
	pl. जमा dl. मस्ना				

सवाल-**2:** अरबी अल्फ़ाज़ के टुकड़े हलकी लाईन मार कर बताईये,फ़िर उनका तर्जुमा कीजिये ।	
مَنْ فَعَلَ هٰذَا	
وَفَعَلْتَ	
مِنْ رَّبِّكَ	
فِىْ دِيْنِهِمْ	
اِلٰى رَبِّكَ	

सवाल-**3:**उर्दू से अरबी में तर्जुमा कीजिये ।	
मैंने यह किया	
ख़सारे में	
ईमान लाये और अमल किये	
आपका दीन और मेरा दीन	
मेरा नाम और आपका नाम	

सबक़-9: सूरह-नसर

सबक़ 9 के ख़त्म तक आप 57 अल्फाज़ पढ़ना सीखलेंगे जो कुरआन में 26016बार आये हैं

दुआ	तब्लीग़
तसव्वुर एहसास	
एहतिसाब	प्लान

तआरुफ: हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि कुरआन मजीद की आख़िरी सूरत है (मुस्लिम,नसई) यानी इसके बाद कोई मूकम्मल सूरत रसूलुल्लाह ﷺ पर नाज़िल नही हुयी।

أَعُوْذُبِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴾

وَالْفَتْحُ ﴿١﴾	نَصْرُ اللهِ		جَآءَ	اِذَا 454
और फ़तह	अल्लाह की	म्दद	आ जाये	जब
الْفَتْحُ / जीत, कामयाबी और खोलना	وَ / और	نَصْر: मदद,नुसरत	جَاءَ:आया إِذَا جَاءَ: जब आये إِذَا के बाद माज़ी आये तो वह मुज़ारा हो जाता है।	إِذْ 239 ، إِذَا:जब
जब अल्लाह की मदद आ जाये और फ़तह (हो जाये)				

- नुस्रत से मुराद हक़ का ग़लबा होना है और फतह से मुराद फ़तह-ए-मक्का है,نَصْرُاللهِ कहा गया यानी सिर्फ अल्लाह ही की मदद् से काम होता है, जब मोमिनीन अल्लाह की राह में अपना सब कुछ वार देते हैं तब अल्लाह की मदद भी उतर आती है।
- दुआ: ऐ अल्लाह हमें भी नुसरत और फतह नसीब कर।
- एहतिसाब कीजिये कि हमने दीन की नुस्रत के लिये क्या किया है? नबी ﷺ ने तो अपनी ज़िन्दगी लगा दी,तब 23 साल के बाद यह आयत नाज़िल हुयी।
- आज,इस हफ़्ता,इस मुक़ाम पर क्या कर सकता हूँ, इसका इन्फिरादी और इज्तिमाई प्लान बनाइये ताकि नुसरत व फतह नसीब हो, दीन के काम के लिये वक़्त,पैसा,और सलाहियत लगाइये।

اَفْوَاجًا ﴿٢﴾	فِىْ دِيْنِ اللهِ			يَدْخُلُوْنَ	النَّاسَ 241	وَرَاَيْتَ	
फ़ौज दर फ़ौज	अल्लाह के दीन में			दाख़िल हो रहे हैं	लोग	और आप (स) देखें	
أَفْوَاج:जमा فَوْج:	اللهِ / अल्लाह के	دِيْنِ / दीन	فِىْ / में	دُخُوْل:अन्दर आना خُرُوْج:बाहर जाना	نَاس जमा: إِنْسَان	رَأَيْتَ / आप देखें	وَ / और
	دِيْن:ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा					और आप देखें	
और आप देखें लोग दाख़िल हो रहे हैं अल्लाह के दीन में फ़ौज दर फ़ौज,							

- दीन के दो मआनी हैं:(1) बदला(2) ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा
- फतह व नुसरत का क्या नतीजा बताया गया? लोगों का दीन में दाख़िला, क्या हम इसी नियत से फतह चाहते हैं कि लोगों की हिदायत के लिये रास्तें खुलें ? क्या हम मौजूदा हालात में लोगों की हिदायत के लिये दावत और इस्लाह का काम कर रहे हैं ?

وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ			رَبِّكَ		بِحَمْدِ		فَسَبِّحْ	
और उससे बख़्शिश तलब करें			अपने रब की		तारीफ़ के साथ		पस पाकी बयान करें	
هُ	اِسْتَغْفِرْ	وَ	كَ	رَبِّ	حَمْدِ	بِ	سَبِّحْ	فَ
उससे	बख़्शिश तलब कीजिये	और	आपके	रब की	तारीफ के	साथ	पाकी बयान कीजिये	प्स
ऊर्दू अल्फाज़:इस्तिग़फ़ार,मग़फिरत, ग़फ़ूर,मग़्फ़ूर			अपने रब की		حمد:खूबियों का बयान		تَسْبِيْح:नकाइस की कमी	
पस अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकी बयान करें और उससे बख़्शिश तलब करें								

- سُبْحٰنَ الله यानी अल्लाह पाक है, तमाम ऐबों से पाक है। यानी उसमें कोई नुक्स नहीं, कमज़ोरी नही, उसको किसी की मदद की ज़रुरत नहीं, और वह किसी के दबाव में नहीं, उसका न बेटा है न वह किसी की औलाद, वह अकेला है ज़ात में,सिफात में, हुकूक़ में और इख़्तियारात में।
- अगर हम सुब्हानल्लाह कहते हैं तो इसका मतलब यह भी है जिस हाल में उसने हम को रखा है यानी जो भी ज़िन्दगी के इम्तिहान का पर्चा हमें मिला है, वह बिल्कुल सही है, हमें अल्लाह से कोई शिकायत नही होनी चाहिये,सिर्फ़ यह दुआ करते रहना चाहिये कि अल्लाह हमारी ज़िन्दगी की आज़माइशों को आसान करे।
- अगर अल्लाह से शिकायत (سُبْحٰنَ الله की नफ्य)हो तो सच्ची तारीफ व शुक्र(हम्द) हो ही नहीं सकता, इसलिये अक्सर हम्द का कलिमा तस्बीह के बाद आया है,जैसा कि यहाँ पर है।
- हमारी तस्बीह और हमारी हम्द दोनो नाक़िस हैं,उस पर भी इस्तिग़फ़ार होना चाहिये. हमें जब भी कोई नेक काम की तौफीक़ मिले तो तसबीह,हम्द और इस्तिग़फार करना चाहिये।

كَانَ تَوَّابًا ﴿٣﴾			اِنَّهٗ	
बड़ा तौबा कुबूल करने वाला है			बेशक वह	
تَوَّابًا	كَانَ		هٗ	اِنَّ
बड़ा तौबा कुबूल करने वाला	है		वह	बेशक
تَابَ: पलटा,تَائِب पलटने वाला تَوَّاب:बार बार पलटने वाला	كَانَ:था अल्लाह के लिये यहाँ كَانَ का मतलब:है		إِنَّ के मआनी याद रखने اِنَّ اللهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ	
बेशक वह बड़ा तौबा कुबूल करने वाला है।				

- यह अज़ीमुश्शान ख़ुशख़बरी हम गुनहगारों के लिये,अल्लाह की रहमत से कभी भी हरगिज़ मायूस नही होना चाहिये। सच्ची तौबा कीजिये (यानी गुनाह का ऐतेराफ,उस पर शर्मिन्दगी और दोबारा न करने का पक्का इरादा करना), और कुबूलियत पर यक़ीन रखिये।
- मिसाल: अगर मैं बहुत भूका हूँ और कोई कहे कि मैं सैंकड़ो को खाना खिलाता हूँ तो क्या मैं फौरी नही पुछूँगा कि बराये मेहरबानी मुझे भी खाना दीजिये। यहाँ तौबा की कुबूलियत का ज़िक्र है तो फौरी तौबा कीजिये।

ग्रामर: फेल मुज़ारा में हाल और मुस्तक़बिल दोनो ज़माने शामिल होते हैं।
इस सबक़ में हम फेल मुज़ारा के दिये गये छ: सेगों की TPI के ज़रिये प्रैक्टिस करेंगे। यह तरीक़ा अगले सफ़हा पर दिया जा रहा है।

Person	No.	فِعْل مُضَارِع	तरजुमा
3rd	sr.	يَفْعَلُ	वह करता है / या करेगा
	pl.	يَفْعَلُوْنَ	वह सब करते हैं / करेंगे
2nd	sr.	تَفْعَلُ	आप करते हैं/ करेंगे
	pl.	تَفْعَلُوْنَ	आप सब करते हैं/ करेंगे
1st	sr.	أَفْعَلُ	मैं करता हुँ / करुँगा
	dl. pl.	نَفْعَلُ	हम करते हैं/करेंगे

फ़ेल मुज़ारा की TPI के साथ प्रेक्टिस कीजिये-जैसे आपने फेल माज़ी के वक़्त किया था, अल्बत्ता यह फ़र्क मल्हूज़ रखा जाये कि फ़ेल मुज़ारा की प्रेक्टिस करते वक़्त हाथ सर की सतह पर हो और आवाज़ ऊँची माज़ी की प्रेक्टिस करते वक्त हाथ सीने की सतह पर हो और आवाज़ धीमी हो।

फ़ेल माज़ी के झुके हुये fonts के बरख़िलाफ़ फेल मुज़ारे के सेग़ों को सिधा रखा गया (upright) है, गोया यह काम हो रहा है या होने वाला है।

फेल मुज़ारा के सेग़ो की ख़ासियत: फेल माज़ी के झुके हुये fonts के बर ख़िलाफ़ फेल मुज़ारे में अहम तबदीली सामने के अल्फ़ाज़ में होती है(सिवाये इख़्तिमामी कलिमात ون، --ان، --ىن के) इन तबदीली (ى، تَ، أَ، نَ) को उतरते हुये(गोया हाज़िर या मुस्तक़्बिल)जहाज़ की नोक पर बताया गया है,यह दोनों तस्वीरें मुब्तदेईन के ज़हन में इस बात को बैठाने के लिये दिखाई गयी हैं कि फेल माज़ी के सेगों की दुम बदलती रहती है और फेल मज़ारे के सेग़ों का मुँह।

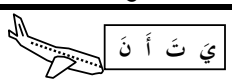

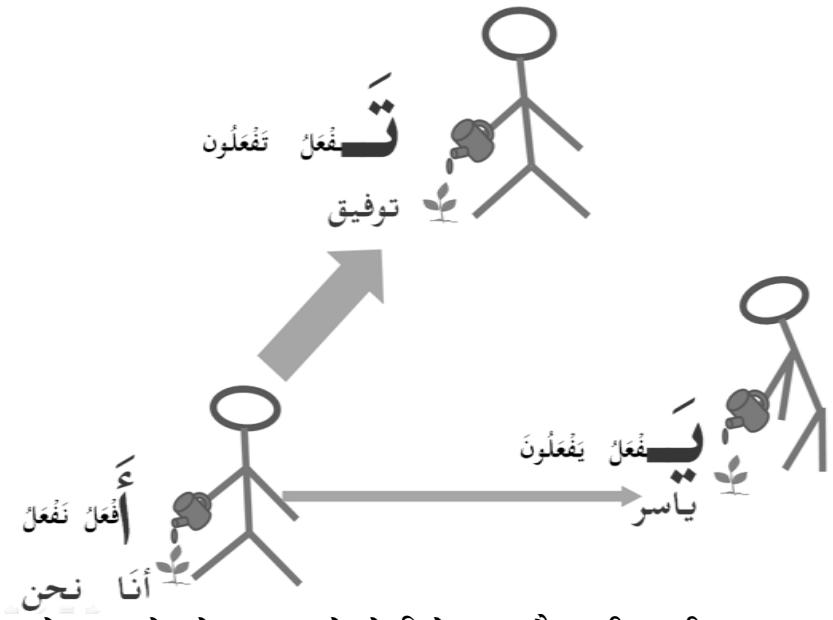

फेल मुज़ारे को याद रखने के लिये एक और तरीक़ा भी याद रखा जा सकता है। इसके लिये एक शख्स यासिर को अपने ज़हन में अपने दायें जानिब बैठाइये जो एक नन्हा सा पौधा लगा रहा है,(याद रखिये फ़ेल माज़ी के लिये हमने दरख़्त इस्तेमाल किया था,चूंकि वहाँ काम हो चुका था) छोटे से पौदे के मुकाबले में यासिर तो खूब बड़ा नज़र आयेगा, इसलिये यासिर की ياء को याद रखिये यानी यासिर يَفْعَلُ , कई यासिर जब एक जगह काम करें तो आवाज़े आयेंगी وون، وون की इसलिये उसके लिये सेग़ा होगा: يَفْعَلُوْن.

इसी तरह सामने तौफ़ीक़ साहब को याद रखिये जो काम कर रहे है यानी अभी पौदा लगा रहे हैं, तौफ़ीक़ के पौधे के सामने तौफ़ीक़ बड़ा नज़र आयेगा, इसलिये तौफ़ीक़ के تاء से تَفْعَلُ, कई तौफ़ीक़ हों तो تَفْعَلُوْن।

मैं أَنَا हूँ, इसलिये أَنَا के أ से أَفْعَلُ और نَحْنُ के نون से نَفْعَلُ, याद रखिये कि यह نَفْعَلُوْن नही,نون पहले ही आ चुका है, यह सिर्फ़ نَفْعَلُ है।

अगर बात की नफ़ी करनी हो तो हम कहेंगे: لَا يَفْعَلُ، لَا يَفْعَلُونَ، لَا تَفْعَلُ، لَا تَفْعَلُونَ، لَا أَفْعَلُ، لَا نَفْعَلُ कभी कभी مَا लफ़्ज़ भी इस्तेमाल किया जाता है।

सबक़ -9: सूरह-अन-नस्र

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۙ﴿۱﴾

وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِىْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۙ﴿۲﴾

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ

اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ﴿۳﴾ ع

सवाल-**1:** सूरह नस्र कब नाज़िल हुयी?
जवाब:

सवाल-**2:** तस्बीह और हम्द में क्या फ़र्क़ है?
जवाब:

सवाल-**3:** नुसरत का क्या मतलब है और फ़तह से मुराद कौन सी फ़तह है?
जवाब:

सवाल-**4:** सूरह नस्र से हमको क्या सबक़ मिलता है?
जवाब:

अरबी क़वायद के सवालात बराए सबक़-9: सूरह-अन-नस्र

सवाल-1:फ़ेले मुज़ारा के ख़ाने में يَفْعَلُ के छ: सेग़े तीन बार लिखिये,फ़िर उसका तर्जुमा कीजिये ।

Person	Number	फ़ेले मूज़ारा	फ़ेले मूज़ारा	फ़ेले मुज़ारा	तर्जुमा
3rd गायब	sr. वाहिद				
	pl. जमा				
2nd हाज़िर	sr. वाहिद				
	pl. जमा				
1st मुतकल्लिम	sr. वाहिद				
	pl. जमा dl. मस्ना				

सवाल-2: अरबी अल्फ़ाज़ के टुकड़े हलकी लाईन मार कर बताईये,फ़िर उनका तर्जुमा कीजिये ।	
مَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ	
إِنَّ اللهَ يَفْعَلُ	
اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ	
مَعَ كِتَابِهَا	
وَعَلَى اللهِ	

सवाल-3: उर्दू से अरबी में तर्जुमा कीजिये।	
उसने किया और मैने किया	
उन्होने किया और आपने किया	
वह कर रहा है और मैं कर रहा हूँ	
और हम कर रहे हैं	
मैं यह कर रहा हूँ	

सबक़ 10 के ख़त्म तक आप 59 अल्फाज़ पढ़ना सीखलेंगे जो क़ुरआन में 26448 बार आये हैं

दुआ	तब्लीग़
तसव्वुर एहसास	
एहतिसाब	प्लान

सबक़ -10- सूरह-अल- इख़्लास

तआरुफ़: यह बहुत छोटी मगर बहुत अहम सूरत है, नमाज़ में इसको सिर्फ़ इस नियत से मत पढ़िये कि छोटी सूरत है बल्कि इस की अहमियत को सामने रखते हुये पढ़िये:
(1) यह सूरह एक तिहाई क़ुरआन के बराबर है। (2) हमको किस की इबादत करनी चाहिये या माबूद कौन हो सकता है ? इसका बेहतरीन जवाब है। (3) इस सूरत को आख़िरी दो सूरतों के साथ हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद एक बार और मग़रिब और फ़ज्र के बाद तीन बार पढ़ना रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत है।

﴿أَعُوْذُبِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ﴾ ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ﴾

85 قُلْ	هُوَ	اللّٰهُ	اَحَدٌ (١) ج
कह दीजिये	वह	अल्लाह	एक है
قُلْ: क़ुरआन में सैकड़ों बार आया है।			أَحَدٌ: एक, अकेला
कह दीजिये वह अल्लाह एक है			

- अल्लाह की ज़ात में कोई शरीक नही, उसकी किसी से रिश्तेदारी नही।
- अल्लाह की सिफ़ात में कोई शरीक नहीं।मसलन कोई ग़ैब को नही जानता, कोई उसके जैसा सुन नही सकता,देख नही सकता, मदद नही कर सकता,वग़ैरा।
- अल्लाह के हुक़ूक़ में कोई शरीक नही,मसलन उसी की इबादत हो,उसी के सामने सर झुके,वग़ैरा।
- अल्लाह के इख़्तियारात में कोई शरीक नही, मसलन उसी का क़ानून चले,उसी का इख़्तियार है कि वह क़ानून बनाये हलाल व हराम का और जायज़ और नाजायज़ का।
- दुआ: ऐ अल्लाह मुझे सिर्फ़ तेरी इबादत की तौफ़ीक़ दे।
- एहतिसाब: कितनी बार नफ़्स की बात मानी (اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ) कितनी बार शैतान की बात मानी (لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ) क्यों मानी ? ख़राब दोस्त,ख़राब चीज़ें (इन्टरनेट,टी.वी....) ? तो फिर इन ख़राबियों को निकालने का प्लान हो और उन की जगह नेकियों को करने का एहतिमाम हो।
- قل यानी तबलीग़ कीजिये(हमें भी तबलीग़ करना है,हिक्मत से, बेहतरीन अन्दाज़ से करना है जैसा कि मुहम्मद ﷺ ने किया)

اَللّٰهُ	الصَّمَدُ (٢) ج
अलल्लाह	बेनियाज़
اَللّٰهُ का ज़ाती नाम अल्लाह है। बाक़ी सब इसके सिफ़ात वाले नाम हैं-जैसे اَلْكَرِيْمُ,اَلرَّحِيْمُ	الصَّمَدُ:बेनियाज़ सब उसके मोहताज हैं और वह किसी का मोहताज नहीं
अल्लाह बेनियाज़ है,	

- तसव्वुर कीजिये कि उस वक्त करोड़ों इंसान और बेशुमार मख़्लूक़ात उसी के करम से ज़िन्दा है और उसी से भीक माँग रहे हैं। इस तरह अल्लाह की अज़मत को ज़हन में रखते हुये इस आयत को पढ़िये।
- यह दुआ भी कर सकते हैं कि ऐ अल्लाह तू मेरी ज़रुरतों को पूरी करता रहा है, आगे भी कर। ऐ अल्लाह मुझे तू सिर्फ़ अपना मोहताज बना। किसी का मोहताज न रख।

وَلَمْ يُوْلَدْ ﴿٣﴾			لَمْ يَلِدْ ۙ (347)	
और न वह जना गया,			न उसने (किसी को) जना	
يُولَدْ	لَمْ	وَ	يَلِدْ	لَمْ
वह जना गया	नही	और	उसने जना	नही
يُولَدْ: वह जना गया **(passive voice)** इसी माद्दे से निकले अल्फाज़: والد، والده، والدين، اولاد، ولادت			يَلِد :उसने जना **(active voice)** لَمْ , **Did not** لَنْ **Will not**	
न उसने (किसी को) जना और न वह जना गया,(न उसकी कोई औलाद है और न वह किसी की औलाद)				

- इस आयत को पढ़ते हुये इस पैग़ाम को 150 करोड़ ईसाइयों तक पहुँचाने की ज़िम्मेदारी को महसूस कीजिये। जो यह ग़लत अक़ीदा रखते हैं कि ईसा ؑ अल्लाह के बेटे हैं। औलाद किस लिये? इंसान थक जाता है या अकेला महसूस करता है तो बच्चे उसको बहलाते हैं,इंसान बुढ़ा हो जाता है तो बच्चे उसका सहारा होते हैं, इंसान मर जाता है तो औलाद उसका वर्सा और उसका काम व नाम जारी रखती है, अल्लाह तआला इन सारी कमज़ोरियों से पाक है, वह हमेशा से हैं और हमेशा रहेगा, इसलिये उसको औलाद की क्या ज़रुरत ?

اَحَدٌ ﴿٤﴾	كُفُوًا	لَّهٗ		وَلَمْ يَكُنْ		
कोई	हमसर	उसका		और नहीं है		
قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ: (एक) सिर्फ अल्लाह के लिये وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ، كُفُوًا أَحَدٌ: कोई(मन्फ़ी मआनों में)	كُفُوًا:हम्सर,बराबरी का	هٗ	لَّ	يَكُنْ	لَمْ	وَ
		वह, उस का	का, के लिये	है	नहीं	और
और उसका कोई हमसर नहीं।						

<u>सूरतुल इख़्लास के अस्बाक़:</u>

एक सहाबी नमाज़ की हर रकात में सूरतुल इख़्लास पढ़ते फिर कोई और सूरत, रसूलुल्लाह ﷺ ने उनसे सवाल किया कि वह ऐसा क्यों करते हैं तो उन्होने कहा:"मुझे इस से बहुत मुहब्बत है" रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया कि" इस सूरत से तुम्हारी मुहब्बत ने तुम्हे जन्नत में दाख़िल कर दिया"

मुहब्बत से बार बार पढ़िये: मिसाल- हर इंसान अपने उन रिश्तेदारों का जो ख़ास शान के हों किसी बहाने ज़रुर ज़िक्र करेगा, और वह भी खूशी से, अल्लाह तो मेरा ख़ालिक़,राज़िक,रब ,और सबसे बढ़ कर मोहसिन है,वह हमसे **70** माँओं से ज़्यादा मुहब्बत करता है | फिर क्यों न हम उसका ज़िकर बार-बार करें,हमारा रब तो ऐसा है कि उसके जैसा ख़ालिक़, हाकिम,माबूद,कुद्रत वाला, माफ़ करने वाला और सारे बेहतरीन काम करने वाला कोई नही!न था,न रहेगा,और न होगा,कोशिश कीजिये कि पढ़ते वक़्त दिल मुहब्बत और अज़मत से भरा रहे, इसके साथ तौहीद के पैग़ाम को फैलाने के प्लान भी बनाइये |

ग्रामर: अम्र व नह्य की **TPI** के साथ प्रेक्टिस कीजिये,यह तरीक़ा भी नीचे टेबल में दिया गया है |

Imperative أَمْر	Prohibitive نَهْي	
اِفْعَلْ कर	لَا تَفْعَلْ मत कर	• اِفْعَلْ कहते वक़्त तशह-हुद की उँगली से सामने की तरफ़ इस तरह (हाथ को थोड़ा ऊपर से नीचे की तरफ़ लाते हुये) इशारा करें जैसे आप सामने वाले को हुक्म दे रहे हों।اِفعَلُوْا के लिये यही इशारा चारों उँगलियों से किया जाये	
اِفْعَلُوْا करो	لَا تَفْعَلُوْا मत करो	• لَاتَفْعَلْ कहते वक़्त तशह-हुद की उँगली से सामने की तरफ़ इस तरह (हाथ को बायें से दायें तरफ़ लाते हुये) इशारा करें गोया आप सामने वाले को मना कर रहे हों	لَا تَفعَلُوْا के लिये यही इशारा चारों उँगलियों से किया जाये	

जब फेल के साथ ज़माइर आते हैं तो मफ़ऊल बिही बन (objects) जाते हैं,एक फेल के साथ मिसाल देखिये |

Person	Number	ضَمَايِر مُتَّصِلَة (फेल के साथ)		خَلَقَ+.... उस(अल्लाह) पैदा किया	
3rd	sr.	ـهٗ	उसको	خَلَقَهٗ	पैदा किया उसको
	pl.	ـهُمْ	उनको	خَلَقَهُمْ	पैदा किया उनको
2nd	sr.	ـكَ	आपको	خَلَقَكَ	पैदा किया आपको
	pl.	ـكُمْ	आप सब को	خَلَقَكُمْ	पैदा किया आप सबको
1st	sr.	ـنِي	मुझको	خَلَقَنِي	पैदा किया मुझको
	dl., pl.	ـنَا	हमको	خَلَقَنَا	पैदा किया हमको

सबक़-10: सूरह-अल-इख़्लास

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ ١

اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ ٢

لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ ٣

وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۚ ٤

सवाल-**1:** सूरह इख़्लास की फ़ज़ीलत बयान कीजिये ?
जवाब:

सवाल-**2:** अल्लाह तआला के बारे में चार बातें बताईये जो इस सूरह में आई हैं ?
जवाब:

सवाल-**3:** सूरह इख़्लास से मुहब्बत किस तरह पैदा की जा सकती है ?
जवाब:

सवाल-**4:** सहाबी का वाक़ेआ बयान कीजिये,जिनको सूरह इख़्लास से मुहब्बत थी ?
जवाब:

अरबी क़वायद के सवालात बराए सबक़-10 सूरह-अल-इख़्लास

सवाल-**1:**ज़मायर को मुख़्तलिफ़ अफ़्आल से जोड़िये,फ़िर उसका तर्जुमा कीजिये,जैसे एक मिसाल दी गई है ।

Person	Number	ज़मायर	خَلَقَ	तर्जुमा
3rd गायब	sr. वाहिद	ـهٗ ـهٖ	خَلَقَهٗ	पैदा किया उसको
	pl. जमा	ـهُمْ ـهِم		
2nd हाज़िर	sr. वाहिद	ـكَ		
	pl. जमा	ـكُمْ		
1st मुतकल्लिम	sr. वाहिद	ـنِي		
	pl. जमा dl. मस्ना	ـنَا		

फ़ेले अम्र और फ़ेले नह्य के सेग़े दो बार लिखिये और फ़िर उनका तर्जुमा कीजिये,

امر ونهي	امر ونهي	امر ونهي	तर्जुमा
لَا تَفْعَلْ			
اِفْعَلُوْا			
لَا تَفْعَلُوْا			
اِفْعَلْ			

सवाल-**2:** अरबी अल्फ़ाज़ के टुकड़े हलकी लाईन मार कर बताईये,फ़िर उनका तर्जुमा कीजिये ।	
فَخَلَقَ	
لَاتَفْعَلْ هٰذَا	
فَعَلَهٗ	
وَافْعَلُوْاالْخَيْرَ	
وَمَافَعَلْتُهٗ	

सवाल-**3:**उर्दू से अरबी में तर्जुमा कीजिये।	
उसने पैदा किया मुझको	
वह नही करता	
और नही किया हमने	
पस मत कर यह	
जिसने पैदा किया तुम को	

सबक़ -11: सूरह-अल-फ़लक़

सबक़ 11 के ख़त्म तक आप 62 अल्फाज़ पढ़ना सीखलेंगे जो कुरआन में 28738 बार आये हैं

दुआ	तब्लीग़
तसव्वुर एहसास	
एहतिसाब	प्लान

तआरुफ: सूरतुल फ़लक और सूरतुन नास को مُعَوَّذَتَيْن (पनाह माँगने वाली दो सूरतें) कहा जाता है. हर नमाज़ के बाद सूरह अल इख़्लास को और مُعَوَّذَتَيْن को एक दफ़ा और फ़ज्र और मग़रिब के बाद 3,3 दफ़ा पढ़ना रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत है,हज़रत आयशा रजियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ जब अपने बिस्तर पर आराम फरमा होते तो अपने हाथों में फूँकते और مُعَوَّذَات पढ़ते और उनको अपने जिस्म पर फेर लेते (بخاری و مسلم) हर किस्म के शर,हसद और जादू से बचने की यह बेहतरीन सूरत है जो खुद अल्लाह ने हम को सिखाई है,हम में से कौन है जो शुरुर से बचना नही चाहता ? तो फिर हम सब को इन सूरतों के पढ़ने का,समझ कर पढ़ने का एहतिमाम करना चाहिये ।

﴿ أَعُوْذُبِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴾ ﴿ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴾

الْفَلَقِ ١	بِرَبِّ	اَعُوْذُ	قُلْ
सुबह के	रब की	मैं पनाह में आता हूँ	कह दीजिये
	رَبِّ / रब	بِ / की	
कह दीजिये, मैं पनाह में आता हूँ सुबह के रब की,			

- याद रहे कि इंसान,फित्नों के हमलों में,दिन और रात की आफ़ात में,बाज़ शर पसन्द इंसानो में,हासिदों में वायरसो में घिरा हुआ है।
- अल्लाह की अज़मत को महसूस करते हुये,उसकी रुबूबियत को,जिसने आज तक हिफ़ाज़त दी है,उसी से दरख़ास्त करें कि आज भी वह हमारी हिफ़ाज़त करे।
- قُلْ :यानी तबलीग़ कीजिये(हमें भी तबलीग़ करना है,हिकमत से,बेहतरीन अन्दाज़ से करना है जैसा कि मुहम्मद ﷺ ने किया)।
- رَبِّ الْفَلَق के अल्फ़ाज़ पर ग़ौर कीजिये,तसव्वुर का पूरा इस्तेमाल कीजिये,किस तरह वह सुबह को लेकर आता है? सूरज,रोशनी का डिज़ाइन,उसकी दूरी ज़मीन से,ज़मीन की ख़ास हिसाब से गर्दिश,ज़मीन के अतराफ़ ख़ास गिलाफ़ जो मुज़िर शुआओं को छान कर मुफीद शुआओं को जाने दे,और दीगर बेशुमार इन्तिज़ामात.....

خَلَقَ ٢	مَا (2155)	مِن شَرِّ (30)
उसने पैदा किया	(उसके) जो	शर से
خَلَق:पैदा किया خالق، مخلوق، خلقِ خدا	مَا के दो मआनी- नही और क्या,जो (what) مَا فِيْهِ:नही इस में(अरबी बोल चाल में) مَا دِيْنُكَ:क्या है तुम्हारा दीन ?	شَرِّ / से مِنْ / शर
उसके शर से जो उसने पैदा किया		

- शर के दो मआनी हैं:बुराई और तक्लीफ़, बाज़ बुराईयाँ देखने में अच्छी लगती हैं मगर उनका अन्जाम बहुत बुरा है इसलिये वह भी शर हैं।
- याद रखिये- शर से(उन चीज़ों के) जो उसने पैदा की,यानी मख़्लूक के शर से हम अल्लाह की पनाह में आते हैं ।
- मसलन अल्लाह ने इंसानो को अच्छे कामों के लिये पैदा किया मगर बाज़ इंसान शर फैलाते हैं, उनके शर से हम अल्लाह की पनाह में आते हैं ।
- इसी तरह सारी जानदार और बेजान चीज़ों के शर से हम अल्लाह की पनाह में आते हैं ।

وَقَبَ ٣	إِذَا	غَاسِقٍ	وَمِن شَرِّ
(वह) छा जाये	ज्ब	अन्धेरे के	और शर से
وَقَبَ:छा गया, إِذَا وَقَبَ: जब छा जाये إِذَا: के बाद माज़ी आये तो वह मुज़ारा हो जाता है।	إِذْ إِذَا:जब	غَاسِق: अन्धेरा	وَ مِنْ شَرِ और से शर
और अन्धेरे के शर से, जब वह छा जाये,			

- रोज़ाना हर **12** घन्टे के बाद रात आती है । रात में कमाने का वक्त ख़त्म हो जाता है । इंसान निस्बतन फारिग़ होता है । ख़ाली दिमाग़, शैतान का कारख़ाना बन सकता है ।
- रात के वकत अकसर ग़लत चीज़ें और शुरुर जैसे ख़राब टी.वी. प्रोग्राम. सिनेमा, क्लब, बदकारियाँ वगैरा ज़्यादा होती हैं ।
- दुश्मन के हमले रात के वक्त आसान होते हैं ।

فِى الْعُقَدِ ٤	النَّفّٰثٰتِ	وَمِن شَرِّ
गिरहों में	फूँके मारने वालियों	और शर से
الْعُقَدِ / فِى गिरहों / में	نَفَّاثَةِ:फूँक मारने वाली जादूगरनी,नफ़्से जादूगर نَفّٰثٰتِ (جمع): फूँक मारने वालियाँ जादूगरनियाँ,नोफुसे जादूगर	وَ مِنْ شَرِ और से शर
عَقْد:शादी की गिरह عُقْدَة:गिरह, عُقَد :गिरहो		और शर से
और गिरहों में फूँके मारने वालियों के शर से,		

- हमारे बाज़ ख़ानदानों में यह एक बड़ा मसला है, बच्चे से कहते हैं- यहाँ मत खाओ वहाँ मत पियो,कुछ भी हो जायेगा,यह सूरत उसका बेहतरीन इलाज है ।
- जादू एक सख़्त आज़माईश है,अच्छे ख़ासे लोगों का अक़ीदा डगमगाने लगता है और वह उसके इलाज की ख़ातिर ग़लत काम करने लगते हैं ।
- एक और भी किस्म के फूँकने वाले हैं जो रोज़ाना हममें से हर एक के सर पर रात में तीन गाँठ बाँध कर फूकते हैं, यानी शैतान ।

وَمِن شَرِّ	حَاسِدٍ	إِذَا حَسَدَ ﴿٥﴾
और शर से	हसद करने वाले के	जब वह हसद करे
और शर से हसद करने वाले के जब वह हसद करे।		

➢ हसद करने वाला हसद करते वक्त या तो आपका नाम ख़राब करेगा या नुक़्सान पहुँचाने की कोशिश करेगा,दुआ कीजिये कि अल्लाह हमें हसद करने से बचाये और हासिद के शर से भी।

<u>ग्रामर:</u> एक ज़माने में मुसलमान सारी दुनिया को इल्म, हुनर और टेक्नोलॉजी देने वाले होते थे, करने वाले होते थे। فَاعِل (करने वाला) कहते वक़्त सीधे हाथ से देने का इशारा कीजिये। लेने वाला हाथ वह है जिस की मदद की गई, उस पर असर पड़ा, मफ़ऊल (जिस पर असर पड़ा) कहते हुये लेने वाले हाथ का इशारा कीजिये। और आख़िर में फ़ेल (काम का नाम, काम करना) कहते वक़्त हाथ की मुट्ठी बना कर कुव्वत का इशारा कीजिये। ये सारे इशारे एक नये आदमी के लिये कुछ अजीब से लगते हैं। मगर याद रखने के लिये इन इशारों से काम लीजिये। ज़बान सीखने के लिये अपने सारे वजूद को **(Total physical interaction)** जितना इस्तेमाल करेंगे, उतना ही फ़ायदा होगा। इन्शा अल्लाह आप खुद देखेंगे कि इस तरीक़े से किस तरह आसानी से यह सारे अल्फाज़ याद हो जाते हैं।

فَاعِل: करने वाला (जमाः مَفْعُولُوْن، مَفْعُولِيْن) مَفْعُوْل: वह जिस पर असर पर असर पड़ा(जमाः مَفْعُولُوْن، مَفْعُولِيْن)

Verbal noun (vn). فِعْل करना,काम का नाम

فَعَلَ105 के उन **21** सेग़ो की (आख़िरी दो सेग़े वाहिद मुअन्नस के हैं) प्रेक्टिस कीजिये जो नीचे दिये गये हैं,इनमें दो असमा(فَاعِل और مَفْعُوْل) और मसदर यानी काम का नाम (فِعْل) भी दिया गया है,**105** का अदद यह बताने के लिये है कि कुरआन मजीद यह फेल अपनी मुख़्तलिफ़ सुरतों मे **105** बार आया है।

मुअन्नस के सेगों के लिये इशारा के तौर पर बायें हाथ का इस्तेमाल कीजिये। याद रखिये कि दायें हाथ का इस्तेमाल हमने मुज़क्कर के इशारों के लिये किया था,मक़्सद सिर्फ़ सिखाना है न कि मुअन्नस के साथ कोई इम्तियाज़ी सुलूक,यह भी याद रहे कि कुरआन में वाहिद मुअन्नस का सेग़ा दूसरे मुअन्नस के सेगों के मुक़ाबिले में ज़्यादा इस्तेमाल हुआ है।

هِيَ वह **she,** رَبُّهَا उसका रब **Her Lord,** فَعَلَتْ उस ने किया **She did,** تَفْعَلُ वह करती है **She does**

मुज़ारा की प्रैक्ट्रिस के वक्त सादगी की ख़ातिर अगर आप उसका तर्जुमा सिर्फ "वह करता है,वह करते हैं,आप करते हैं....." वग़ैरा करें तो आसान रहेगा,अलबत्ता पढ़ाते वक्त आप यह बात ज़रुर बतायें कि इनका तर्जुमा "वह करेगा,आप करेंगें....." भी होता है।

105 فَعَلَ (ف) فَعَلَ: उसने किया

فِعْل مَاضِي		فِعْل مُضَارِع		أمْر		نَهْي	
فَعَلَ	उसने किया	يَفْعَلُ	वह करता है/ करेगा	فَعَلَ ، يَفْعَلُ ، اِفْعَلْ			
فَعَلُوا	उन सब ने किया	يَفْعَلُوْنَ	वह करते हैं/करेंगे				
فَعَلْتَ	आपने किया	تَفْعَلُ	आप करते है/ करेंगे	اِفْعَلْ	कर	لَا تَفْعَلْ	मत कर
فَعَلْتُمْ	आप सब ने किया	تَفْعَلُوْنَ	आप सब करते हैं/ करेंगे	اِفْعَلُوْا	करो	لَا تَفْعَلُوْا	मत करो
فَعَلْتُ	मैने किया	أَفْعَلُ	मैं करता हूँ/करुँगा	فَاعِل :	करने वाला		
فَعَلْنَا	हमने किया	نَفْعَلُ	हम करते हैं/ करेंगे	مَفْعُوْل :	जिस पर असर पड़ा		
هِيَ فَعَلَتْ	उस औरत ने किया	هِيَ تَفْعَلُ	वह औरत करती है/करेगी	فِعْل:	करना, काम का नाम		

सबक़-11: सूरह-अल-फ़लक़

قُلْ	اَعُوْذُ	بِرَبِّ	الْفَلَقِ ١
مِن شَرِّ	مَا	خَلَقَ ٢	
وَمِن شَرِّ	غَاسِقٍ	إِذَا	وَقَبَ ٣
وَمِن شَرِّ	النَّفّٰثٰتِ	فِى الْعُقَدِ ٤	
وَمِن شَرِّ	حَاسِدٍ	اِذَا حَسَدَ ٥	

सवाल-**1:** फ़र्ज़ नमाज़ के बाद कौन सी सूरतें मुहम्मद ﷺ पढ़ते थे ?

जवाब:

सवाल-**2:** सोते वक़्त आप ﷺ यह सुरतें पढ़ कर क्या करते थे ?

जवाब:

सवाल-**3:** रोज़ाना रात में कौन हमारे सर पर गाँठ बाँध कर फूँकता है ?

जवाब:

सवाल-**4:** हसद का क्या मतलब है ?

जवाब:

अरबी क़वायद के सवालात बराए सबक़-11: सूरह-अल-फ़लक़

सवाल-1: फ़ेल का तर्जुमा दिया गया है उनकी अरबी बनाइये :

Person	Number अदद	तर्जुमा	فعل ماضي	तर्जुमा	فعل مضارع
3rd गायब	sr. वाहिद	उसने किया		वह करता है/करेगा	
	pl. जमा	उन सबने किया		वह करते हैं/करेंगे	
2nd हाज़िर	sr. वाहिद	आपने किया		आप करते हैं/करेंगे	
	pl. जमा	आप सबने किया		आप सब करते हैं/करेंगे	
1st मुतकल्लिम	sr. वाहिद	मैनें किया		मैं करता हूँ/करूँगा	
	pl. जमा dl.मस्ना	हम सबने किया		हम करते हैं/करेंगे	
गायब	sr. वाहिद मुअन्नस	उस औरत ने किया		वह औरत करती है/ करेगी	

सवाल-1: नीचे दिये गये टेबल्स सेग़ों से तर्जुमा के साथ पुर कीजिये-

उसने किया (ف) فَعَلَ 105

इस टेबल के अहम सेग़े: فَعَلَ ، يَفْعَلُ ، اِفْعَلْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
		वह करता है/करेगा يَفْعَلُ	उसने किया فَعَلَ
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
करने वाला:			
जिस पर असर पड़ा:			
करना:			

सवाल-2: अरबी अल्फ़ाज़ के टुकड़े हलकी लाईन मार कर बताईये, फ़िर उनका तर्जुमा कीजिये।	
وَمَافَعَلُوْهُ	
لَا يَفْعَلُوْن	
مَافَعَلْتُمْ	
فَافْعَلُوْا	
وَاسْتَغْفِرْهُ	

सवाल-3: उर्दू से अरबी में तर्जुमा कीजिये।	
नही किया मैने	
पस नही करता मैं	
आप नही करते	
हमने नही किया	
आप सबने नही किया	

सबक़ 12 के ख़त्म तक आप 70 अल्फाज़ पढ़ना सीखलेंगे जो क़ुरआन में 29615 बार आये हैं

दुआ	तब्लीग़
तसव्वुर एहसास	
एहतिसाब	प्लान

सबक़-12: सूरह-अन- नास

तआरुफ़: पिछले सबक़ के सूरतुल फ़लक के तआरुफ़ में इसका तआरुफ़ भी शामिल है।

﴿أَعُوْذُبِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ﴾ ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ﴾

بِرَبِّ النَّاسِ ﴿١﴾		اَعُوْذُ	قُلْ
लोगों के रब की		मैं पनाह में आता हूँ	कह दीजिये
النَّاسِ	بِرَبِّ	أَعُوذُ : أَفْعَلُ के वज़न पर	قل:यानी तब्लीग़ कीजिये
लोगों के	रब की		
कह दीजिये मैं पनाह में आता हूँ लोगों के रब की,			

- قل:यानी तब्लीग़ कीजिये(हमें भी तब्लीग़ करना है, हिकमत से,बेहतरीन अन्दाज़ से करना है जैसा कि मुहम्मद ﷺ ने किया)
- पहले अपने आपको ग़ैर महफ़ूज़ महसूस कीजिये। फित्नों के हमलों में,दिन और रात की आफ़ात में,बाज़ शर पसन्द इंसानो में, हासिदों में,वायरसों में....
- फिर उस रब की अज़मत को महसूस करते हुये, जिसने आज तक हिफ़ाज़त दी है,दरख़ास्त करें कि आज भी.....
- लोगो का रब:- इस ज़मीन पर मौजूद आबादी का तसव्वुर कीजिये,तकरीबन 700 करोड़। इन सबको परवरिश करने वाला और इन का ख़्याल रखने वाला। साथ ही आदम ؑ से आज तक के लोग,ओर क़्यामत तक आने वाले लोगों का रब।
- लोगों के लिये बारिश बरसाना,खेतियाँ उगाना,सूरज और ज़मीन की गर्दिश का,मौसमों का इन्तिज़ाम, सब कुछ करने वाला।
- सबका ख़्याल रखने वाला,हर एक के जिस्म के ज़र्रे-ज़र्रे की परवरिश करने वाला।

147	15
اِلٰهِ النَّاسِ ﴿٣﴾	مَلِكِ النَّاسِ ﴿٢﴾
लोगों के माबूद की,	लोगों के बादशाह की
إِلٰـه (जमा) آلِهَةٌ : माबूद	مَلِك : बादशाह,مَلَكَ[88] : फ़रिश्ता ,مَالِك:मालिक
लोगों के बादशाह की,लोगों के माबूद की,	

- तसव्वुर ... कि सच्चा बादशाह वही (जिस के इख़्तियार में सब कुछ है)
- ऐ अल्लाह! मुझ को तुझे सच्चा बादशाह मानने की तौफ़ीक दे,यानी तेरे ही क़ानून को मानने की तौफ़ीक़ दे।
- सच्चा माबूद भी वही है,मुसीबत के वक्त लोग उसी को पुकारते हैं,चाहे उसका कितना ही इन्कार करें।
- मुझको इस बात की तौफ़ीक दे कि तुझही को सच्चा माबूद मानूँ,तेरी ही परस्तिश और इताअत करुँ(शैतान और अपने नफ़्स की बात मानने से भी बचूँ।
- "क्या तुमने उस शख़्स को देखा जिसने अपने नफ्स को इलाह बना लिया हो

الْخَنَّاسِ ٤	الْوَسْوَاسِ	مِن شَرِّ
छुप कर हमला करने वाले के	वसवसा डालने वाले	शर से
الْخَنَّاسِ 1. ज़ाहिर होने के बाद छुपने वाला 2.पीछे हट जाने वाला	الْوَسْوَاسِ:बार-बार वसवसा डालने वाला وَسْوَسَه: पै-दर-पै ऐसे तरीक़े से किसी के दिल में कोई बुरी बात डाली जाये कि उसको महसूस भी न हो و س و س:माददा के चार हुरुफ	شَر: के दो मआनी=बूराइ,तकलीफ़
वसवसा डालने वाले, छुप-छुप कर हमला करने वाले के शर से,		

- शैतान के हमलों का एहसास कीजिये,और दिल से पनाह माँगिये ।
- अल्लाह के ज़िक्र की अहमियत को महसूस कीजिये,कि इससे शैतान रुसवा हो जाता है और दूर हट जाता है ।

النَّاسِ ٥	فِىْ صُدُوْرِ	يُوَسْوِسُ	الَّذِىْ
लोगों के	सीनों (दिलों) में	वसवसा डालता है	जो
اِنْسَان: की जमा نَاس	صُدُوْرِ: दिलों فِي: में صَدْر:सीना ,दिल صُدُوْر(जमा)		اَلَّذِىْ:क़ुरआन में304 बार الَّذِيْنَ 1080 बार
जो वसवसा डालता है लोगों के दिलों मे			

- शैतान कोशिश करता है सीने में वस्वसा डालने की ।
- सीना दिल का आँगन,चोर का हमला (सीना) से शुरु,अगर दिल अल्लाह के ज़िक्र से ज़िन्दा और मज़बूत हो तो शैतान पीछे हट जाता है. वरना इंसान उसके हमले की ज़द में आकर गुनाह करता है और दिल स्याह होने लगता है ।
- अल्लाह तआला ने क़ुरआन के बारे में सूरह यूनुस में फरमाया :شِفَآءٌ لِّمَا فِى الصُّدُوْرِ (शिफ़ा है उसके लिये जो सीनों में है).

وَالنَّاسِ ٦	مِنَ الْجِنَّةِ
और इंसानों (में से)	जिन्नों में से

النَّاسِ	وَ	الْجِنَّةِ	مِنَ
इंसान	और	जिन्नों	से
जिन्नों में से और इंसानों में से ।			

- हर एक के साथ एक जिन्न(शैतान)है,वह एक बदतरीन बदमाश दुश्मन की तरह मुसलसल हमले करने की कोशिश में है,अपने जिन्न की मौजूदगी का एहसास रखिये।
- इंसानी शयातीन कौन? हर वह दोस्त या ग्रूप जहाँ इस्लाम के बारे मे शुकूक़ वाली या गुनाहों पर उकसाने की बात होती हो,वह शैतानों की मजलिस है । क्या हमारा मीडिया ,टी.वी.,

इन्टरनेट,अख़बारात और रिसाले इनसे भरे हुये नही ? ऐसे इंसानो से भी अल्लाह की पनाह माँगनी चाहिये,इनसे होशियार रहना चाहिये ।

- दुआ करने के साथ-साथ ऐसे माहौल को साफ़ करने की इंफ़िरादी और इज्तिमाई कोशिश भी करनी चाहिये ।

ग्रामर: नीचे दिये गये **21** अहम सेगों की प्रेक्टिस कीजिये । आख़िरी दो सेग़े वाहिद मुअन्नस के हैं । **29** का अदद यह बताने के लिये है कि क़ुरआन मजीद में यह फ़ेल अपनी मुख़्तलिफ़ सूरतों में **29** बार आया है । कौसैन का ف फेल की क़िस्म (باب فَتَحَ) को बताता है ।

29 فَتَحَ (ف) — उसने खोला : فَتَحَ

فِعْل مَاضِي		فِعْل مُضَارِع			
فَتَحَ	उसने खोला	يَفْتَحُ	वह खोलता है/ खोलेगा	इस टेबल को अहम सेग़े: فَتَحَ ، يَفْتَحُ ، اِفْتَحْ	
فَتَحُوْا	उन्होने खोला	يَفْتَحُوْنَ	वस सब खोलते हैं/खोलेंगे	أمر	نَهْي
فَتَحْتَ	आपने खोला	تَفْتَحُ	आप खोलते है/ खोलेंगे	اِفْتَحْ खोल!	لَا تَفْتَحْ मत खोल!
فَتَحْتُمْ	आप सब ने खोला	تَفْتَحُوْنَ	आप सब खोलते है/खोलेंगे	اِفْتَحُوْا खोलो!	لَا تَفْتَحُوْا मत खोलो!
فَتَحْتُ	मैंने खोला	أَفْتَحُ	मैं खोलता हूँ /खोलूँगा	فَاتِح: खोलने वाला	
فَتَحْنَا	हमने खोला	نَفْتَحُ	हम खोलते हैं/ खोलेंगे	مَفْتُوح : जिसको खोला गया	
فَتَحَتْ	उस औरत ने खोला	تَفْتَحُ	वह खोलती है/ खोलेगी	فَتْح : खोलना	

346 جَعَلَ (ف) — उसने बनाया : جَعَلَ

فِعْل مَاضِي		فِعْل مُضَارِع			
جَعَلَ	उसने बनाया	يَجْعَلُ	वह बनाता है/बनायेगा	इस टेबल के अहम सेग़े: جَعَلَ، يَجْعَلُ، اِجْعَلْ	
جَعَلُوْا	उन्होने बनाया	يَجْعَلُوْنَ	वह सब बनाते हैं/ बनायेंगे	أمر	نَهْي
جَعَلْتَ	आपने बनाया	تَجْعَلُ	आप बनाते हैं/ बनायेंगे	اِجْعَلْ बना!	لَا تَجْعَلْ मत बना!
جَعَلْتُمْ	आप सब ने बनाया	تَجْعَلُوْنَ	आप सब बनाते हैं/बनायेंगे	اِجْعَلُوْا बनाओ!	لَا تَجْعَلُوْا मत बनाओ!
جَعَلْتُ	मैंने बनाया	أَجْعَلُ	मै बनाता हूँ/ बनाऊँगा	جَاعِل: बनाने वाला	
جَعَلْنَا	हमने बनाया	نَجْعَلُ	हम बनाते हैं/बनायेंगे	مَجْعُوْل: जिसको बनाया गया	
جَعَلَتْ	उस औरत ने बनाया	تَجْعَلُ	वह बनाती है/बनायेगी	جَعْل: बनाना	

सबक़-12: सूरह-अन-नास

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ﴿١﴾ مَلِكِ النَّاسِ ﴿٢﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ﴿٣﴾

مِن شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ﴿٤﴾

الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ النَّاسِ ﴿٥﴾

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ﴿٦﴾

सवाल-**1:** रब के मआनी को मिसालों से समझाइये ?

जवाब:

सवाल-**2:** शर के क्या मआनी हैं ?

जवाब:

सवाल-**3:** शैतान कब वसवसा डालता है ?

जवाब:

सवाल-**4:** इंसानी शैतान किस तरह की बातें करते हैं ?

जवाब:

अरबी क़वायद के सवालात बराए सबक़-12: सूरह-अन-नास

सवाल-1: नीचे दिए गये टेबल्स सेग़ों से तर्जुमा के साथ पुर कीजिये ।

उसने खोला (ف) فَتَحَ 29

इस टेबल के अहम सेग़े: فَتَحَ ، يَفْتَحُ ، اِفْتَحْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
		वह खोलता है/खोलेगा يَفْتَحُ	उसने खोला فَتَحَ
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
खोलने वाला:			
जिसको खोला गया:			
खोलना:			

उसने बनाया (ف) جَعَلَ 346

इस टेबल के अहम सेग़े: جَعَلَ ، يَجْعَلُ ، اِجْعَلْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
		वह बनाता है/बनायेगा يَجْعَلُ	उसने बनाया جَعَلَ
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
बनाने वाला:			
जिसको बनाया गया:			
बनाना:			

सवाल-2: अरबी अल्फ़ाज़ के टुकड़े हलकी लाईन मार कर बताईये, फ़िर उनका तर्जुमा कीजिये ।	
جَعَلْنَاكُمْ	
جَعَلْنَا	
وَاجْعَلْهُ	
تَفْتَحُوْنَ	
يَفْتَحُ	

सवाल-3: उर्दू से अरबी में तर्जुमा कीजिये ।	
हमने बनाया उसको	
पस बना दिया उनको	
वह बनाता है तुमको	
तुम बनाते हो उसको	
हमने खोला	

सबक़ 13 के ख़त्म तक आप 76 अल्फाज़ पढ़ना सीखलेंगे जो कुरआन में 30756 बार आये हैं

दुआ	तब्लीग़
तसव्वुर एहसास	
एहतिसाब	प्लान

सबक़-13: सूरह-अल्-काफ़िरुन

तआरुफ़: यह सूरह मक्का में उस वक्त नाज़िल हुई जब मक्का के मुशरिकीन ने यह देखा कि इस्लाम फैलता जा रहा है और उनका दीन कमज़ोर होता जा रहा है,उन्होने इस फैलाव को रोकने के लिये आप ﷺ को यह पेशकश की कि एक साल मुशरिकीन सिर्फ एक खुदा की इबादत करेंगें और दूसरे साल आप ﷺ बुतों की भी इबादत करें। अल्लाह तआला ने यहाँ इसका बिल्कुल साफ़ जवाब दे दिया।

- फ़ज्र और मग़रिब की सुन्नतों में रसूलुल्लाह ﷺ सूरह अल काफ़िरुन और सूरह अल इख़्लास पढ़ा करते थे। (مسند أحمد، ترمذي، نسائي، ابن ماجه)
- अल्लाह के रसूल ﷺ ने बाज़ सहाबा को फ़रमाया:"रात को सोते वक्त यह सूरत पढ़कर सोओगे तो शिर्क से बरी करार पाओगे (अबूदाऊद हदीस नम्बर : 5050)

﴿ أَعُوْذُبِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴾ ﴿ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴾

153

الْكٰفِرُوْنَ ﴿١﴾	يٰٓاَيُّهَا	قُلْ
काफ़िरो !	ऐ	कह दीजिये
كَافِر से كَفَرَ : فاعِل से فَعَلَ كَافِر:इंकार करने वाला كَافِرُوْن،، كَافِرِيْن: इंकार करने वाले	يَا أَيُّهَا ، أَيُّهَا يَا، :ऐ	قل: यानी तब्लीग़ कीजिये बेहतरीन अन्दाज़ से
कह दीजिये - ऐ काफ़िरो!		

- हर ग़ैर मुस्लिम काफिर नही होता! सिर्फ वही जो बात पहुँचने के बाद इनकार करे,कुरआन ने आम ग़ैर मुस्लिमों के लिये को भी يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ कह कर पुकारा है।
- जब आप छोटे थे और आप के वालिद आपकी किसी बहन या भाई पर गुस्सा होते थे,तो आप सब बाक़ी बहन,भाई चौकस हो जाते थे बल्कि कोशिश करते थे अपने वालिद को खुश करें,यहाँ अल्लाह काफ़िरों से सख़्त नाराज़ है। हमें फ़ौरन चौकस हो जाना चाहिये और यह देखना चाहिये कि हमारी किसी बात से अल्लाह नाराज़ तो नही।
- काफ़िरों का अस्ल मसअला क्या था ? वह अपने नफ़्स,अपनी अना,माल,रुत्बा,रिवायत वग़ैरा की वजह से सच को जानते हुये भी इंकार करते थे।
- दुआ करें कि ऐ अल्लाह मैं अपनी अना की वजह से सच को मुस्तरद् न करूँ,अपनी अना,ख़्वाहिश और किब्र को कभी बीच में न आने दूँ।
- एहतिसाब:कितनी दफा मैं सच को ठुकराता हूँ ? या फौरी कुबूल नहीं करता ?
- प्लान बनाइये: इस्तिगफ़ार,अल्लाह की तारीफ़ और बड़ाई को बयान करने का,खुद की तरबियत करने का।
- तब्लीग़ कीजिये:लोगों को बताइये,अना और रिवायत को मानने के नुक़सानात।

تَعۡبُدُوۡنَ ﴿٢﴾	مَا	لَآ اَعۡبُدُ	
तुम इबादत करते हो	जिसकी	नहीं मैं इबादत करता	
تَعۡبُدُوۡنَ: (تَفۡعُلُوۡنَ के वज़न पर)	مَا के दो मआनी:नहीं और (What) مَا فِيۡه:नही इसमें (अरबी बोल चाल का मशहूर जुम्ला) مَا دِيۡنُكَ؟:क्या है तुम्हारा दीन?	اَعۡبُدُ मैं इबादत करता	لَآ नही
		नही मैं इबादत करता	
मैं इबादत नहीं करता जिस की तुम इबादत करते हो।			

- अक़ीदे के मामले में कोई मसालिहत नहीं,ईबादत के तीन मआनी है **(1)** पूजा व परस्तिश. **(2)** इताअत व फरमाँ बरदारी. **(3)** ग़ुलामी तीनों मआनी में सिर्फ़ अल्लाह ही की इबादत होनी चाहिये।
- आज के काफ़िर:इस्लाम को खूब बदनाम करने की कोशिश कर रहे हैं तो आज भी मुस्लिम परेशान हैं! ऐसे माहौल में पूरे ईमान व यकीन के साथ और उस दीन पर अल्लाह का शुक्र अदा करते हुये,ज़र्रा बराबर भी बगैर एहसास कमतरी के बगैर इस्लाम पर अमल कीजिये, मुख़ालिफीन को इस तरह देखिये जैसे आप अन्धे या ज़हर खाने वाले को देखते हैं।

اَعۡبُدُ ﴿٣﴾	مَآ	عٰبِدُوۡنَ	وَلَآ اَنۡتُمۡ		
मैं इबादत करता हूँ	जिस की	इबादत करने वाले हो	और न तुम		
اَعۡبُدُ: (أَفۡعُلُ के वज़न पर	مَا के दो मआना:नहीं और (What) مَا فِيه:नही इसमें(अरबी बोल चाल का मशहूर जुम्ला) مَا دِيۡنُكَ؟:क्या है तुम्हारा दीन कब्र का दूसरा सवाल?	عَابِد: इबादत करने वाला عَابِدُوۡن، عَابِدِيۡن:इबादत करने वाले عَبۡد:गुलाम(عَبَدَ और عَابِد अलग)	اَنۡتُمۡ तुम	لَآ न	وَ और
और न तुम! इबादत करने वाले हो उसकी जिसकी मैं इबादत करता हूँ,					

यानी यह ग़लत फ़हमी में न रहना कि तुम अल्लाह की इबादत करने वाले हो,शिर्क के साथ अल्लाह की इबादत मक़्बूल नही।

सारे मज़ाहिब एक नही हो सकते, वह इबादत जिसमें शिर्क की मिलावट हो अल्लाह को हरगिज़ कुबूल नही।

عَبَدۡتُّمۡ ﴿٤﴾	مَّا	عَابِدٌ	وَلَآ اَنَا		
तुम ने इबादत की	जिसकी	इबादत करने वाला	और न मैं		
عَبَدۡتُّمۡ: (فَعَلۡتُمۡ के वज़न पर)		عَابِدٌ: (फाइल के वज़न पर)	اَنَا मैं	لَآ न	وَ और
और न मैं इबादत करने वाला हूँ जिसकी तुम ने इबादत की					

शिद्दत से इन्कार कि तुम्हारे माबूदों की इबादत:

- न अब करता हूँ (لَا أَعْبُدُ) और न मुस्तक़बिल में करूँगा وَلَآ اَنَا عَابِدٌ
- न तुम्हारे मौजूदा माबूदों की इबादत करूँगा (مَا تَعْبُدُوْنَ) और न माज़ी के माबूदों की (مَا عَبَدْتُّمْ)

وَلَآ اَنْتُمْ	عٰبِدُوْنَ	مَآ	اَعْبُدُ ٥
और न तुम	इबादत करने वाले	जिसकी	मैं इबादत करता हूँ
और न तुम इबादत करने वाले जिसकी मैं इबादत करता हूँ			

- दलाइल आजाने के बावजूद,तुम्हारी हटधरमी के बिना पर तुम से उम्मीद नहीं कि तुम सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत करोगे।

لَكُمْ	دِيْنُكُمْ	وَلِيَ	دِيْنِ ٦ ع
तुम्हारे लिये	तुम्हारा दीन	और मेरे लिये	मेरा दीन
तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन मेरे लिये मेरा दीन।			

- मतलब यह नही कि सारे मज़हब बराबर हैं।
- इसका मतलब यह भी नही है कि हमें तबलीग़ रोक देनी चाहिये, क्या मुहम्मद ﷺ ने वह्य आने के बाद तबलीग़ छोड़ दी ? बिल्कुल नहीं, यहाँ बात सिर्फ मसालिहत (Compromise) की पेशकश के जवाब में कही जा रही है।
- क्या मैं वाकई इस दीन की क़द्र करता हूँ ? क्या मैं इस पर अमल करने और इसको पहुँचाने की कोशिश करता हूँ ?
- इस सूरत को ज़िन्दगी में लाइये,यानी इसके पैग़ाम पर अमल कीजिये।

ग्रामर: नीचे दिये गये 21अहम सेग़ों की प्रेक्टिस कीजिये ,इससे पहले आपने فَتَحَ، يَفْتَحُ، اِفْتَحْ (यानी बाब فَتَحَ ف) के अफ़आल सीखे,यह बाब نَصَرَ (ن) है ,बुनियादी गरदान वही فَعَلَ की है, फर्क़ सिर्फ़ ज़बर,ज़ेर पेश का है, यहाँ نَصَرَ، يَنْصُرُ، اِنْصُرْ के बजाये نَصَرَ، يَنْصُرُ، اُنْصُرْ है, यानी ص पर ज़बर के बजाये पेश है, अरबी ज़बान में अफ़आल ज़्यादा तर इसी वज़न पर आते हैं।

उसने मदद की — نَصَرَ (ن) [94]

इस टेबल के अहम सेग़े نَصَرَ، يَنْصُرُ، اُنْصُرْ		فِعْل مُضَارِع		فِعْل مَاضِي	
		वह मदद करता है/करेगा	يَنْصُرُ	उसने मदद की	نَصَرَ
نَهْي	أمْر	वह सब मदद करते हैं/ करेंगे	يَنْصُرُوْنَ	उन सब ने मदद की	نَصَرُوْا
मत मदद कर! لَا تَنْصُرْ	मदद कर! اُنْصُرْ	आप मदद करते हैं/करेंगे	تَنْصُرُ	आपने मदद की	نَصَرْتَ
मत मदद करो! لَا تَنْصُرُوْا	मदद करो! اُنْصُرُوْا	आप सब मदद करते हैं/करेंगे	تَنْصُرُوْنَ	आप सब ने मदद की	نَصَرْتُمْ
मदद की गई	نَاصِر:	मैं मदद करता हूँ/करूँगा	أَنْصُرُ	मैने मदद की	نَصَرْتُ
जिस की मदद की गई	مَنْصُوْر:	हम मदद करते हैं/करेंगे	نَنْصُرُ	हमने मदद की	نَصَرْنَا
मदद करना	نَصْر :	वह मदद करती है/ करेगी	تَنْصُرُ	उस औरत ने मदद की	نَصَرَتْ

248 خَلَقَ (ن) उसने पैदा किया

فِعْل مَاضِي	فِعْل مُضَارِع		أمر	نَهْي	इस टेबल के अहम सेग़े : خَلَقَ، يَخْلُقُ، اُخْلُقْ
خَلَقَ उसने पैदा किया	يَخْلُقُ	वह पैदा करता है/करेगा			
خَلَقُوا उन सब ने पैदा किया	يَخْلُقُونَ	वह सब पैदा करते हैं/करेगें			
خَلَقْتَ आपने पैदा किया	تَخْلُقُ	आप पैदा करते हैं/करेंगे	اُخْلُقْ पैदा कर!	لَا تَخْلُقْ मत पैदा कर!	
خَلَقْتُمْ आप सब ने पैदा किया	تَخْلُقُونَ	आप सब पैदा करते हैं/करेंगे	اُخْلُقُوْا पैदा करो!	لَا تَخْلُقُوْا मत पैदा करो!	
خَلَقْتُ मैंने पैदा किया	أَخْلُقُ	मैं पैदा करता हूँ/करुगाँ			خَالِق : पैदा करने वाला
خَلَقْنَا हमने पैदा किया	نَخْلُقُ	हम पैदा करते हैं/करेंगे			مَخْلُوق: जिसको पैदा किया गया
خَلَقَتْ उस औरत ने पैदा किया	تَخْلُقُ	वह औरत पैदा करती है/ करेगी			خَلْق : पैदा करना

163 ذَكَرَ (ن) उसने याद किया

فِعْل مَاضِي	فِعْل مُضَارِع		أمر	نَهْي	इस टेबल के अहम सेग़े : ذَكَرَ، يَذْكُرُ، اُذْكُرْ
ذَكَرَ उसने याद किया	يَذْكُرُ	वह याद करता है/करेगा			
ذَكَرُوْا उन सब ने याद किया	يَذْكُرُوْنَ	वह सब याद करते हैं/करेंगे			
ذَكَرْتَ आपने याद किया	تَذْكُرُ	आप याद करते हैं/करेंगे	اُذْكُرْ याद कर!	لَا تَذْكُرْ मत याद कर!	
ذَكَرْتُمْ आप सब ने याद किया	تَذْكُرُوْنَ	आप सब याद करते हैं/करेंगे	اُذْكُرُوْا याद करो	لَا تَذْكُرُوْا मत याद करो!	
ذَكَرْتُ मैंने याद किया	أَذْكُرُ	मैं याद करता हूँ/करुँगा			ذَاكِر: याद करने वाला
ذَكَرْنَا हमने याद किया	نَذْكُرُ	हम याद करते हैं/करेंगे			مَذْكُوْر : जिसको याद किया गया
ذَكَرَتْ उस औरत ने याद किया	تَذْكُرُ	वह औरत याद करती है/करेगी			ذِكْر : याद करना

122 رَزَقَ (ن) उसने रिज़्क़ दिया

فِعْل مَاضِي	فِعْل مُضَارِع		أمر	نَهْي	इस टेबल के अहम सेग़े: رَزَقَ، يَرْزُقُ، اُرْزُقْ
رَزَقَ उसने रिज़्क़ दिया	يَرْزُقُ	वह रिज़्क़ देता है/देगा			
رَزَقُوا उन सब ने रिज़्क़ दिया	يَرْزُقُوْنَ	वह सब रिज़्क़ देते हैं/देंगे			
رَزَقْتَ आपने रिज़्क़ दिया	تَرْزُقُ	आप रिज़्क़ देते हैं/देंगे	اُرْزُقْ रिज़्क़ दे!	لَا تَرْزُقْ मत रिज़्क़ दे!	
رَزَقْتُمْ आप सब ने रिज़्क दिया	تَرْزُقُوْنَ	आप रिज़्क़ देते हैं/देंगे	اُرْزُقُوْا रिज़्क़ दो!	لَا تَرْزُقُوْا मत रिज़्क़ दो	
رَزَقْتُ मैंने रिज़्क दिया	أَرْزُقُ	मै रिज़्क़ देता हूँ/दूँगा			رَازِق : रिज़्क़ देने वाला
رَزَقْنَا हमने रिज़्क़ दिया	نَرْزُقُ	हम रिज़्क़ देते हैं/देंगे			مَرْزُوْق : जिसको रिज़्क़ दिया गया
رَزَقَتْ उस औरत ने रिज़्क़ दिया	تَرْزُقُ	वह औरत रिज़्क़ देती है/देगी			رِزْق : रिज़्क़

दुआ	तब्लीग़
तसव्वुर एहसास	
एहतिसाब	प्लान

सबक़-13: सूरह-अल-काफ़िरुन

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ﴿١﴾

لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ﴿٢﴾

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۚ﴿٣﴾

وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ﴿٤﴾

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ﴿٥﴾

لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ﴿٦﴾ ع

सवाल-**1:** क्या हर ग़ैर-मुस्लिम काफ़िर होता है? फ़िर काफ़िर कौन हैं ?

जवाब:

सवाल-**2:** لَكُمْ دِيْنُكُمْ का मतलब तबलीग़ छोड़ देना है ?

जवाब:

सवाल-**3:** आप ﷺ इस सूरत को कौन सी नमाज़ में पढ़ते थे ?

जवाब:

सवाल-**4:** रात को यह सूरह पढ़ने के बारे में आप ﷺ ने क्या फ़रमाया ?

जवाब:

अरबी क़वायद के सवालात बराए सबक़-13: सूरह-अल-काफ़िरुन

सवाल-1: नीचे दिये गये टेबलस सेग़ों से तर्जुमा के साथ पुर कीजिये।

उसने मदद की — نَصَرَ[92]

इस टेबल के अहम सेग़े: نَصَرَ، يَنْصُر، اُنْصُرْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
मदद करने वाला:			
जिसकी मदद की गई:			
मदद करना :			

उसने पैदा किया — خَلَقَ (ن)[248]

इस टेबल के अहम सेग़े: خَلَقَ، يَخْلُقُ، اُخْلُقْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
पैदा करने वाला:			
जिसको पैदा किया गया:			
पैदा करना:			

उसने याद किया ذَكَرَ [163]

इस टेबल के अहम सेग़े ذَكَرَ، يَذْكُرُ اُذْكُرْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
याद करने वाला:			
जिसको याद किया गया:			
याद करना:			

उसने रिज़्क दिया رَزَقَ (ن) [122]

इस टेबल के अहम सेग़े رَزَقَ ،يَرْزُقُ، اُرْزُقْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
रिज़्क़ देने वाला:			
जिसको रिज़्क़ दिया गया:			
रिज़्क़ देना:			

सवाल-2:अरबी अल्फ़ाज़ के टुकड़े हलकी लाईन मार कर बताईये,फ़िर उनका तर्जुमा कीजिये ।	
خَلَقَكُمْ وَ رَزَقَكُمْ	
وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللهُ	
مَنْ يَّنْصُرُنِيْ	
فَاذْكُرُوْنِيْ	
اَذْكُرْكُمْ	

सवाल-3:उर्दू से अरबी में तर्जुमा कीजिये ।	
आपने मदद की मेरी	
मैंने मदद की आपकी	
उसने याद किया मुझको	
मैंने याद किया उसको	
पस मदद कर मेरी	

सबक़-14:
अज़ान के कलिमात और वुज़ू की दुआ

सबक़ 14 के ख़त्म तक आप 86 अल्फाज़ पढ़ना सीखलेंगे जो कुरआन में 33010 बार आये हैं

दुआ	तब्लीग़
तसव्वुर एहसास	
एहतिसाब	प्लान

اَللّٰهُ أَكْبَرُ اَللّٰهُ أَكْبَرُ ۞	اَللّٰهُ أَكْبَرُ اَللّٰهُ أَكْبَرُ ۞ (24)
अल्लाह सब से बड़ा है। अल्लाह सबसे बड़ा है।	अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह सब से बड़ा है।

- अल्लाह तआला कुव्वत,शान व शौकत,इज़्ज़त और हर अच्छी सिफ़त मे सबसे बड़ा है।
- दुआ:ऐ अल्लाह मुझ को तुझे अपनी ज़िन्दगी में बड़ा मानने की तौफ़ीक दे,यानी नफ़्स,ख़ानदान या लोगों के बजाये तेरी बातों को मानने और अमल करने की तौफ़ीक़ दे।

اللّٰهُ (2 बार)	إِلَّا	إِلٰهَ	لَا	أَنْ (578)	أَشْهَدُ
अल्लाह के	सिवाय	माबूद	नहीं है	कि	मैं गवाही देता हूँ
	إِلَّا: सिवाय,मगर	जमा آلِهَة	لَا = नहीं مَا: नही,क्या,जो لَمْ: नही, did not, لَنْ: हरगिज़ नही, ،will not		أَشْهَدُ:(أَفْعَلُ के वज़न पर) शहादत,शहीद, ऐनी शाहिद
मैं गवाही देता हूं कि कोई माबूद नहीं है सिवाये अल्लाह के					

إِلٰه के तीन अहम मआनी यह हैं: (1) जिस की पूजा व परस्तिश की जाये (2) जरुरतों को पूरा करने वाला (3) जिस का हुक्म माना जाये और इताअत की जाये, इम तीनों मआनी में अल्लाह के सिवाये कोई إِلٰه नही, मैं शहादत् देता हूँ यानी मेरी बातें और मेरा अमल (घर में या बाहर, आफिस में या बाज़ार में) यह बता रहा है कि मैं:

- अल्लाह से सबसे ज़्यादा मुहब्बत करता हूँ।
  अल्लाह को ख़ालिक़,मालिक,रब मानता हूँ,सारी कायनात का हाकिम मानता हूँ, उसी की इबादत और इताअ़त करता हूँ, उसी से मदद माँगता हूँ,उसी पर भरोसा करता हूँ।

رَّسُولُ اللّٰهِ (2 बार)	مُحَمَّدًا	أَنَّ (362)	أَشْهَدُ
अल्लाह के रसूल(हैं)।	मुहम्मद ﷺ	कि	मैं गवाही देता हूँ
رَسُوْل:की जमा رُسُل			أَشْهَدُ:(أَفْعَلُ के वज़न पर) शहादत,शहीद, ऐनी शाहिद
मैं गवाही देता हुँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं।			

मेरी ज़बान यानी मेरी बातें और मेरा अमल(घर में,या बाहर, आफिस में या बाज़ार में) यह बता रहा है कि मैं:

- अल्लाह और उसके रसूल से सबसे ज़्यादा मुहब्बत करता हूँ।
- आप ﷺ की लाई हुई तालीमात को बिला चूँ व चरा मानता हूँ,कुरआन और आप ﷺ की सुन्नत को हक़ व बातिल की कसौटी मानता हूँ।

➢ आप ﷺ की इताअत के लिये मुझे दूसरी कोई दलील की ज़रुरत नही, मेरी पसन्द और नापसंद आप ﷺ की पसन्द के ताबे है।

(दो बार) ۞ حَيَّ عَلَى الْفَلاَحِ		83 (दो बार) ۞ حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ	
कामयाबी की	आओ तरफ़	नमाज़ की।	आओ तरफ़
आओ कामयाबी की तरफ़		आओ नमाज़ की तरफ़	حَيَّ عَلَى: आओ तरफ़ / حَيَّ: आओ

➢ " नमाज़ की तरफ आओ कहा गया न कि "नमाज़ पढ़ो" अपनी-अपनी जगह या घर में .यानी मस्जिद में पढ़ने आओ, गोया नमाज़ को कायम करो,अल्लाह ने नमाज़ को पढ़ने का हुक्म नहीं दिया बल्कि उसको कायम करने का हुक्म दिया है। नमाज़ को आओगे तो हर किस्म की फलाह मिलेगी और फ़लाह का रास्ता भी, नमाज़ कामिल ज़िक्र है,अल्लाह के जिक्र से नफसियाती तौर पर सुकून और अक़्ल को जिला मिलेगी, नमाज़ के कई जिस्मानी फाइदें भी हैं सही वक्त पर सोना और उठना वगैरा। वक्त की पाबन्दी की आदत बनेगी,इज्तिमाई फ़ायदे भी है मसलन समाजी रिश्ते मज़बूत होंगे,सब से अहम यह कि आख़िरत में हमेशा हमेशा के लिये फलाह नसीब होगी।

यह फ़लाह की तज़कीर इसलिये भी कि इंसान नमाज़ को नहीं आता यह समझ कर कि मेरी फ़लाह का काम रुक जायेगा... उस नादान शख़्स की तरह जो किसी चीज़ की तरफ़ उल्टी सिम्त भागे।

۞ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ	۞ اَللّٰهُ أَكْبَرُ اَللّٰهُ أَكْبَرُ
नहीं है कोई माबूद सिवाय अल्लाह के	अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह सबसे बड़ा है।

➢ आख़िर में वही कलिमात जिससे अज़ान शुरु हुयी.मगर यहाँ गोया इस बात का ऐलान है कि उसकी बड़ाई को मानते हुये आजाओ अगर न मानो तो भी वह अपनी जगह बड़ा है, आने या न आने से उसकी बड़ाई पर कोई असर नही पड़ता,न आकर तुम अपना ही नुक्सान कर बैठोगे,जबकि उसकी पुकार पर लब्बैक कहने से तुम दुनिया और आख़िरत की फ़लाह पा जाओगे।

<u>वुज़ू के अज़कार:</u> वुज़ू शुरु करने की दुआ بِسْمِ اللّٰهِ है और वुज़ू के बाद की दुआ नीचे दी जा रही है।

اللّٰهُ	إِلَّا	إِلٰهَ	لَا	أَنْ	أَشْهَدُ
अल्लाह	सिवाय	कोई	नहीं है	कि	मैं गवाही देता हूँ
	إِلَّا:सिवाय,मगर		لَا = नहीं مَا:नही,क्या,जो لَمْ: नही, **did not,** لَنْ : हरगिज़ नही, **will not**		أَشْهَدُ:(أَفْعَلُ के वज़न पर) शहादत,शहीद, ऐनी शाहिद
मैं गवाही देता हूँ कि कोई (हक़ीक़ी) माबूद नहीं है सिवाये अल्लाह के					

मेरी ज़ुबान यानी मेरी बातें और मेरा अमल(घर में या बाहर,आफ़िस में या बाज़ार में) यह शहादत दे रहा है यानी यह बता रहा है कि मैं अल्लाह को-

- ख़ालिक,मालिक,रब मानता हूँ,सारी कायनात का हाकिम मानता हूँ,उसी की इबादत और इताअत करता हूँ,उसी से मदद माँगता हूँ।
- सब से ज़्यादा उसी से मुहब्बत करता हूँ।

لَهٗ	لَا شَرِيْكَ (40)	وَحْدَهٗ
उसका	नहीं कोई शरीक	वह अकेला है,
'لَهٗ' उसका, उसके लिये	شَرِيكَ، شُرَكَاء، شِرْك ، مُشْرِك	وَاحِد أَحَد تَوْحِيْد
वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं		

- यहाँ अल्लाह की वहदानियत का फिर से दूसरे अल्फ़ाज़ में इक़रार और शिर्क से मुकम्मल बेज़ारी का ऐलान वरना निजात ही मुश्किल,क्योंकि अल्लाह तआला शिर्क को हरग़िज़ माफ़ नही करेगा इसलिये शिर्क की ख़तरनाकी को ज़हन में रखते हुये पढ़िये।

وَرَسُوْلُهٗ (236)			عَبْدُهٗ (126)		مُحَمَّدًا	أَنَّ	وَأَشْهَدُ
और उसके रसूल हैं			उसके बन्दे		मुहम्मद (स.)	कि	और मैं गवाही देता हूँ
هٗ	رَسُوْلُ	وَ	هٗ	عَبْد	مُحَمَّد: खूब तारीफ़ किया हुआ	أَنَّ أَنْ: कि बेशक	أَشْهَدُ:(أَفْعَلُ के वज़न पर) शहादत,शहीद, ऐनी शाहिद
उस के	पैग़म्बर	और	उसके	बन्दे			
और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैही व सल्लम) उसके बन्दे और उसके रसूल हैं।							

- उपर अज़ान के क़लिमात में इसकी तश्रीह गुज़र चुकी है,यहाँ पर عبد (बन्दे)का लफ़्ज़ ज़्यादा है, पिछली उम्मतों ने नेक लोगो को उनके ज़बरदस्त कारनामों की वजह से उनको ख़ुदा का बेटा या ख़ुदाई में शरीक बना दिया, अल्लाह तआला ने मुहम्मद ﷺ के हक़ीक़ी मरतबे को बयान फरमा कर और उस पर हर मोमिन से शहादत दिलवाकर इस उम्मत में शिर्क के दरवाज़े को बन्द किया है।
- हम सब को अल्लाह ने बनाया है और इस दुनिया की हर चीज़ को भी, इसलिये हमको उसका सच्चा बन्दा बनकर रहना चाहिये। मुहम्मद ﷺ अल्लाह के सबसे बेहतरीन बन्दे हैं और हमारे लिये उसवा(नमुना) है।

مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ	وَاجْعَلْنِيْ			مِنَ التَّوَّابِيْنَ	اجْعَلْنِيْ		اَللّٰهُمَّ
पाक साफ़ रहने वालों (में) से	और बना दे मुझे			खूब तौबा करने वालों (में) से	बना दे मुझे		ऐ अल्लाह
مُتَطَهِّر: مُتَطَهِّرُوْن مُتَطَهِّرِيْنَ(जमअ) طَاهِر طَهُوْر طَهَارَة	نِي	اِجْعَلْ	وَ	تَابَ:पलटना ,تَائِب:पलटने वाला تَوَّاب:बार-बार पलटने वाला	نِي:मुझे	اِجْعَلْ:बना दे	
	मुझे	बना दे	और		اِفْعَل:اِجْعَل के वज़न पर		
ऐ अल्लाह! बना दे मुझे खूब तौबा करने वालों में से और बना दे मुझे पाक साफ़ रहने वालों में से							

- इंसान बार बार ग़ल्तियाँ करता है,नही करने के काम करता है,या करने के काम सही तौर से नही करता,इसलिये शदीद ज़रुरत है कि वह बार-बार तौबा करे ।
- पाकी से मुराद लिबास और मकान की पाकी,अकीदा और ख़यालात की पाकी,बल्कि हर किस्म की पाकी नसीब कर ।

ग्रामर: नीचे दिये गये 21 अहम सेगों की प्रेक्टिस कीजिये आखिरी दो सेग़े वाहिद मुअन्नस के हैं ।

उसने कुफ़र किया — (ن) كَفَرَ 483

इस टेबल के अहम सेग़े : كَفَرَ، يَكْفُرُ، اُكْفُرْ		فِعْل مُضَارِع	فِعْل مَاضِي
		वह कुफ़र करता है/ करेगा يَكْفُرُ	उसने कुफ़र किया كَفَرَ
نَهْي	أمْر	वह सब कुफ़र करते हैं/करेंगे يَكْفُرُوْنَ	उन सब ने कुफ़र किया كَفَرُوْا
मत कुफ़र कर! لَا تَكْفُرْ	कुफ़र कर! اُكْفُرْ	आप कुफ़र करते हैं/ करेंगे تَكْفُرُ	आपने कुफ़र किया كَفَرْتَ
मत कुफ़र करो! لَا تَكْفُرُوْا	कुफ़र करो! اُكْفُرُوْا	आप सब कुफ़र करते हैं/करेंगे تَكْفُرُوْنَ	आप सबने कुफ़र किया كَفَرْتُمْ
कुफ़र करने वाला كَافِر:		मैं कुफ़र करता हूँ / करुँगा أَكْفُرُ	मैने कुफ़र किया كَفَرْتُ
जिस का कुफ़र किया गया مَكْفُوْر:		हम कुफ़र करते हैं/ करेंगे نَكْفُرُ	हमने कुफ़र किया كَفَرْنَا
कुफ़र करना كُفْر :		वह औरत कुफ़र करती है /करेगी تَكْفُرُ	उस औरत ने कुफ़र किया كَفَرَتْ

वह दाख़िल हुआ — (ن) دَخَلَ 78

इस टेबल के अहम सेग़े : دَخَلَ، يَدْخُلُ، اُدْخُلْ		فِعْل مُضَارِع	فِعْل مَاضِي
		वह दाख़िल होता है/ होगा يَدْخُلُ	वह दाख़िल हुआ دَخَلَ
نَهْي	أمْر	वह सब दाख़िल होते हैं/ होंगे يَدْخُلُوْنَ	वह सब दाख़िल हुये دَخَلُوْا
मत दाख़िल हो! لَا تَدْخُلْ	दाख़िल हो! اُدْخُلْ	आप दाख़िल होते हैं/होंगे تَدْخُلُ	आप दाख़िल हुये دَخَلْتَ
तुम सब मत दाख़िल हो لَا تَدْخُلُوْا	तुम सब दाख़िल हो! اُدْخُلُوْا	आप सब दाख़िल होते हैं/होंगे تَدْخُلُوْنَ	आप सब दाख़िल हुये دَخَلْتُمْ
दाख़िल होने वाला دَاخِل :		मैं दाख़िल होता हूँ /होऊँगा أَدْخُلُ	मै दाख़िल हुआ دَخَلْتُ
जिसमें दाख़िला हुआ مَدْخُول:		हम दाख़िल होते हैं/ होंगे نَدْخُلُ	हम दाख़िल हुये دَخَلْنَا
दाख़िल हुआ دُخُوْل:		वह दाख़िल होती है/ होगी تَدْخُلُ	वह औरत दाख़िल हुई دَخَلَتْ

उसने इबादत की (ن) عَبَدَ [143]

इस टेबल के अहम सेग़े : عَبَدَ، يَعْبُدُ، أُعْبُدْ		فِعْل مُضَارِع	فِعْل مَاضِي
		वह इबादत करता है/करेगा يَعْبُدُ	उसने इबादत की عَبَدَ
نَهْي	أمْر	वह सब इबादत करते हैं/करेंगे يَعْبُدُوْنَ	उन सब ने इबादत की عَبَدُوْا
मत इबादत कर! لَا تَعْبُدْ	इबादत कर! أُعْبُدْ	आप इबादत करते हैं/करेंगे تَعْبُدُ	आपने इबादत की عَبَدْتَّ
मत इबादत करो! لَا تَعْبُدُوْا	इबादत करो! أُعْبُدُوْا	आप सब इबादत करते हैं/करेंगे تَعْبُدُوْنَ	आप सब ने इबादत की عَبَدْتُّمْ
इबादत करने वाला : عَابِد		मैं इबादत करता हूँ/करूँगा أَعْبُدُ	मैंने इबादत की عَبَدْتُّ
जिसकी इबादत की गई : مَعْبُوْد		हम इबादत करते हैं/करेंगे نَعْبُدُ	हमने इबादत की عَبَدْنَا
इबादत करना : عِبَادَة		वह औरत इबादत करती है/करेगी تَعْبُدُ	उस औरत ने इबादत की عَبَدَتْ

अज़ान की इब्तिदा

जब नमाज़ के वक़्त के लिये किसी ऐसी अलामत की ज़रुरत पड़ी जिस के ज़रिये तमाम लोगों को नमाज़ का वक़्त मालूम हो जाये तमाम मूसलमानों ने मशवरा किया जब रात हुयी तो अब्दुल्लाह बिन ज़ूबैर रज़ि: ने ख़्वाब में देखा कि एक शख़्स नाक़ूस लेकर जार हा था तो उन्होनें उससे कहा क्या तुम इस नाक़ूस को बेचोगे, तो उस आदमी ने कहा तुम इसका क्या करोगे, तो अब्दुल्लाह रज़ि: ने कहा हम इसके ज़रिया लोगों को नमाज़ की तरफ़ बुलायेंगे, तो उस आदमी ने कहा क्या मैं तुम्हें इससे बेहतर चीज़ न बताऊँ, तो अब्दुल्लाह रज़ि ने कहा क्यों नही, तो उस आदमी ने अज़ान के मशहूर कलिमात सिखाये फिर अक़ामत के कलिमात सिखाये,हज़रत अब्दुल्लाह कहते हैं जब सुबह हुयी मैं नबी सल्लल्लाहु के पास आया और जो कुछ मैंने रात में देखा था ब्यान किया तो अल्लाह के रसूल ने फ़रमाया यह सच्चा ख़्वाब है इन्शा अल्लाह, खड़े हो बिलाल के साथ और बिलाल को वह कलिमात सिखाओ ताकि वह अज़ान दें क्योंकि उनकी आवाज़ तुम से ऊँची है ।

सबक़-14: अज़ान और वुज़ू के बाद की दुआ

اَللّٰهُ أَكْبَرُ اَللّٰهُ أَكْبَرُ ۞ اَللّٰهُ أَكْبَرُ اَللّٰهُ أَكْبَرُ ۞

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ (दो बार)

أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُولُ اللّٰهِ (दो बार)

حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ ۞ (दो बार) حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ ۞ (दो बार)

اَللّٰهُ أَكْبَرُ اَللّٰهُ أَكْبَرُ ۞ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ ۞

वुज़ू के अज़कार: वुज़ू शुरु करने की दूआ بِسْمِ اللّٰهِ है और वुज़ू के बाद की दुआ नीचे दी जा रही है।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ

وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ

وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ

सवाल-**1:** "اَللّٰہُ اَکْبَر" को हम अपनी ज़िन्दगी में किस तरह ला सकते हैं ?

जवाब:

सवाल-**2:** शहादत देने का मतलब क्या है ?

जवाब:

सवाल-**3:** नमाज़ को आने के दुनिया और आख़िरत के फायदे बताईये ?

जवाब:

सवाल **-4:** वुज़ू के बाद की दुआ पढ़ने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब:

अरबी क़वायद के सवालात बराए सबक़-14: अज़ान के कलिमात और वुज़ू की दुआ

सवाल -1: नीचे दिये गये टेबल्स सेग़ों से तर्जुमा के साथ पुर कीजिये ।

उसने कुफ़्र किया — كَفَرَ (ن) [461]

इस टेबल के अहम सेग़े كَفَرَ، يَكْفُرُ، أُكْفُرْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
कुफ़्र करने वाला:			
जिसका कुफ़्र किया गया:			
कुफ़्र करना:			

वह दाख़िल हुआ : — دَخَلَ (ن) [78]

इस टेबल के अहम सेग़े دَخَلَ ، يَدْخُلُ، أُدْخُلْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
		वह दाख़िल होता है/होगा	वह दाख़िल हुआ
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
दाख़िल होने वाला:			
जिसमें दाख़िल हुआ:			
दाख़िल होना:			

उसने इबादत की : عَبَدَ (ن) [143]

इस टेबल के अहम सेग़े عَبَد، يَعْبُدُ، اُعْبُدْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
इबादत करने वाला:			
जिसकी इबादत की गई:			
इबादत, इबादत करना:			

सवाल-2:अरबी अल्फ़ाज़ के टुकड़े हलकी लाईन मार कर बताईये,फ़िर उनका तर्जुमा कीजिये ।	
فَاعْبُدُوْهُ	
فَاعْبُدْهُ	
وَلَاتَكْفُرُوْا	
وَقَدْ كَفَرْتُمْ	
وَمَنْ كَفَرَ	

सवाल-3:उर्दू से अरबी में तर्जुमा कीजिये ।	
हम इबादत करते हैं तेरी	
आप दाखिल हुए और मैं दाखिल हुआ	
मैने इबादत की और कुफ़्र नही किया	
उसने कुफ़्र किया और इबादत नही की	
में दाखिल होता हूँ	

सबक़-15: सना ,रुकू ,सजदा

********** सना **********												
41												
سُبْحٰنَكَ		اللّٰهُمَّ		وَبِحَمْدِكَ				وَتَبَارَكَ			اسْمُكَ	
पाक है तू		ऐ अल्लाह		और तारफिफ़ है तेरे लिये				और बरकत वाला है			तेरा नाम	
سُبْحَانَ	كَ	(سُبْحَانَ الله)	اللّٰهُمَّ: ऐ अल्लाह	وَ	بِ	حَمْدِ	كَ	وَ	تَبَارَكَ	اسْمُ	كَ	(بِسْمِ اللهِ)
पाक है	तू			और	साथ	तारीफ	तेरी	और	बरकत वाला है	नाम	तेरा	
ऐ अल्लाह तू पाक है और तेरे ही लिये तारीफ़ है और तेरा नाम बरकत वाला है।												

- سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ: अल्लाह कमज़ोर नहीं,ज़ालिम नहीं,उसको किसी की मदद की ज़रुरत नहीं,उसमें कोई नुक़्स नहीं। उसने मुझे जो भी ज़िन्दगी का इम्तिहान दिया है वह बिल्कुल सही है। मुझे कोई शिकायत नही(यह मुस्बत रवय्या की बुनियाद है यानी **positive attitude**)
- وَبِحَمْدِكَ तारीफ़ और शुक्र भी दीन की एक अहम बुनियाद,जब तक सच्ची तस्बीह न हो,सच्ची तारीफ़ और शुक्र नही हो सकता, कामयाब शख़्सियात का राज़: मुसबत रवय्या रखना और शुक्र करना ।
- وَتَبَارَكَ اسْمُكَ : अगर आप सिर्फ़ "काम अच्छा" कहते रहें तो काम अच्छा नही हो जाता,मगर अल्लाह के नाम से काम शुरु हो तो उसकी मदद मिल जाती है,बरकत मिल जाती है,और आख़िरत में तो उसका नाम लेने वाले और उसका काम करने वाले हमेशा-हमेशा की बरकतों से सरफराज़ होंगे ।

20							
وَتَعَالٰى		جَدُّكَ		وَلَا إِلٰهَ		غَيْرُكَ	
और बुलन्द व बाला है		तेरी बूज़र्गी		और नही कोई माबूद		सिवाये तेरे	
وَ	تَعَالٰى	جَدُّ	كَ	وَ	لَا	إِلٰهَ	غَيْرُ	كَ
और	बुलन्द व बाला है	बुज़ुर्गी	तेरी	तेरी	नही	कोई माबूद	सिवाय	तेरे
	आलीशान	ऊर्दू के अल्फाज़ جدّ امجد، آباء واجداد						
और तेरी बुज़ुर्गी बुलन्द व बाला है,और तेरे सिवा कोई (सच्चा) माबूद नही।							

- وَتَعَالٰى جَدُّكَ: तेरी बुज़ुर्गी या तेरी **Majesty** सबसे बुलन्द है कोई दुनिया का कितना ही ताक़तवर हुक्मराँ हो या बादशाह, तेरे सामने कुछ भी नही ।
- وَلَا إِلٰهَ غَيْرُكَ:उसकी वहदानियत का इक़रार और शिर्क से मुकम्मल बेज़ारी का एलान,वरना निजात मुश्किल है। अल्लाह तआला शिर्क को हरगिज़ मुआफ नहीं करेगा इसलिये शिर्क की ख़तरनाकी को ज़ेहन में रखते हुये पढ़िये ।

***** ***** ***** ***** रुकू के अज़कार ***** ***** ***** *****		
الْعَظِيْم ۞ [120]	رَبِّيَ	سُبْحٰنَ
अज़मत वाला	मेरा रब	पाक है
الْعَظِيْم:अज़मत वाला,बड़ाई वाला,जिसको आजिज़ न किया जा सके	मेरे जिस्म के एक एक ज़र्रे-ज़र्रे का पालने वाला	हर ऐब और बुराई से पाक
मेरा रब पाक है,बहुत अज़्मत वाला है ।		

चार बातों को तसव्वुर और एहसास के साथ पढ़िये:(1) उसकी पाकी (2) उसकी रुबूबियत, (3) अपनाइयत से कि वह मेरा रब है (4) उसकी अज़मत ।

वह पाक है:

- मेरा रब ज़ालिम नही,नाइन्साफी करने वाला नही। बेमक़सद चीज़ो को पैदा करने वाला नही, उसको न थकन आती है न नींद,वह कमज़ोर नही,उसको किसी का ख़ौफ नही ।
- मेरे रब में कोई नुक्स नही,जो ज़िन्दगी के इम्तिहान हालात हैं,उन पर मुझ को कोई शिकायत नही, मेरे ज़र्रे ज़र्रे की परवरिश करने वाला है,वह अज़ीम है।

حَمِدَهٗ ۞	لِمَنْ	سَمِعَ اللّٰهُ
तारफ़ि की	उसकी जिसने	सुन ली अल्लाह ने
सुन ली अल्लाह ने जिसने उसकी तारीफ की ।		

अल्लाह सब की सुनता है मगर यहाँ हम्द करने वाले के लिये सुनने का ख़ास ज़िक्र,हम्द करने से उसको कोई फायदा नही पहुँचता और नही करने से उसका कोई नुक़्सान नही होता,उसका पूरा पूरा फ़ायदा हम को मिलता है ।

الْحَمْدُ ۞	وَلَكَ	رَبَّنَا
हर क़िस्म की तारफ़ि है	तेरे ही लिये	ऐ हमार रब
ऐ हमारे रब तेरे लिये हर क़िस्म की तारीफ़ है ।		

- حمد के दो मआनी याद रखिये:तारीफ करना और शुक्र करना,पूरे दिल से,शौक़ के साथ और तारीफ़ के जज़्बात से(यानी ऐ अल्लाह तू बहुत करीम है,रहीम है,वगैरा) उसकी तारीफ़ कीजिये यानी यह कहिये :رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْد

***** ***** ***** ***** ***** सजदे के अज़कार ***** ***** ***** ***** *****				
الْأَعْلٰى ۞			رَبِّيَ	سُبْحٰنَ
सब से बुलन्द			मेरा रब	पाक है
عَلِى बुलन्द	أَعْلٰى ज़्यादा बुलन्द	الْأَعْلٰى सबसे बुलन्द		
मेरा रब पाक है जो सब से बुलन्द है				

सजदे की हालत:मुकम्मल सुपुर्दगी की है। इस में भी चार बातों को तसव्वुर और एहसास के साथ पढ़िये: (1) उसकी पाकी (2) उसकी रुबूबियत (3) अपनाइयत से कि वह मेरा रब है (4) उसकी बुलन्दी को ।

मैं नीचा ज़मीन पर... और अल्लाह अर्श पर सबसे ऊपर....यह बन्दे की सच्ची पोज़ीशन है। इसलिये भी बन्दा अल्लाह के सब से करीब सजदे में होता है ।

سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی को अपनी ज़िन्दगी में लायें :

दुआ: ऐ अल्लाह !मदद कर मेरी कि मैं ज़िन्दगी के इम्तिहान की हर चीज़ को कुबूल करुँ और तुझ से कोई शिकायत न करुँ(कि मेरे साथ ऐसा क्यों है ? वगैरा)

एहतिसाब: मैं कितनी दफ़ा शिकायत करता हूँ अपने रंग,ख़द्दो ख़ाल,ख़ानदान,मौसम,मौजूदा हालात वगैरा की ?

प्लान: इस बात पर ध्यान दें कि अल्लाह जो भी करता है मुकम्मल करता है,हालात हमारा इम्तिहान होते हैं और कुछ इन्सानी ग़ल्तियों का नतीजा ।

तब्लीग़: इस पैग़ाम को फ़ैलायें कि अल्लाह हर ऐब से पाक है ।

58 ضَرَبَ (ض) ضَرَبَ مَثَلًا:उसने मिसाल दी ,ضَرَبَ: उसने मारा

इस टेबल के अहम सेग़े : ضَرَبَ، يَضْرِبُ، اِضْرِبْ		فِعْل مُضَارِع	فِعْل مَاضِي
		वह मारता है/मारेगा يَضْرِبُ	उसने मारा ضَرَبَ
نَهْي	أمْر	वह सब मारते हैं/मारेंगे يَضْرِبُوْنَ	उन्होने मारा ضَرَبُوْا
मत मार! لَا تَضْرِبْ	मार! اِضْرِبْ	तुम मारते हो/मारोगे تَضْرِبُ	आपने मारा ضَرَبْتَ
मत मारो! لَا تَضْرِبُوْا	मारो! اِضْرِبُوْا	आप मारते हैं/मारेंगे تَضْرِبُوْنَ	आप सब ने मारा ضَرَبْتُمْ
मारने वाला : ضَارِب		मैं मारता हूँ/मारुँगा أَضْرِبُ	मैंने मारा ضَرَبْتُ
जिसको मारा गया : مَضْرُوْب		हम मारते हैं/मारेंगे نَضْرِبُ	हमने मारा ضَرَبْنَا
मार मारना : ضَرْب		वह औरत मारती है/मारेगी تَضْرِبُ	उस औरत ने मारा ضَرَبَتْ

ظَلَمَ (ض) [266] — उसने ज़ुल्म किया: ظَلَمَ

فِعْل مَاضِي		فِعْل مُضَارِع			
ظَلَمَ	उसने ज़ुल्म किया	يَظْلِمُ	वह ज़ुल्म करता है/करेगा	इस टेबल के अहम सेग़े : ظَلَمَ، يَظْلِمُ، اِظْلِمْ	
ظَلَمُوْا	उन्होने ज़ुल्म किया	يَظْلِمُوْنَ	वस सब ज़ुल्म करते हैं/करेंगे	أمر	نَهْي
ظَلَمْتَ	आपने ज़ुल्म किया	تَظْلِمُ	आप ज़ुल्म करते हो/करोगे	اِظْلِمْ ज़ुल्म कर!	لَا تَظلِمْ मत ज़ुल्म कर
ظَلَمْتُمْ	आप सब ने ज़ुल्म किया	تَظْلِمُوْنَ	आप सब ज़ुल्म करते हो/करोगे	اِظْلِمُوْا ज़ुल्म करो!	لَا تَظلِمُوْا मत ज़ुल्म करो!
ظَلَمْتُ	मैंने ज़ुल्म किया	أَظْلِمُ	मैं ज़ुल्म करता हूँ/करुँगा	ظَالِم : ज़ुल्म करने वाला	
ظَلَمْنَا	हमने ज़ुल्म किया	نَظْلِمُ	हम ज़ुल्म करते हैं/करेंगे	مَظْلُوْم: जिस पर ज़ुल्म किया गया	
ظَلَمَتْ	उस औरत ने ज़ुल्म किया	تَظْلِمُ	वह औरत ज़ुल्म करती है/करेगी	ظُلم : ज़ुल्म	

صَبَرَ (ض) [94] — उसने सब्र किया: صَبَرَ

فِعْل مَاضِي		فِعْل مُضَارِع			
صَبَرَ	उसने सब्र किया	يَصْبِرُ	वह सब्र करता है/करेगा	इस टेबल के अहम सेग़े صَبَرَ، يَصْبِرُ، اِصْبِرْ	
صَبَرُوْا	उन्होने सब्र किया	يَصْبِرُوْنَ	वह सब सब्र करते है/करेंगे	أمر	نَهْي
صَبَرْتَ	आपने सब्र किया	تَصْبِرُ	आप सब्र करते हो/ करोगे	اِصْبِرْ सब्र कर!	لَا تَصْبِرْ मत सब्र करो!
صَبَرْتُمْ	आप सब ने सब्र किया	تَصْبِرُوْنَ	आप सब सब्र करते हो/ करोगे	اِصْبِرُوْا सब्र करो!	لَا تَصْبِرُوْا मत सब्र करो!
صَبَرْتُ	मैने सब्र किया	أَصْبِرُ	मैं सब्र करता हूँ/करुँगा	صَابِر : सब्र करने वाला जिस फ़ेल का असर दूसरे पर ने पड़े सिर्फ़ करने वाले पर होतो ऐसे अफ़आल का इस्मे मफ़उल नही बनता	
صَبَرْنَا	हमने सब्र किया	نَصْبِرُ	हम सब्र करते हैं/करेंगे		
صَبَرَتْ	उस औरत ने सब्र किया	تَصْبِرُ	वह औरत सब्र करती है/करेगी	صَبْر : सब्र	

उसने बख़्शिश की : غَفَرَ

95 غَفَرَ (ض)

इस टेबल के अहम सेग़े : غَفَرَ، يَغْفِرُ، اِغْفِرْ			فِعْل مُضَارِع	فِعْل ماضِي	
			वह माफ़ करता है/करेगा يَغْفِرُ	उसने माफ़ किया غَفَرَ	
نَهْي	أمْر		वह सब माफ़ करते हैं /करेंगे يَغْفِرُوْنَ	उन्होने माफ़ किया غَفَرُوْا	
मत माफ़ कर! لَا تَغْفِرْ	माफ़ कर! اِغْفِرْ		आप माफ़ करते हो/करोगे تَغْفِرُ	आपने माफ़ किया غَفَرْتَ	
मत माफ़ करो! لَا تَغْفِرُوْا	माफ़ करो! اِغْفِرُوْا		आप सब माफ़ करते हो/करोगे تَغْفِرُوْنَ	आप सब ने माफ़ किया غَفَرْتُمْ	
			मैं माफ़ करता हूँ/करूँगा أَغْفِرُ	मैने मुआफ किया غَفَرْتُ	
			हम माफ़ करते है/करेंगे نَغْفِرُ	हम सब ने माफ़ किया غَفَرْنَا	
			वह माफ़ करती है/करेगी تَغْفِرُ	उस औरत ने माफ़ किया غَفَرَتْ	

माफ़ करने वाला : غَافِر

जिसको माफ़ किया गया : مَغْفُوْر

माफ़ करना : مَغْفِرَة

इस सबक़ में बाब ضَرَبَ के चार अफ़आल बयान किये गये,चारों मिसालों को एक जुमले में आप इस तरह याद रख सकते हैं।

- अगर किसी ने दूसरे को ज़बरदस्ती मारा(ضَرَبَ)तो ज़ुल्म करेगा (ظَلَمَ)
- जिस पर ज़ुल्म हुआ,अगर वह कमज़ोर हो तो ख़ामोश बैठा रहेगा (صَبَرَ)
- और जिसने ज़ुल्म किया यानी मारा तो उसको माफ़ी माँगना चाहिये ताकि अल्लाह उसको बख़्श दे (غَفَرَ)

أَقْرَبُ مَا يَكُوْنُ الْعَبْدُ مِنْ رَّبِّهٖ وَهُوَ سَاجِدٌ

अल्लाह के रसूल सई ने फ़रमाया कि बन्दा सज्दा में अपने रब से बहुत क़रीब होता है।

सबक़-15: सना, रुकू, सजदा

********** सना **********

سُبْحٰنَكَ	اللّٰهُمَّ	وَبِحَمْدِكَ	وَتَبَارَكَ	اسْمُكَ

وَتَعَالٰى	جَدُّكَ	وَلَا إِلٰهَ	غَيْرُكَ

***** ***** ***** ***** रुकू के अज़कार ***** ***** ***** *****

سُبْحٰنَ	رَبِّيَ	الْعَظِيْم ۞

***** ***** ***** ****** सजदे के अज़कार ***** ***** ***** *****

سُبْحٰنَ	رَبِّيَ	الْأَعْلٰى ۞

सवाल-**1:** अल्लाह का नाम बरकत वाला है, इसका क्या मतलब है ?

जवाब:

सवाल-**2:** रुकू में हम कितनी बातें अल्लाह से कहते हैं ?

जवाब:

सवाल-**3:** सजदा में हम कितनी बातें अल्लाह से कहते हैं ?

जवाब:

सवाल-**4:** "سُبْحٰن" का क्या मतलब है ?

जवाब:

अरबी क़वायद के सवालात बराए सबक-15: सना, रुकू, सजदा

सवाल **-1:** नीचे दिये गये टेबल्स सेग़ों से तर्जुमा के साथ पुर कीजिये

उसने मारा : ضَرَبَ (ض) [58]

इस टेबल के अहम सेगे ضَرَبَ، يَضْرِبُ، اِضْرِبْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
मारने वाला:			
जिसको मारा गया:			
मार, मारना:			

उसने ज़ुल्म किया ظَلَمَ (ض) [266]

इस टेबल के अहम सेग़े ظَلَمَ، يَظْلِمُ، اِظْلِمْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
ज़ुल्म करने वाला:			
जिस पर ज़ुल्म किया गया:			
ज़ुल्म करना:			

53 صَبَرَ (ض) उसने सब्र किया

इस टेबल के अहम सेग़े صَبَرَ، يَصْبِرُ، اِصْبِرْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
सब्र करने वाला:			
–			
सब्र करना:			

95 غَفَرَ (ض) उसने बख़्शिश की

इस टेबल के अहम सेग़े غَفَرَ، يَغْفِرُ، اِغْفِرْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
माफ़ करने वाला:			
जिसको माफ़ किया गया:			
माफ़ करना:			

सवाल-2: अरबी अल्फ़ाज़ के टुकड़े हल्की लाईन मार कर बताईये,फ़िर उनका तर्जुमा कीजिये ।	
فَاضْرِبُوْا	
صَبَرْتُمْ	
فَغَفَرْنَا	
وَمَاظَلَمْنَاهُمْ	
وَمَاظَلَمُوْنَا	

सवाल-3:उर्दू से अरबी में तर्जुमा कीजिये।	
मत ज़ुल्म करो	
उसने मारा पस ज़ुल्म किया	
तुम सब सब्र करो	
उन्होने ने ज़ुल्म किया	
सब्र कर	

सबक़ -16: तशह-हुद

सबक़ 16 के ख़त्म तक आप 102 अल्फाज़ पढ़ना सीखलेंगे जो कुरआन में 35,135 बार आये हैं

दुआ	तब्लीग़
तसव्वुर एहसास	
एहतिसाब	प्लान

وَالطَّيِّبَاتُ (46)	وَالصَّلَوَاتُ	لِلّٰهِ		اَلتَّحِيَّاتُ
और सभी माली इबादतें	और सभी बदनी इबादतें	अल्लाह ही के लिये हैं,		सभी क़ौली इबादतें
طَيِّبَة (जमा) طَيِّبَات सभी माली इबादतें	صَلَوٰة (जमा) صَلَوَات सभी बनी इबादतें	الله	لِ	تَحِيَّة जमा تَحِيَّات
		अल्लाह	के लिये	
सभी क़ौली (ज़ुबान की), बदनी और माली इबादतें अल्लाह ही के लिये हैं,				

- बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि एक बार आप ﷺ ने फ़रमाया: "सत्तर हज़ार ऐसे आदमी हैं जो जन्नत में बग़ैर हिसाब और किताब के दाख़िल होंगे।" आप ﷺ ने यह भी फरमाया: "यह वह लोग होंगे जो न खुद झाड फूँक करते हैं और न किसी और से कराते हैं और बद्शुगूनी लेते हैं और सिर्फ़ अपने रब पर भरोसा करते हैं" यह सुनकर ओकाशा बिन मेहसिन رضي الله عنه खड़े हुये और कहा: "अल्लाह के रसूल मेरे लिये दुआ फरमायें,अल्लाह मुझे भी उन मे से करदे,आपने फरमाया:ओकाशा इसमें तुम से सबक़त ले गया।"
- इस हदीस से हम यह बात सीख सकते हैं कि हमको अच्छी बात सुनते ही जल्द ही दुआ करनी चाहिये कि अल्लाह हमें उसको करने की तौफ़ीक दे,वरना कोई और सबक़त ले जायेगा ।
- ऐ अल्लाह मुझे इन तीनों चीज़ो में हिस्सा लेने की तौफ़ीक दे ।
- एहतिसाब कि: **1.** मेरी ज़बान का क्या हाल है,**2.** कुव्वतें(ख़ास कर ज़ेहन की) कहाँ सर्फ हो रही है,**3.** पैसा किधर ख़र्च... ।

وَبَرَكَاتُهٗ			وَرَحْمَتُ اللّٰهِ			أَيُّهَاالنَّبِيُّ (75)	عَلَيْكَ		اَلسَّلَامُ (42)
और बरकतें हों उसकी			और अल्लाह की रहमत			ऐ नबी	आप पर		सलाम हो
هٗ	بَرَكَاتُ	وَ	اللّٰهِ	رَحْمَتُ	وَ	ऐ :يَا، أَيُّهَا، يَا أَيُّهَا نبى + انبياء	كَ	عَلَى	اَلسَّلَامُ:सलाम हो
उसकी	बरकतें हों	और	अल्लाह	रहमत	और		आप	पर	
بَرَكَة बरकतें + जमा بَرَكَات							आप पर		اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ
सलाम हो आप पर ऐ नबी और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हैं									

- पिछली तीन चीज़ों को जिसने बेहतरीन तौर पर अंजाम दिया और हमको सिखाया भी कि वह क्या है और इन को कैसे किया जाये? उस हस्ती पर सलाम,रहमत,बरकतें (तीनों चीज़ें)

الصّٰلِحِيْنَ	عِبَادِ اللهِ	وَعَلٰى	عَلَيْنَا	اَلسَّلَامُ
नेक	अल्लाह के बंदों	और ऊपर	हम पर	सलाम हो
صَالِحُوْن، صَالِحِيْن(जमा) صَالِح	عِبَادُ الله (जमा)عَبْدُ الله عَابِدُوْن، عَابِدِيْن (जमा) عَابِد	عَلَى وَ ऊपर और	نَا عَلَى हम पर	السَّلَامُ:सलाम हो السَّلَامُ عَلَيْكُمْ
सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बंदों पर।				

- अल्लाह का इनाम किन पर अम्बिया,सिददीकीन,शुहदा,सालेहीन पर,यहाँ पहले नबी ﷺ पर सलाम फिर हम पर और सालेहीन पर।
- दोनों (नबी ﷺ और सालेहीन)के लिये दुआ इन्शाअल्लाह कुबूल होगी। इस दुआ में 'हम पर' (عَلَيْنَا) बीच में है,जब अगला पिछला मक़बूल तो अल्लाह की रहमत से उम्मीद कि बीच वाले भी मकबूल होंगे,याद रखिये कि अल्लाह की रहमत उसको मिलेगी जो अमल से उसको हासिल करने की कोशिश भी करेगा,जैसा कि सालेहीन ने किया।
- इसमें हमारे लिये यह पैग़ाम भी है कि हम दुआ के साथ-साथ सालेहीन बनने की पूरी कोशिश करें इसलिये कि कुरआन में इनाम मिलने वालों का चार ग्रुप्स में से पहले अम्बिया का ज़िक्र है और आख़िर में सालेहीन का।

إِلَّا اللهُ	لَا إِلٰهَ	أَنْ	أَشْهَدُ
सिवाय अल्लाह के	नहीं कोई माबूद	कि	मैं गवाही देता हूँ
إلا :सिवाय मगर	لَا = नही مَا = नही,क्या,जो إِلٰه जमा آلِهَةٌ :माबूद	أَنْ أَنَّ: कि बेशक	أَشْهَدُ:(أَفْعَلُ के वज़न पर) شهادت، شهيد، عينى شاهد
मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई (हक़ीक़ी) माबूद नहीं			

अज़ान के सबक़ में इस की तशरीह गुज़र चुकी है।

وَرَسُولُهٗ			عَبْدُهٗ		مُحَمَّدًا	وَأَشْهَدُ أَنَّ		
और उसके रसूल (हैं)			उसके बन्दे		मुहम्मद (स.)	और मैं गवाही देता हूँ कि		
هٗ	رَسُولُ	وَ	هٗ	عَبْد	مُحَمَّد ﷺ	أَنَّ	أَشْهَدُ	وَ
उसके	पैग़म्बर	और	उसके	बन्दे	खूब तारीफ़ किया हुआ	कि	मैं गवाही देता हूँ	और
और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल-लल्लाहु-अलैहि वसल्लम उसके बन्दे और उसके रसूल हैं।								

अज़ान के सबक़ में इस की तशरीह गुज़र चूकी है.यहाँ पर عَبْد(बन्दे)का लफ़्ज़ ज़्यादा है, हम सब को अल्लाह ने बनाया है और इस दुनिया नें हर चीज़ को भी,इसलिये हमको उसका सच्चा बन्दा बनकर रहना चाहिये,मुहम्मद ﷺ अल्लाह के सबसे बहतरीन बंदे हैं और हमारे लिये उसवा हैं।

ग्रामर: नीचे दिये गये 21 अहम सेग़ों की प्रेक्टिस कीजिये ।

उसने सुना — 100 سَمِعَ (س)

इस टेबल के अहम सेग़े : سَمِعَ، يَسْمَعُ، اِسْمَعْ		مَعْل مُضَارِع		مَعْل ماضِي	
		वह सुनता है/ सुनेगा	يَسْمَعُ	उसने सुना	سَمِعَ
نَهْي	أمْر	वह सब सुनते हैं/ सुनेंगे	يَسْمَعُوْنَ	उन्होने सुना	سَمِعُوْا
मत सुन! لَا تَسْمَعْ	सुन! اِسْمَعْ	आप सुनते हैं/ सुनेंगे	تَسْمَعُ	आपने सुना	سَمِعْتَ
मत सुनो! لَا تَسْمَعُوْا	सुनो! اِسْمَعُوْا	आप सब सुनते हैं/सुनेंगे	تَسْمَعُوْنَ	आप सब ने सुना	سَمِعْتُمْ
सुनने वाला : سَامِع		मैं सुनता हूँ/सुनूँगा	أَسْمَعُ	मैने सुना	سَمِعْتُ
जिसको सुना गया : مَسْمُوع		हम सब सुनते हैं/सुनेंगे	نَسْمَعُ	हमने सुना	سَمِعْنَا
सुनना : سَمع		वह औरत सुनती है/ सुनेगी	تَسْمَعُ	उस औरत ने सुना	سَمِعَتْ

उसने जाना — 518 عَلِمَ (س)

इस टेबल के अहम सेग़े عَلِمَ، يَعْلَمُ، اِعْلَمْ		مَعْل مُضَارِع		مَعْل ماضِي	
		वह जानता है/ जानेगा	يَعْلَمُ	उसने जाना	عَلِمَ
نَهْي	أمْر	वह सब जानते हैं/ जानेंगे	يَعْلَمُوْنَ	उन्होने जाना	عَلِمُوْا
मत जान! لَا تَعْلَمْ	जान ले! اِعْلَمْ	आप जानते हैं/जानेंगे	تَعْلَمُ	आपने जाना	عَلِمْتَ
मत जानो! لَا تَعْلَمُوْا	जान लो! اِعْلَمُوْا	आप सब जानते हैं/जानेंगे	تَعْلَمُوْنَ	आप सब ने जाना	عَلِمْتُمْ
जानने वाला : عَالِم		मैं जानता हूँ/जानुँगा	أَعْلَمُ	मैने जाना	عَلِمْتُ
जिसको जाना गया : مَعْلُوْم		हम सब जानते हैं/जानेंगे	نَعْلَمُ	हमने जाना	عَلِمْنَا
जानना : عِلْم		वह औरत जानती है/जानेगी	تَعْلَمُ	उस औरत ने जाना	عَلِمَتْ

उसने अमल किया

318 عَمِلَ (س)

इस टेबल के अहम सेग़े : عَمِلَ، يَعْمَلُ، اِعْمَلْ		فعل مُضَارِع	فعل ماضِي
		वह अमल करता है/करेगा يَعْمَلُ	उसने अमल किया عَمِلَ
نَهْي	أمْر	वह सब अमल करते हैं/करेंगे يَعْمَلُوْنَ	उन्होंने अमल किया عَمِلُوا
मत अमल कर! لَا تَعْمَلْ	अमल कर! اِعْمَلْ	आप अमल करते हैं/करेंगे تَعْمَلُ	आपने अमल किया عَمِلْتَ
मत अमल करो لَا تَعْمَلُوْا	अमल करो! اِعْمَلُوْا	आप सब अमल करते हैं/करेंगे تَعْمَلُوْنَ	आप सब ने अमल किया عَمِلْتُمْ
अमल करने वाला : عَامِل		मैं अमल करता हूँ/करुँगा أَعْمَلُ	मैने अमल किया عَمِلْتُ
जिस पर अमल हुआ : مَعْمُوْل		हम सब अमल करते हैं/करेंगे نَعْمَلُ	हमने अमल किया عَمِلْنَا
अमल करना : عَمَل		वह अमल करती है تَعْمَلُ	अमल किया उस औरत ने عَمِلَتْ

उसने रहम किया

143 رَحِمَ (س)

इस टेबल के अहम सेग़े رَحِمَ، يَرْحَمُ، اِرْحَمْ		فعل مُضَارِع	فعل ماضِي
		वह रहम करता है/करेगा يَرْحَمُ	उसने रहम किया رَحِمَ
نَهْي	أمْر	वह सब रहम करते हैं/करेंगे يَرْحَمُوْنَ	उन्होने रहम किया رَحِمُوْا
मत रहम कर! لَا تَرْحَمْ	रहम कर! اِرْحَمْ	आप रहम करते हैं/करेंगे تَرْحَمُ	आपने रहम किया رَحِمْتَ
मत रहम करो! لَا تَرْحَمُوْا	रहम करो! اِرْحَمُوْا	आप सब रहम करते हैं/करेंगे تَرْحَمُوْنَ	आप सब ने रहम किया رَحِمْتُمْ
रहम करने वाला :رَاحِم		मैं रहम करता हूँ/करुँगा أَرْحَمُ	मैने रहम किया رَحِمْتُ
जिस पर रहम किया गया :مَرْحُوْم		हम सब रहम करते हैं/करेंगे نَرْحَمُ	हमने रहम किया رَحِمْنَا
रहम करना :رحم		वह रहम करती है करेगी تَرْحَمُ	उस औरत ने रहम किया رَحِمَتْ

सबक़-16: तशह-हुद

اَلتَّحِيَّاتُ	لِلّٰهِ	وَالصَّلَوَاتُ	وَالطَّيِّبَاتُ

اَلسَّلاَمُ	عَلَيْكَ	أَيُّهَاالنَّبِيُّ	وَرَحْمَتُ اللّٰهِ	وَبَرَكَاتُهٗ

اَلسَّلاَمُ	عَلَيْنَا	وَعَلٰى	عِبَادِ اللّٰهِ	الصَّالِحِيْنَ

أَشْهَدُ	أَنْ	لَّا إِلٰهَ	إِلَّا اللّٰهُ

وَأَشْهَدُ أَنَّ	مُحَمَّدًا	عَبْدُهٗ	وَرَسُوْلُهٗ

सवाल-**1:** क़ौली बदनी और माली इबादतों का ज़िक्र सुनकर हमको क्या करना चाहिये ?

जवाब:

सवाल-**2:** क़ौली और बदनी इबादतों की दो-दो मिसालें दीजिये ?

जवाब:

सवाल-**3:** नबी ﷺ के लिये यहाँ कितनी चीज़ों की दुआ की जा रही है ?

जवाब:

सवाल-**4:** मुहम्मद ﷺ रसूल हैं और अब्द भी,तो यहाँ عَبْد का ज़िक्र क्यों है ?

जवाब:

अरबी क़वायद के सवालात बराए सबक़-16: तशह-हुद

सवाल-1: नीचे दिए गये टेबल्स सेग़ों से तर्जुमा के साथ पुर कीजिये

उसने सुना — سَمِعَ (س) [100]

इस टेबल के अहम सेग़े سَمِعَ، يَسْمَعُ، اِسْمَعْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
सुनने वाला:			
जिसको सुना गया:			
सुनना:			

उसने जाना — عَلِمَ (س) [518]

इस टेबल के अहम सेग़े: عَلِمَ ، يَعْلَمُ، اِعْلَمْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
जानने वाला:			
जिसको जाना गया:			
जानना:			

उसने अमल किया عَمِلَ (س) [318]

इस टेबल के अहम सेग़े عَمِلَ ، يَعْمَلُ،اِعمَلْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
अमल करने वाला:			
जिस पर अमल किया गया:			
अमल करना:			

वह रहम करता है رَحِمَ (س) [148]

इस टेबल के अहम सेग़े رَحِمَ ، يَرْحَمُ، اِرْحَمْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
रहम करने वाला:			
जिस पर रहम किया गया:			
रहम करना:			

सवाल-2: अरबी अल्फ़ाज़ के टुक्ड़े हलकी लाईन मारकर बताईये,फ़िर उनका तर्जुमा कीजिये ।	
سَمِعْتُمْ	
سَتَعْلَمُوْنَ	
يَعْلَمُهُمْ	
يَسْمَعُوْنَكُمْ	
تَسْمَعُوْنَهُمْ	

सवाल-3:उर्दू से अरबी में तर्जुमा कीजिये	
मैनें सुना तो मैने जाना	
मैने जाना तो मैने अमल किया	
पस तुम सब अमल करो	
तुम सब जान लो और अमल करो	
तुम सब रहम करो	

सबक़ – 17: दुरुद

सबक़ 17 के ख़त्म तक आप 109 अल्फाज़ पढ़ना सीखलेंगे जो कुरआन में 35622 बार आये हैं

दुआ	तब्लीग़
तसव्वुर एहसास	
एहतिसाब	प्लान

तआरुफ:रसूलुल्लाह सल-लल्लाहू-अलैहि वसल्लम के लिये दुआ करते वक्त उनकी कुर्बानियों को याद कीजिये, आज हम 1500 साल बाद,हज़ारों मील दूर मुसलमान हैं तो अल्लाह के फज़्ल के बाद आपकी कुर्बानियों के नतीजे में।

दिन भर की थकन के बावजूद आप सल-लल्लाहू-अलैहि वसल्लम ने किसी क़बीला को दावत दी थी तो हो सकता है कि मुझ तक दावत इस कबीले से पहुँची,इस तरह सोचते हुये इस बात को महसूस करें कि आप सलल्लाहु अलैहिवसल्लम की हर कुर्बानी का मुझ पर एहसान है।

अब हम इसके बदले उनके लिये क्या कर सकते हैं? क्या उनको खाने पर बुला सकते हैं या कोई तोहफा भेज सकते हैं? कुछ नही! सिर्फ उनके लिये दुआ कर सकते हैं।

मुहम्मद सल-लल्लाहू-अलैहि वसल्लम को तो अज्र मिलने वाला है ही,चाहे हम दुआ करें या न करें,हमारा उनके लिये दुआ करना दरअसल हमारे लिये एज़ाज़ है,दुआ करने पर उल्टा हमें उसका सवाब भी मिलता है।

	26			
مُحَمَّدٍ	وَّعَلٰى اٰلِ	عَلٰى مُحَمَّدٍ	صَلِّ	اَللّٰهُمَّ
मुहम्मद (स.) की,	और आल पर	मुहम्मद (स.) पर	दुरुद (रहमत) भेज	ऐ अल्लाह
	اٰل: आप की औलाद व अज़वाज,मुहब्बत और इत्तिबा करने वाले,तरीके पर चलने वाले	عَلٰى:पर	صَلِّ:नमाज़ पढ़ صَلِّ عَلٰى : रहमत भेज	
ऐ अल्लाह मुहम्मद (सल-लल्लाहू-अलैहि वसल्लम) पर और मुहम्मद (स.) की आल पर दरुद (रहमत) भेज				

दुआ करें कि ऐ अल्लाह हुजूर सल-लल्लाहू-अलैहि वसल्लम पर

- रहमतों की बारिश फरमा, मेहरबान हो जा, नाम और दरजात बुलन्द कर।
- तेरे नबी सलल्लाहु अलैहिवसल्लम ने हम पर बेशुमार एहसानात किये, अब हमारे बस की बात नही कि हम उसका बदला दें,हम क्या बदला दे सकते हैं? तू ही दे।

		70		59
إِبْرَاهِيْمَ	وَعَلٰى اٰلِ	عَلٰى إِبْرَاهِيمَ	صَلَّيْتَ	كَمَا
जैसे भेजी रहमत तू ने	इब्राहीम की,	और आल पर	इब्राहीम पर	जैसे भेजी रहमत तू ने
	اٰل: आप की औलाद व अज़वाज,मुहब्बत और इत्तिबा करने वाले,तरीके पर चलने वाले		صَلَّيْتَ:तूने नमाज़ पढ़ी صَلَّيْتَ عَلٰى:पर तूने रहमत भेजी	كَمَا , كَ: जैसे
जैसे तूने इब्राहीम अलैहिस-सलाम पर और इब्राहीम (अ.) की आल पर रहमत भेजी.				

- इब्राहीम अलैहिस-सलाम को अल्लाह ने ऐसी इमामत दी,ऐसा मुकाम दिया कि दुनिया के सब मुसलमान,ईसाई और यहुदी उन्हें नबी मानते हैं,तो ऐ अल्लाह मुहम्मद सल-लल्लाहू-अलैहि वसल्लम को भी ऐसी कुबूलियत अता फरमा कि इस ज़मीन पर रहने वाली अक्सरियत आप की नुबुव्वत को मान ले।

مَّجِيْدٌ	حَمِيْدٌ 17	إِنَّكَ
बुजुर्गी वाला है।	तारीफ़ के क़ाबिल	बेशक तू है
जिसको जलाल,अज़मत और बड़ाई कमाल(Perfection) के दरजे पर हासिल हो	حَمِيْد:काबिले तारीफ حَمْد:तारीफ	إِنَّ:बेशक तु كَ:तूने
बेशक तू तारीफ़ के क़ाबिल है बुजुर्गी वाला है।		

तेरा बहुत बड़ा एहसान है कि तूने ऐसे पैग़म्बर को भेजा,तू खूब क़ाबिले तारीफ है, तू मजीद है यानी जलाल व अज़्मत और बड़ाई में कामिल है,परफेक्ट है।

जब आप रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहिवसल्लम पर दुरुद भेजें,उनकी कुर्बानियों का याद कीजिये और फिर याद कीजिये कि आप सल-लल्लाहू-अलैहि वसल्लम कुरआन के मुअल्लिम बना कर भेजे गये थे, दुआ़ कीजिये: ऐ अल्लाह! मेरी मदद कर कि उनका शागिर्द बनुँ! यानी कुरआन को सीखूँ, एहतिसाब कीजिये: मैं कितना वक्त सर्फ करता हूँ कुरआन और हदीस पढ़ने में? या मैं सिर्फ यह कहता हूँ कि "मैं मसरुफ हूँ" प्लान बनाईये: एक मख़सूस वक्त कुरआन और हदीस पढ़ने के लिये,क्लास शूरु कीजिये, हर मुमकिन हद तक उनकी तालीम को दुनिया के तमाम लोगों तक पहुँचाने की कोशिश कीजिये।

مُحَمَّدٍ	وَّعَلٰى اٰلِ	عَلٰى مُحَمَّدٍ	بَارِكْ	اَللّٰهُمَّ
मुहम्मद (स.) की,	और आल पर	मुहम्मद (स.) पर	बरकत अता फ़रमा	ऐ अल्लाह
	آل: आप की औलाद व अज़वाज,मुहब्बत और इत्तिबा करने वाले,तरीके पर चलने वाले		عيد مبارك:बरकत वाली ईद हो	
ऐ अल्लाह मुहम्मद (स.) और मुहम्मद (स.) की आल पर बरकत अता फ़रमा				

आप सल-लल्लाहू-अलैहि वसल्लम की बेशुमार कुर्बानियों का हम पर एहसान है और चूंकि हम आप सलल्लाहु अलैहिवसल्लम के लिये कुछ कर नही सकते,इसलिये हम कह रहे हैं कि ऐ अल्लाह आप ही अज्र दीजिये उनको,दुरुद के पहले हिस्से में صَلٰوة की दुआ़ हुई (اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّد), صلوة में बरकत शामिल है,صَلٰوة की दुआ़ के बाद यहाँ बरकत की दुआ़ है, यह इस वजह से कि दुआ़ में बार-बार मुख़्तलिफ अलफ़ाज़ और इबारात में बात को पेश किया जाता है।

रसूलुल्लाह सल-लल्लाहू-अलैहि वसल्लम की कुर्बानियों को याद कीजिये और दिल से दुआ़ कीजिये उनके लिये बरकत की।

बरकत का माअनी है खुबी,भलाई और नेमतों का अता होना,हमेशा रहना,और उसमें बराबर इज़ाफा और तरक्की होना,आमाल में बरकत का मतलब उनकी कुबूलियत और उनका बेहतरीन बदला मिलना है। औलाद में बरकत यानी औलाद का कई नस्लों तक बाक़ी रहना और फैलना,

बढ़ना है, आल मुहम्मद सल-लल्लाहू-अलैहि वसल्लम को बरकत दे यानी आप सल-लल्लाहू-अलैहि वसल्लम की औलाद को और आप के तरीके पर चलने वालों को।

إِبْرَاهِيْمَ	وَعَلٰى اٰلِ	عَلٰى إِبْرَاهِيْمَ	بَارَكْتَ	كَمَا
इब्राहीम की,	और आल पर	इब्राहीम पर	तूने बरकत अता की	जैसे
जैसे तूने इब्राहीम (अ.) पर और इब्राहीम (अ.) की आल पर बरकत अता की.				

- इब्राहीम अलैहिस-सलाम को अल्लाह ने ऐसी इमामत दी,ऐसा मूक़ाम दिया कि दुनिया के सब मुसलमान,ईसाई और यहुदी उन्हें नबी मानते हैं,तो ऐ अल्लाह मुहम्मद सलल्लाहू अलैहिवसल्लम को भी ऐसी कुबूलियत अता फरमा कि इस ज़मीन पर रहने वाली अक्सरीयत आप की नुबुवत को मान ले ।

مَّجِيْدٌ	حَمِيْدٌ	إِنَّكَ
बुज़ुर्गी वाला है ।	तारीफ़ के क़ाबिल	बेशक तू
जिसको जलाल,अज़मत और बड़ाई कमाल(Perfection) के दरजे पर हासिल हो	حَمِيْد: क़ाबिले तारीफ़ حَمْد: तारीफ़	إِنَّ: बेशक तु كَ: तूने
बेशक तू तारीफ़ के क़ाबिल बुज़ुर्गी वाला है ।		

ऐ अल्लाह तू खूब काबिले तारीफ है कि तूने बेहतरीन पैग़म्बर को हमारे लिये भेजा,तू मजीद है यानी जलाल व अज़्मत और बड़ाई में कामिल है ।

रसूलुल्लाह सल-लल्लाहू-अलैहि वसल्लम के लिये दुआ करते वक्त उनकी नसीहतों को भी याद करें, मसलन आप सल-लल्लाहू-अलैहि वसल्लम ने फरमया- पहुँचा दो मेरी तरफ़ से चाहे वह एक ही आयत क्यों न हो ।

हम किस तरह फैला सकते हैं अगर हम खुद ही न समझें, इसलिये जल्द से जल्द समझने का प्लान बनाइये यानी इस कोर्स को जल्द से जल्द ख़त्म कीजिये,फर्ज़ कीजिये आप एक सहरा में फँस गये हैं और मरने वाले हैं,एक आदमी आता है और आपको कुछ खाने को और पीने को देता है,और फिर वह कहता है: यह पानी उन लोगों के पास ले जाओ जो भूक और प्यास से मर रहे हैं,और आप कहे जा रहे हों (और जाते नहीं) अल्लाह आप पर रहम करे,अल्लाह आप पर रहम करे.... तो यह कितनी गलत बात होगी ।

इस मिसाल को अपने और रसूलुल्लाह सल-लल्लाहू-अलैहि वसल्लम के दरमियान लागू कीजिये और आप की नसीहत पर (بَلِّغُوْا عَنِّىْ وَلَوْ آيَة)

साथ ही साथ दिल में रसूलुल्लाह सल-लल्लाहू-अलैहि वसल्लम की मुहब्बत और इताअत को बढ़ाने की अमली कोशिश कीजिये यानी सीरत को पढ़िये और आप की बातों पर अमल कीजिये ।

ग्रामर: नीचे दिये गये 21 अहम सेग़ो की प्रैक्टिस कीजिये,आख़िरी दो सेग़े वाहिद मुअन्नस के हैं,बुनियादी गर्दान वही فَعَلَ की है,फर्क सिर्फ ज़बर-ज़ेर या पेश का है याद रहे कि यह बाब ضَرَبَ के नमूने पर आने वाले अफ़आल हैं |

उसने वादा किया — وَعَدَ (و) [124]

इस टेबल के अहम सेग़े وَعَدَ، يَعِدُ، عِدْ		فعل مُضَارِع	فعل ماضِي
		वह वादा करता है/करेगा يَعِدُ	उसने वादा किया وَعَدَ
نَهْي	أمْر	वह सब वादा करते हैं/करेंगे يَعِدُوْنَ	उन्होंने वादा किया وَعَدُوْا
मत वादा कर! لَا تَعِدْ	वादा कर! عِدْ	आप वादा करते हैं/करेंगे تَعِدُ	आपने वादा किया وَعَدْتَّ
मत वादा करो! لَا تَعِدُوْا	वादा करो! عِدُوْا	आप सब वादा करते हैं/करेंगे تَعِدُوْنَ	आप सब ने वादा किया وَعَدْتُّمْ
वादा करने वाला : وَاعِد		मैं वादा करता हूँ/करुँगा أَعِدُ	मैने वादा किया وَعَدْتُّ
जिसका वादा किया गया : مَوْعُوْد		हम सब वादा करते हैं/करेंगे نَعِدُ	हमने वादा किया وَعَدْنَا
वादा : وَعْد		वह वादा करती है/करगी تَعِدُ	उस औरत ने वादा किया وَعَدَتْ

उसने पाया — وَجَدَ (و) [106]

इस टेबल के अहम सेग़े وَجَدَ، يَجِدُ، جِدْ		فعل مُضَارِع	فعل ماضِي
		वह पाता है/पायेगा يَجِدُ	उसने पाया وَجَدَ
نَهْي	أمْر	वह सब पाते हैं/पायेंगे يَجِدُوْنَ	उन्होंने पाया وَجَدُوْا
मत पा! لَا تَجِدْ	पा! جِدْ	आप पाते हैं/पायेंगे تَجِدُ	आपने पाया وَجَدْتَّ
मत पाओ! لَا تَجِدُوْا	पाओ! جِدُوْا	आप सब पाते हैं/पायेंगे تَجِدُوْنَ	आप सब ने पाया وَجَدْتُّمْ
पाने वाला : وَاجِد		मै पाता हूँ/ पाऊँगा أَجِدُ	मै ने पाया وَجَدْتُّ
जिसको पाया गया : مَوْجُوْد		हम पाते हैं/पायेंगे نَجِدُ	हमने पाया وَجَدْنَا
पाना : وُجُود		वह औरत पाती है/पायेगी تَجِدُ	उस औरत ने पाया وَجَدَتْ

उसने जन्म दिया

85 وَلَدَ (و)

इस टेबल के अहम सेग़े		فعل مُضَارِع		فعل ماضِي	
وَلَدَ، يَلِدُ، لِدْ		वह जन्म देता है/देगा	يَلِدُ	उसने जन्म दिया	وَلَدَ
نَهْي	أمْر	वह सब जन्म देते हैं/देंगे	يَلِدُوْنَ	उन्होने जन्म दिया	وَلَدُوْا
मत जन्म दे! لَا تَلِدْ	जन्म दे! لِدْ	आप जन्म देते हैं/देंगे	تَلِدُ	आपने जन्म दिया	وَلَدْتَّ
मत जन्म दो! لَا تَلِدُوْا	जन्म दो! لِدُوْا	आप सब जन्म देते हैं/देंगे	تَلِدُوْنَ	आप सब ने जन्म दिया	وَلَدْتُّمْ
जन्म देने वाला : وَالِد		मैं जन्म देता हूँ/दुँगा	أَلِدُ	मैंने जन्म दिया	وَلَدْتُّ
जिसको जन्म दिया गया : مَوْلُوْد		हम जन्म देते हैं/देंगे	نَلِدُ	हमने जन्म दिया	وَلَدْنَا
जन्म देना : وِلَادَة		वह औरत जन्म देती है/देगी	تَلِدُ	उस औरत ने जन्म दिया	وَلَدَتْ

दुरुद का सवाब

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस बयान करते हैं कि कि उन्होने रसूलल्लुल्लाह को फ़रमाते हुये सुना जो शख़्स मुझ पर एक मर्तबा दुरुद भेजता है अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है।
(मुस्लिम)

सबक़ -17: दुरुद

اَللّٰهُمَّ	صَلِّ	عَلٰى مُحَمَّدٍ	وَّعَلٰى اٰلِ	مُحَمَّدٍ
كَمَا	صَلَّيْتَ	عَلٰى إِبْرَاهِيْمَ	وَعَلٰى اٰلِ	إِبْرَاهِيْمَ

إِنَّكَ	حَمِيْدٌ	مَّجِيْدٌ

اَللّٰهُمَّ	بَارِكْ	عَلٰى مُحَمَّدٍ	وَّعَلٰى اٰلِ	مُحَمَّدٍ
كَمَا	بَارَكْتَ	عَلٰى إِبْرَاهِيْمَ	وَعَلٰى اٰلِ	إِبْرَاهِيْمَ

إِنَّكَ	حَمِيْدٌ	مَّجِيْدٌ

सवाल-**1:** मुहब्बत से दुरुद पढ़ने के लिये हम किन चीजों को याद रखें ?

जवाब:

सवाल-**2:** रहमत भेजने और बरकत अता करने के क्या मआना हैं ?

जवाब:

सवाल-**3:** हज़रत इब्राहीम अलैहिस्-सलाम पर अल्लाह तआला ने वह कौन सा इनाम किया जिसका इस दुरुद में इशारा है ?

जवाब:

सवाल-**4:** दुरुद के आख़िर में अल्लाह को हमीद कहा गया,इसको हम कैसे समझ सकते हैं ?

जवाब:

सवालात बराए सबक़-17: दुरुद के बाद

सवाल-1: नीचे दिये गये टेबल्स सेग़ों से तर्जुमा के साथ पुर कीजिये :

उसने वादा किया — وَعَدَ (و) [107]

इस टेबल के अहम सेग़े وَعَدَ ، يَعِدُ، عِدْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
वादा करने वाला:			
जिसका वादा किया गया:			
वादा करना:			

उसने पाया — وَجَدَ (و) [107]

इस टेबल के अहम सेग़े: وَجَدَ، يَجِدُ، جِدْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
पाने वाला:			
जिसको पाया गया:			
पाना:			

उसने जन्म दिया (و) وَلَدَ [54]

इस टेबल के अहम सेग़े: وَلَدَ، يَلِدُ، لِدْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
जन्म देने वाला:			
जिसको जन्म दिया गया:			
जन्म देना:			

सवाल-2: अरबी अल्फ़ाज़ के टुकड़े हलकी लाईन मारकर बताईये,फ़िर उनका तर्जुमा कीजिये ।	
وَعَدَكُمُ اللهُ	
وَعَدْتَّهُ	
وَعَدَكَ	
لَمْ يَلِدْ	
وَعَدْتُّكُمْ	

सवाल-3:उर्दू से अरबी में तर्जुमा कीजिये	
मैंने पाया उसको	
उसने पाया मुझको	
वह पायेगा आपको	
उन्होंने वादा किया आपसे	
आप पायेंगे उनको	

सबक़ 18 के ख़त्म तक आप 116 अल्फाज़ पढ़ना सीखलेंगे जो कुरआन में 38092 बार आये हैं

दुआ	तब्लीग़
तसव्वुर एहसास	
एहतिसाब	प्लान

सबक़ – 18: दुरुद के बाद

नमाज़ ख़त्म करने पर मग़फिरत तलब कीजिये,और नमाज़ के बाद सीधे रास्ते पर कायम रहने का मुस्तहकम इरादा कीजिये।"नमाज़ से नमाज़" तक प्लान बनाकर ज़िन्दगी गुज़ारते रहिये,अगली नमाज़ में फिर हाज़िर होना है,उस वक्त फिर सवाल करेंगें,यह दुआ रसूलुल्लाह सल-लल्लाहू-अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर ﷺ को जो उम्मत के बेहतरीन शख्स हैं सिखाई थी,पैग़ाम को देखिये!फिर सोचिये कि किस तड़प से हम को दुआ करनी चाहिये ।

74	295			
كَثِيرًا ظُلْمًا	نَفْسِىْ	ظَلَمْتُ	إِنِّىْ	اَللّٰهُمَّ
ज़ुल्म बहुत ज़्यादा	अपनी जान पर	(मैंने) ज़ुल्म किया	बेशक मैं	ऐ अल्लाह
	نَفْس: जमा نُفُوس، أَنْفُس	ظَلَمْتُ: فَعَلْتُ के वज़न पर	إِنِّىْ: बेशक मैं	اَللّٰهُمَّ: ऐ अल्लाह
ऐ अल्लाह बेशक मैंने अपनी जान पर बहुत ज़्यादा ज़ुल्म किया है				

➢ ऐ अल्लाह,मैंने ज़ुल्म किया,उसका कोई और कुसूरवार नही,तेरे अहकाम में कोई ज़्यादती नही है सिर्फ मैं ज़िम्मेदार हूँ अपने गुनाहों का,तेरे एहसानात और करम के बावजूद मैंने ज़ुल्म किये ।

39					
أَنْتَ	إِلَّا	الذُّنُوبَ	وَّلَا يَغْفِرُ		
तेरे	सिवाय	गुनाहों को	और नही बख़्श सकता		
		ذَنْبٌ: गुनाह : जमा الذُّنُوب	يَغْفِرُ: बख़्श सकता	لَا: नही	وَ : और
और तेरे सिवा (कोई भी) गुनाहों को नही बख़्श सकता					

➢ अब कोई वास्ता काम का नही ,कोई मदद नही कर सकता,सिर्फ तू ही मग़फ़िरत कर सकता है मेरे गुनाहों की ।

197								
وَارْحَمْنِىْ			مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ			فَاغْفِرْ لِىْ		
और मुझ पर रहम फरमा			अपनी ख़ास बख़्शिशश से			बस बख़्श दे मुझे		
نِيْ: मुझ पर	اِرْحَمْ: रहम फरमा	وَ: और	عِنْدِكَ: अपने पास	مِنْ: से	مَغْفِرَةً: बख़्शिशश	لِىْ: मुझको	اِغْفِرْ: बख़्श दे	فَ: पस
बस मुझ को बख़्श दे मुझ को								

➢ मग़फ़िरत का मतलब है ढाँक देना,गुनाहों को छुपा देना,इसके बाद आगे तेरी रहमत चाहिये वरना हम भयानक नुकसान में रहेंगे ।

91

الرَّحِيمُ	الْغَفُوْرُ	إِنَّكَ أَنْتَ	
बेहद रहम करने वाला	बख़्शने वाला	बेशक तू ही	
الرَّحِيمُ:मुसलसल रहम करने वाला	मग़्फिरत, इस्तिग़फ़ार	أَنْتَ: तू	إِنَّكَ: बेशक तू
बेशक तू ही बख़्शने वाला,बेहद रहम करने वाला है			

➢ गुनाहों के बावजूद तूने मुझे फौरी सज़ा नही दी,बेशक तू रहम करने वाला है।

ग्रामर: قَالَ ، عِنْدَ और قَامَ की प्रेक्टिस कीजिये ।

عِنْدَهُ	उसके पास
عِنْدَهُمْ	उनके पास
عِنْدَكَ	आप के पास
عِنْدَكُمْ	आप सब के पास
عِنْدِي	मेरे पास
عِنْدَنَا	हमारे पास
عِنْدَهَا	उस औरत के पास

ऊपर सबक़ में लफ़्ज عِنْدَ आया है,बोल चाल की एक मिसाल से उसके मआनी को याद रखिये

كَمْ رِيَالٍ عِنْدِكَ ؟ : कितने रियाल हैं आप के पास

TPI के ज़रिये सीधे जानिब दिये गये सात अल्फ़ाज़ की प्रेक्टिस कीजिये ।

1719 قَالَ (ق) उसने कहा

इस टेबल के अहम सेग़े: قَالَ، يَقُولُ، قُلْ		فعل مُضَارِع	فعل ماضِي	
		वह कहता है/कहेगा يَقُوْلُ	उसने कहा قَالَ	
نَهْي	أمْر	वह कहते हैं/कहेंगे يَقُوْلُوْنَ	उन्होने कहा قَالُوا	
मत कह! لَا تقُلْ	कह! قُلْ	आप कहते हैं/कहेंगे تَقُوْلُ	आपने कहा قُلْتَ	
मत कहो! لَا تَقُولُوْا	कहो! قُولُوْا	आप सब कहते हैं/कहेंगे تَقُوْلُوْنَ	आप सब ने कहा قُلْتُمْ	
कहने वाला : قَائِل		मैं कहता हूँ/कहूँगा أَقُوْلُ	मैंने कहा قُلْتُ	
जिसको बात कही गई : مَقُوْل		हम कहते हैं/कहेंगे نَقُوْلُ	हमने कहा قُلْنَا	
कहना : قَوْل		वह कहती है/कहेंगी تَقُوْلُ	उस औरत ने कहा قَالَتْ	

वह खड़ा हुआ

55 قَامَ (ق)

इस टेबल के अहम सेग़े : قَامَ، يَقُومُ، قُمْ			فعل مُضَارِع	فعل ماضِي	
			वह खड़ा होता है/होगा يَقُوْمُ	वह खड़ा हुवा قَامَ
نَهْي	أمْر		वह खड़े होते हैं /होंगे يَقُوْمُوْنَ	वह खड़े हुये قَامُوْا
मत खड़ा हो! لَا تَقُمْ	खड़ा हो! قُمْ		आप खड़े होते हैं/होंगे تَقُوْمُ	आप खड़े हुये قُمْتَ
मत खड़े हो! لَا تَقُومُوْا	खड़े हो! قُومُوْا		आप सब खड़े होते हैं / होंगे تَقُوْمُوْنَ	आप सब खड़े हुये قُمْتُمْ
होने वाला قَائِم: जिस फ़ेल का असर दूसरे पर ने पड़े सिर्फ़ करने वाले पर होतो ऐसे अफ़्आल का इस्मे मफ़उल नही बनता			मैं खड़ा होता हूँ/ होऊँगा أَقُوْمُ	मैं खड़ा हुवा قُمْتُ
			हम खड़े होते हैं/होंगे نَقُوْمُ	हम खड़े हुये قُمْنَا
होना قِيَام:			वह खड़ी होती है/होगी تَقُوْمُ	वह खड़ी हई قَامَتْ

सबक़-18: दुरुद के बाद की दुआ

اَللّٰهُمَّ إِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ ظُلْمًا كَثِيرًا

وَّلَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ

فَاغْفِرْ لِىْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِىْ

إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيْمُ

सवाल-**1**: यह दुआ किसने किसको सिखाई ?

जवाब:

सवाल-**2:** मग़फ़िरत का क्या मतलब है ?

जवाब:

सवाल-**3:** अपने नफ़्स पर ज़ुल्म करने का क्या मतलब है ?

जवाब:

सवाल-**4:** गुनाहों की बख़्शिश और रहमत की कुंजियाँ किसके हाथ में है ?

जवाब:

सवालात बराये सबक़-18: दुरुद के बाद

सवाल-1: नीचे दिये गये टेबल को "قال" के सेगों से तर्जुमा के साथ पुर कीजिये :

उसने कहा — قَالَ (ق) [1719]

इस टेबल के अहम सेग़े قَالَ، يَقُولُ، قُلْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
कहने वाला			
जिसको बात कही गई			
कहना			

वह खड़ा हुआ — قَامَ (ق) [55]

इस टेबल के अहम सेग़े: قَامَ، يَقُومُ، قُمْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
खड़ा होने वाला			
–			
खड़ा होना			

सवाल-2: अरबी अल्फ़ाज़ के टकड़े हलकी लाईन मारकर बताईये,फ़िर उन का तर्जुमा कीजिये ।	
فَقَالَ لَهُ	
وَقُلْتُمْ لِيْ	
فَيَقُوْلُوْنَ لَكُمْ	
قُلْتَ لَهُ	
قُلْتُ لَكَ	

सवाल-3: उर्दू से अरबी में तर्जुमा कीजिये	
पस मैं कहता हूँ आपको	
और आप कहते हैं मुझको	
और आप सब कहते हैं उनसे	
आप सब खड़े हो जाओ और कहो	
वह सब खड़े हुये और कहा	

सबक़ -19: दुआयें

28	115		
حَسَنَةً	فِى الدُّنْيَا	اٰتِنَا	رَبَّنَآ
भलाई	दुनिया में	हमें दे	ऐ हमारे रब

	الدُّنْيَا	فِى	نَا	اٰتِ	نَآ	رَبَّ
	दुनिया	में	हमें	दे	हमारे	ऐ रब

ऐ हमारे रब! हमें दे दुनिया में भलाई

अक्सर दुआयें رَبَّنَا से शुरु होती हैं,रब की तश्रीह याद रखिये,यानी हर-हर ज़रुरत को पूरी करते हुये हमारी परवरिश करने वाला।

दुनिया की हसना में नीचे की चीज़ें शामिल हैं:

1. ज़रुरियाते ज़िन्दगी: सेहत, ख़ानदान की फ़लाह, इज़्ज़त, वक़ार, माल, नौकरी, तिजारत, ख़ानदान,बच्चे,दोस्त वग़ैरा।
2. अमन व सुकून जिस में इस्लाम के अहकाम पर अमल किया जा सके.
3. वह चीज़ें जो आख़िरत के लिये सूदमन्द हैं जैसे कि फ़ायदेमन्द इल्म,सही अक़ीदा,अच्छे आमाल, इख़्लास, तरबियत वगैरा।

मगर कोई भी चीज़ (माल,दौलत,नौकरी,तिजारत,बच्चे वगैरा) हसना (حَسَنَة) नही है,अगर वह आख़िरत को बरबाद करें।

<u>एहतिसाब:</u>क्या मैंने सोचा है कि दुनिया में जिस चीज़ के पीछे दौड़ रहा हूँ वह ठीक है ? और उसे माँगने के बाद अगर मुझे वह "ठीक" चीज़ नही मिली (काफी कोशिश करने के बाद भी) तो क्या मैं मुतमईन रहता हूँ।

<u>प्लान:</u> इस दुआ को हमेशा पढ़ते रहने का प्लान हो।

<u>तब्लीग़:</u> अपने ख़ानदान और दोस्तों में यह पैग़ाम फैलाइये:हमें यकीन होना चाहिये कि यह "हसना" है।

145	322				115		
النَّارِ	عَذَابَ	وَّقِنَا			حَسَنَةً	وَّفِى الْاٰخِرَةِ	
आग के	अज़ाब से	और हमें बचा			भलाई	और आख़िरत में	
نار جهنم:दोज़ख़ की आग		نَا	قِ	وَ		الْاٰخِرَةِ	فِى	وَّ
		हमें	बचा	और		आख़िरत	में	और

और आख़िरत में भलाई,और दोज़ख़ के अज़ाब से बचा

आख़िरत की हसना (भलाई में शामिल है: अल्लाह की ख़ुशनूदी,जन्नत,रसूलुल्लाह की क़ुर्बत, अल्लाह तआला के दीदार का मौक़ा वग़ैरा।

उल्माये किराम फ़रमाते हैं कि अगर किसी मोमिन के गुनाह ज़्यादा हों तो पहले उसको आग में जलना होगा ताकि उसकी सफ़ाई हो,अल्लाह हमारे गुनाह माफ़ करे और हमें ज़्यादा से ज़्यादा नेक काम करने की तौफ़ीक़ दे,और हमे आग के अज़ाब से बचा।

नमाज़ के बाद पढ़ने की एक अहम दुआ: मुआज़ ﷺ से रिवायत है ,उन्होने फ़रमाया रसूलुल्लाह सल-लल्लाहू अलैहि-वसल्लम ने मेरा हाथ पकड़ा और फ़रमाया:" ऐ मुआज़,अल्लाह की क़सम मैं तुम से मुहब्बत करता हूँ." फिर फ़रमाया:मैं तुम को वसीयत करता हूँ ऐ मुआज़! नमाज़ के बाद यह पढ़ना कभी न भूलना:

وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ	وَشُكْرِكَ[63]	عَلٰى ذِكْرِكَ	أَعِنِّىْ	اَللّٰهُمَّ
और तेरी अच्छी इबादत करने पर	और तेरा शुक्र करने पर	तेरी याद करने पर	मदद फरमा मेरी	ऐ अल्लाह

नमाज़ के बाद इस दुआ को हम मुख़्तलिफ एहसासात के साथ पढ़ सकते हैं मसलन ऐ अल्लाह! अगर-च कि मैंने अभी नमाज़ पढ़ी है मगर मैं उस तरह न पढ़ सका जैसा कि पढ़ना चाहिये इसलिये मेरी मदद कर कि अगली बार मैं तेरी अच्छी इबादत कर सकूँ ऐ अल्लाह! अब नमाज़ के बाद मैं दुनियाँ के कामों में तुझे भूल न जाऊँ। तेरी याद करने और तेरा शुक्र करने में मेरी मदद कर! सारी ज़िन्दगी मैं इस तरह गुज़ारुँ कि वह तेरी बेहतरीन इबादत हो जाये।

ग्रामर: नीचे दिये गये 21 अहम सेग़ो की प्रैक्टिस कीजिये।यह वह अफ़आल हैं जिन के माद्दा का दूसरा हर्फ,हर्फ-ए-इल्लत week letter है यानी الف ،ياء ،واؤ में से कोई एक हर्फ।

वह था (ق) كَانَ[1358]

इस टेबल के अहम सेग़े كَانَ، يَكُونُ، كُنْ		فعل مُضَارِع		فعل ماضِي	
		वह है/होगा	يَكُوْنُ	वह था	كَانَ
نَهْي	أمْر	वह हैं/होंगे	يَكُونُونَ	वह थे	كَانُوْا
मत हो जा! لَا تكُنْ	हो जा! كُنْ	आप हैं/होंगे	تَكُوْنُ	आप थे	كُنْتَ
मत हो जाओ! لَا تَكُونُوْا	हो जाओ! كُونُوْا	आप हैं / होंगे	تَكُوْنُوْنَ	आप सब थे	كُنْتُمْ
होने वाला :كَائِن जिस फ़ेल का असर दूसरे पर ने पड़े सिर्फ़ करने वाले पर होतो ऐसे अफ़आल का इस्मे मफ़उल नही बनता होना :كَوْن		मै हूँ/होऊँगा	أَكُوْنُ	मैं था	كُنْتُ
		हम हैं/या होंगे	نَكُوْنُ	हम थे	كُنَّا
		वह औरत है/होगी	تَكُوْنُ	वह थी	كَانَتْ

73 تَابَ (ق) उसने तौबा की

فعل ماضِي	فعل مُضَارِع			
تَابَ	उसने तौबा की	يَتُوْبُ	वह तौबा करता है/करेगा	تَابَ، يَتُوبُ، تُبْ : इस टेबल के अहम सेग़े
تَابُوْا	उन्होने तौबा की	يَتُوْبُوْنَ	वह तौबा करते हैं/करेंगे	
تُبْتَ	आपने तौबा की	تَتُوْبُ	आप तौबा करते है/ करेंगे	أمْر: تُبْ तौबा कर! / نَهْي: لَا تَتُبْ मत तौबा कर!
تُبْتُمْ	आप सब ने तौबा की	تَتُوْبُوْنَ	आप तौबा करते हैं/ करेंगे	تُوْبُوْا तौबा करो! / لَا تَتُوْبُوْا मत तौबा करो!
تُبْتُ	मैंने तौबा की	أَتُوبُ	मैं तौबा करता हूँ/करूँगा	تَائِب: तौबा करने वाला जिस फ़ेल का असर दूसरे पर ने पड़े सिर्फ़ करने वाले पर होतो ऐसे अफ़्आल का इस्मे मफ़ुल नही बनता
تُبْنَا	हमने तौबा की	نَتُوْبُ	हम तौबा करते हैं/करेंगे	
تَابَتْ	उस औरत ने तौबा की	تَتُوْبُ	वह तौबा करती है/ करेगी	تَوْبَة: तौबा

सबक़-19: दुआयें

رَبَّنَآ	اٰتِنَا	فِى الدُّنْيَا	حَسَنَةً

وَّفِى الْاٰخِرَةِ	حَسَنَةً

وَّقِنَا	عَذَابَ	النَّارِ ﴿٢٠١﴾

नमाज़ के बाद पढ़ने की दुआ-

اَللّٰهُمَّ	أَعِنِّىْ	عَلٰى ذِكْرِكَ	وَشُكْرِكَ	وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ ۞

सवाल-**1:** दुनिया की हसनात क्या हैं ?
जवाब:

सवाल-**2:** आख़िरत की हसनात क्या हैं ?
जवाब:

सवाल-**3:** इस दुआ में कितनी बातों का सवाल है ?
जवाब:

सवाल-**4:** नमाज़ के बाद اَللّٰهُمَّ أَعِنِّىْ عَلٰى ذِكْرِكَ ...पढ़ने की वसियत किसने किसको की थी ?
जवाब:

सवालात बराये सबक़-19: दुआयें

सवाल-1: नीचे दिये गये टेबल्स सेग़ों से तर्जुमा के साथ पुर कीजिये।

वह था كَانَ (ق) 1361

इस टेबल के अहम सेग़े: كَانَ، يَكُوْنُ، كُنْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
होने वाला - होना			

उसने तौबा की تَابَ (ق) 72

इस टेबल के अहम सेग़े تَابَ، يَتُوْبُ، تُبْ		तर्जुमा فِعْل مُضَارِع	तर्जुमा فِعْل مَاضِي
तर्जुमा نَهْي	तर्जुमा أمْر		
तौबा करने वाला - तौबा करना			

सवाल-2: अरबी अल्फ़ाज़ के टुकड़े हलकी सी लाईन मार कर बताईये,फ़िर उनका तर्जुमा कीजिये ।	
اِغْفِرْ يَا غَفُوْرُ	
اَلَّذِيْنَ تَابُوْا	
وَمَاكَانُوْا	
فَيَكُوْنُ	
وَكُوْنُوْا	

सवाल-3:उर्दू से अरबी में तर्जुमा कीजिये	
और मत हो जा	
जल्द वह हो जायेगा	
पस वह हो गया	
तुम सब तौबा करो	
तौबा करने वाले	

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ

ऐ हमारे रब! कुबूल फ़रमा ले हमसे और बेशक तू सूनने वाला जानने वाला है